केवल कृष्ण पुरी

सरे राह चलते चलते

सरे राह चलते चलते

सरे राह चलते चलते

केवल कृष्ण पुरी

■

अनुसर्जक : सत्यप्रकाश उप्पल
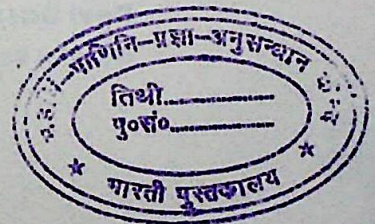
देवी दास गोपाल कृष्ण लि. द्वारा प्रकाशित

sare raah
chaltey chaltey

an · autobiography · by

Kewal Krishan Puri

recreated by

Satyaparkash Uppal

not · for · sale

published · by

Devi Dass Gopal Krishan Ltd.
Gandhi Road, Moga-142001

graphics

aartzone (98888-39078)
aartzone355@yahoo.com

अनुसर्जक

निवेदन
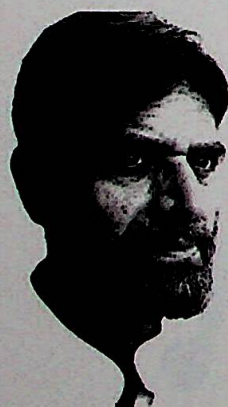
आत्मकथा 'सरे राह चलते चलते' के लिए न तो कोई भूमिका दरकार है और न किसी तआर्रुफ की ज़रूरत है । परन्तु इस आत्म कथा के पुनः सृजन की प्रसूति पीड़ा को स्वंय जिसने आत्मसात किया हो उसे उत्पत्ति के इस अनिवर्चनीय आनन्द के विषय में कुछ न कुछ कहने का अधिकार तो मिलना ही चाहिए ।

श्री केवल कृष्णा पुरी की शख्सियत बेशक एक खूबसूरत किताब जैसी है । इस खूबसूरत किताब के चुम्बकीय आकर्षण से बंधे हुए न जाने कितने लोग उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं... इस स्नेह समर्पण से अभिभूत न जाने कितने लोगों पर वह अपना प्यार न्यौछावर कर देते हैं । लेकिन आप इतना तो सहज ही में अनुमान लगा सकते हैं कि किसी एक किताब की रचना अनेकानेक वर्षों के कठोर परिश्रम का प्रतिफल होता है । यह माना कि सुन्दर आवरण और पुस्तक की विषय वस्तु किसी एक सत्य को उद्घाटित करने का प्रयास मात्र होती है । लेकिल उसमें रचनाकार कितना सफल हुआ, यह तो केवल पाठक ही बता सकते हैं । शब्द शिल्प और भाषा के स्तर पर मैं अपने सामर्थ्य से ज्यादा, कुछ कहने का दुस्साहस कैसे कर सकता हूं। ईश्वर ने मुझे जितना दिया है, मैं उससे कुछ भी ज्यादा देने में समर्थ नहीं हूँ। एतद् इस आत्म कथा के रचनाकार और पाठकों के दरम्यिान मेरा और ज्यादा देर तक रूकना मुनासिब नहीं ।

इतनी सी प्रार्थना और कि आत्म कथाओं के पठन पाठन में हम अगर अपनी आशाओं अथवा अपेक्षाओं को पृथक रख कर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनायेंगे तो निश्चय ही इन श्वेत श्याम पंक्तियों में अन्तर्निहित और भी बहुत कुछ उद्घाटित होगा जो कि इस पुस्तक में उपलब्ध नहीं है ।

सत्यप्रकाश उप्पल

ताकि

सनद रहे...

मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं अपनी ज़िन्दगी में जो कुछ कर सका, उसे एक किताब की शक्ल दे सकूँ। एक दिन बातों–बातों में मैनें प्रिय सत्यप्रकाश उप्पल को अपनी ज़िन्दगी की कुछ घटनाएं बताईं। पता नहीं कब उसने इन घटनाओं को कागज़ पर उतार लिया। फिर एक दिन जब उसने मुझे यह सब पढ़ कर सुनाया तो मुझे लगा कि बेटा सत्य मेरी इस इच्छा को पूरी कर सकता है। फिर तो वह लगातार मुझसे कुछ न कुछ पूछता रहा। कुछ न कुछ लिखता रहा और इसे एक कहानी की शक्ल देता रहा।

दरअसल ज़िन्दगी की जो हकीकत मुझ पर ज़ाहिर हुई है उसमें आज तक मैनें किसी को अपना हमराज़ नहीं बनाया। सच तो यह है कि आदरणीय भाई गोपाल कृष्ण के बाद पूज्य पिता जी से मैनें यही सीखा कि काम काज में बड़ी प्राब्लमज़ होती है। हर किसम की तंगी आती है दुख भी आते हैं और सुख भी आते हैं लेकिन अपनी मुश्किलों का ज़िकर करके घर वालों का मन दुखाने की बजाये खुशियां ही बांटनी चाहिए। मैनें गोपाल जी की ज़िन्दगी से भी यही सीख हासिल की है। उन्होंने भी कभी मुझसे अपनी मुश्किलों का ज़िकर नहीं किया था बल्कि हमेशा खुशी की बातें ही बताते रहे। इस प्रकार मैनें भी तलवार की धार पर चलने का हुनर सीख लिया। लेकिन आज मैं सोचता हूँ कि अब वह वक्त आ गया है कि मुझे वह सब बातें बता देनी चाहियें ताकि किसी बात का मुग़ालता न रहे।

परम पिता परमात्मा की अपार कृपा है कि आज हमारे खानदान के तमाम भाई–बहन, जिन्होंने कि इस खानदान का नाम रौशन किया है अपने–अपने घरों में खुश हैं, सुखी हैं। पूज्य पिता जी का लगाया हुआ बूटा देवी दास गोपाल कृष्ण फल फूल रहा है। जिस्मानी तौर पर कमज़ोर होने के कारण अब कारोबार सम्भालने में मैं बेशक उतना वक्त नहीं दे पाता...

लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि बेटी इन्दु मेरी देख–रेख मे बाखूबी इस काम को सम्भाल रही है।

मुझे बहुत खुशी है कि प्रिय बेटा विवेक अपनी अनथक मेहनत से कारोबार को नये आयाम दे रहा है। वह जहां तेल सरसों के कारोबार में नई नई खोज करके नये प्रॉडक्ट्स बना रहा है, वहां हाईड्रो पावर में भी नई दिशा में बहुत मेहनत कर रहा है। बड़ा सूझवान और दूरदर्शी है। उसे यह बागडौर सौंप कर मैं सन्तुष्ट हूँ। ईशर उसे दीर्घायु, सद्बुद्धि व सफलता प्रदान करे। यही मेरा शुभ आर्शीवाद है।

मैनें अपनी आत्म कथा में वह सब बताने की कोशिश की है, जो कुछ भी मुझे याद आता रहा। परन्तु सब कुछ बता पाना तो शायद किसी के लिए भी मुमकिन नहीं। यह सब बहुत मुश्किल काम है। फिर भी बेटे सत्य की कोशिश से जितना कुछ मुमकिन हुआ वह सब लिख कर बता दिया। बहुत मुमकिन है कि कितनी ही अहम बातें मुझे याद न रही हों। कितने ही नामों का ज़िक्र यहां न हो पाया हो। मेरी उम्र को ध्यान में रखते हुए, मुझे उम्मीद है कि आप मुझे मुआफ करेंगे।

मैं उम्र के जिस पड़ाव पर हूँ वहाँ तो सबके लिए शुभ कामनायें और अपना प्यार देना चाहूँगा। उन सबके लिए कि जिन्होंने मुझे जिस–जिस रूप में भी चाहा, अपना प्यार और सम्मान दिया। जिन लोगों को मेरे साथ शिकवा शिकायत रहा, वो सब भी मेरे अपने हैं। परमात्मा उन सबको खुशियां प्रदान करें। सब पर ईश्वर की कृपा बनी रहे।

सब के लिए सुख–शान्ति वैभव और ऐश्वर्य की अनन्त मंगल कामनाओं सहित।

केवल कृष्ण पुरी

समर्पण

पूज्य माता जी को

एक

ज़िन्दगी के दरिया का कितना पानी बह गया । वक्त की तेज़ आँधियों में कितनी बार सारे दृश्य धूमिल हो गये । कितनी बार लगा कि जैसे यह सब अभी कल की बात हो । एक तेज़धार तलवार जैसा समय मेरे कदमों की आहट को पहचानता है । इन संगीन रास्तों पर चलने का हुनर मैनें सीख लिया है । भूत, भविष्य और वर्तमान की पहेलियों में उलझा हुआ वक्त आज सम्मोहित करता है । समय के साथ दोस्ती भी रही और दुशमनी भी । इस रणभूमि में पता नहीं कब शाम का सूरज लहूलुहान हो कर आकाश में बिखर जायेगा, कोई नहीं जानता । इसी झुटपुटे में मैं अपनी ज़िन्दगी की किताब को वरक वरक खोलता हूं ।

अचानक रेलगाड़ी की खटर पटर के बीच, मुझे बरसों पुरानी इंजन की सीटी का स्वर एक बार फिर से सुनाई देता है । हमारे घर की बगल से होती हुई रेलगाड़ियाँ इसी तरह से गुज़रती हैं । घर की दीवारें दरवाज़े और खिड़कियाँ दनदनाती हुई गाड़ियों की आवाज़ सुनकर निमिष मात्र भी नहीं चौंकती । हम सब इस शोर के अभ्यस्त हो गये हैं । सड़क पर फाटक बंद होते ही सारा ट्रैफिक जाम हो जाता है । दोनों ओर कारें, स्कूटर, ट्रक, रिक्शा और बैलगाड़ियाँ आपस में गुत्थमगुत्था होने लगती हैं । कुछ ही क्षणों में सड़क को दरम्यिान में से काटती हुई रेलगाड़ी गुज़रती है । फाटक खुलते हैं । आपाधापी और एक शोर आदमी की असलियत को उजागर कर देता है । यहां कुछ पता नहीं कि राह चलते लोग कब गाली गलौच और हाथापाई तक उतर आयें । लेकिन कुछ ही क्षणों बाद सब कुछ शान्त हो जाता है ।

इंजन की सीटी की अनुगूंज मेरे मस्तिष्क में बराबर गूंजती रहती है। इसी अनुगूंज की महीन रस्सियों को पकड़ कर मैं बहुत पीछे लौट जाता हूं। अचानक रेलगाड़ी रुक जाती है। रेलगाड़ी से पूज्य माता जी उतरती हैं। मेरे लिए ढेर सारा प्यार लेकर। मैं सिर से लेकर पाँव तक ममता में भीग जाता हूं। यह कैसा पड़ाव है कि जहाँ वात्सल्य का सिगनल चलती हुई रेलगाड़ी को रोक देता है। कैथल और कुरूक्षेत्र के बीच इसी छोटी लाईन पर यह रेलगाड़ी जैसे सिर्फ हम दोनों मां बेटे के लिए ही चलती हो। इसी रेल पटरी की दूसरी ओर गुरूकुल है। गुरूकुल की सीमाओं और मर्यादाओं में बंधे अपने लाल पर आशीषों की बरखा करती मां उतरती है। पूज्य पिता जी यहाँ के सम्मानीय व्यक्ति हैं। शायद उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से ही रेलगाड़ी का गार्ड स्टेशन अथवा सिगनल की बिना कोई परवाह किये यहाँ गाड़ी रोक देता है... जहाँ मुझसे मिलने के लिए माता जी को उतरना होता है।

मैं मां की ओर दौड़ता हूं लगभग नाचता हुआ। मेरे नन्हें बदन पर नाचता है यज्ञोपवीत। यहाँ रस्सी कूदते, दौड़ लगाते, दण्ड पेलते, बैठक लगाते, निशानेबाजी का अभ्यास करते, स्वाध्याय करते, धीरे धीरे पनप रहा है मेरे अन्दर आत्म विश्वास, परिस्थितियों से जूझने का साहस और कर्मठता। स्फूर्त्ति से भर गया हूं मैं। शायद यही मेरे जीवन का आधार है। गुरूकुल के कड़े अनुशासन में मां-बहन अलबत्ता किसी भी महिला से स्वतन्त्र रूप से मिलने पर प्रतिबन्ध है। इसलिए गुरूकुल में मुझसे मिलने माता जी कभी कभार ही आती हैं।

एक वीतराग संन्यासी के निर्देशन में गुरूकुल का कड़ा अनुशासन मुझे जिस सांचे में ढाल रहा है, शायद यह ज़िन्दगी की तल्ख हकीकतों के साथ दो चार होने का पूर्वाभ्यास है। गुरूकुल भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मेरूदण्ड है। गुरूकुल हमें जीने की कला सिखाता है। गुरूकुल की तपोभूमि पर मेरे कदमों के निशान अनजाने में ही सही अपने लक्ष्य की तलाश में हैं। गुरूकुल रास्ते और मंज़िलें, दोनों सुनिश्चित करता है।

इस समय मेरी आयु छः अथवा सात वर्ष होगी। (जन्म 16 मार्च 1920) गुरूकुल की दिनचर्या के साथ तालमेल बिठा रहा हूं मैं। प्रातः 4 बजे तख्तपोश की कठोर शैय्या से उठते ही प्रातःकालीन मन्त्रोच्चारण के साथ दिन उगता है। कोमल अंकुर की तरह तरो ताज़ा स्वच्छ और निर्मल। शौचादि से निवृत हो कर ब्रहमचारी भ्रमण के लिए निकलते हैं। तत्पश्चात योगाभ्यास और व्यायाम होता है। दातुन-कुल्ला और स्नानादि के पश्चात हम दैनिक अग्निहोत्र के लिए यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त करते हैं। हवन यज्ञोपरान्त अपने अपने पात्र ले कर हम अल्पाहार के लिए पंक्तिबद्ध

होते हैं।

गुरूकुल की परम्परानुसार अदल बदल कर सात ब्रहमचारी गऊशाला की गऊऐं चराने चरागाहों की ओर निकल जाते हैं। परस्पर हंसते-खेलते और बातें करते, समय इस तरह गुजर जाता है कि जैसे ज़िन्दगी एक उत्सव हो। गऊऐं चराने के लिए हम बच्चों में होड़ लगी रहती है। हम ब्रह्यचारी साधारणात: बनियान, नीकर अथवा धोती ही पहनते हैं लेकिन विशेष अवसरों पर जब कभी बाहर जाना होता है तो पीले वस्त्र पहन कर ब्रह्यचारी ऋषि परम्परा के ध्वजवाहक बन कर बाहर निकलते हैं।

ज़िन्दगी का यह कथानक (वर्ष 1927 से 1932 तक का समय) कुछ धुंधली स्मृतियों के जलते हुए चिरागों की मद्धम रौशनी में अपने अतीत की पगडण्डियों पर नन्हें कदमों के निशान छोड़ता हुआ आज जिस पड़ाव पर है... वहाँ से पीछे मुड़कर देखता हूं तो गुज़रे हुए वक्त की रंगीन तितलियों के पीछे दौड़ता हूं। जिनमें जीवन के तमाम रंग विद्यमान हैं। काले, पीले, लाल, सुनहरी। स्मृतियों की तितलियों के पीछे दौड़ता हुआ मैं इधर कहाँ पहुंच गया हूं।

समय के साथ दोस्ती भी रही और दुशमनी भी । इस रणभूमि में पता नहीं कब शाम का सूरज लहूलुहान हो कर आकाश में बिखर जायेगा, कोई नहीं जानता

मैं जिस मनोदशा में हूं, वहाँ गाड़ी का शोर बाहर भी है और एक शोर मेरे अन्दर भी। अनेक सपने संजो कर मैं घर वापिस लौट रहा हूं। नंगे पाँव... पीले वस्त्र। मैं इस बात से बेखबर हूं कि रेलगाड़ी में अन्य मुसाफिर मेरे बारे में क्या सोचते होंगे। मैं रेलगाड़ी में होकर भी रेलगाड़ी में नहीं हूं। मैं तो एक अरसे बाद घर वापिस लौट रहा हूं। मेरे बालमन में कल्पनाओं के आकाश पर उड़ते हुए परिन्दों की मनमोहक आवाजें जैसे मुझे दोनों बाहें फैला कर अपनी ओर बुला रही हों .... एक खुला विस्तृत-आकाश ! गर्मियों के दिनों में सभी घर-परिवार के लोग श्रीनगर जाते हैं। एक मैं हूं कि जो हर वर्ष इस आनन्द से वंचित रह जाता हूं। बेशक मुझे इस बात का किंचित मात्र भी दुख नहीं है। लेकिन माता जी के लिए यह बात कष्टप्रद है। उनके आग्रह पर इस बार मुझे भी घर बुला लिया गया है।

मैं गुरूकुल की दिनचर्या और समय सारिणी में बंधा पला और बड़ा हुआ हूं। घर मेरे मन में कौतूहल पैदा कर रहा है। मैं चाहता हूं कि रेलगाड़ी के पंख लग जायें और पलक झपकते ही मैं अपने घर पहुंच जाऊं। घर जाऊंगा तो ऐसा होगा, घर जाऊंगा तो वैसा होगा... यह सब सोचते हुए मैं खिड़की से बाहर देखता हूं तो हैरान हो जाता हूं कि वहाँ पेड़ और बिजली के खम्भे गाड़ी से भी कहीं ज्यादा तेज़ गति से पीछे की ओर दौड़ रहे हैं। गाड़ी में धूप-छाँव की तरह सुख दुख के मेले हैं। मैं इन लोगों की न तो पीड़ा समझता हूं और न उल्लास का कोई कारण। बस कुछ लोगों को मुंह लटकाये हुए देख रहा हूं और कुछ लोगों के कहकहे सुन रहा हूं। मेरे अन्तरमन को कुछ भी प्रभावित नहीं कर पा रहा। कितने स्टेशनों पर गाड़ी रुकी। कहाँ कहाँ सिगनल झुके और उठे और किन पड़ावों की अवहेलना कर हमारी गाड़ी तेज़ गति से आगे बढ़ गई, मुझे कुछ याद नहीं।

अन्तत: रेलगाड़ी मोगा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर रुकती है। मैं उचक कर देखता हूं तो पाता हूं कि बाहर के धुँधलके में रात का रंग घुलने लगा है। इस अंधेरे में लैम्प पोस्टों की मंद रौशनी में जैसे चेतना का संचार होने लगता है। ये लैम्प पोस्ट जैसे हर आते जाते मुसाफिर से उसका हाल अहवाल पूछ रहे हों। मध्यम श्रेणी शहरों के रेलवे स्टेशन इसी तरह आत्मीयता से मिलते हैं। यहाँ सभी लोग एक दूसरे से परिचित हैं। यहाँ इतनी भीड़ नहीं है कि मैं पहचान न पाऊं। मैंने दूर से ही देख लिया है कि पूज्य पिता जी अपने प्रिय मित्र लाला काशीराम सहित मुझे लेने के लिए आये हुए हैं। मैं नंगे पाँव दौड़ता हुआ पिता जी की ओर लपकता हूं। पिता जी ने प्यार से मुझे अपनी बाहों में भरते हुए मेरा माथा चूम लिया है। पिताजी की उंगली का सुखद स्पर्श पा कर मैं जैसे उनके सुरक्षा कवच में आ गया हूं।

घर आते ही मैं और घर दोनों एक दूसरे को अजनबी की तरह देखते हैं। पूज्य माता जी आगे बढ़ कर मेरा माथा चूमती हैं। सिर से लेकर पाँव तक मुझे निहारती मां की पलकें भीग जाती हैं। नंगा बदन, पीली धोती... नंगे पाँव। मैं यहाँ सामान्य होने की कोशिश में कुछ और भी अजीब लग रहा हूं। मेरा व्यवहार सामान्य बच्चों जैसा न देख कर माता जी मेरे बारे में चिन्तित हैं। मैं घर में अपने दूसरे भाईयों की तरह व्यवहार नहीं कर पा रहा। इस असमानता ने अजीब माहौल पैदा कर दिया है। पूज्य माता जी ने घोषणा कर दी है कि मैं अब गुरूकुल नहीं जाऊंगा। धीरे धीरे मैं बदली हुई परिस्थितियों में स्वयं को सामान्य बनाने की कोशिश में थोड़ा सहज हो रहा हूं। गुरूकुल मेरे अतीत का एक महत्वपूर्ण अंग, गुरूकुल मेरे वर्तमान की आधारशिला, गुरूकुल मेरे भविष्य का प्रकाश स्तम्भ। गुरूकुल की संस्कृति मेरे खून में घुल मिल गई है।

गुरूकुल मेरे अतीत का एक महत्वपूर्ण अंग, गुरूकुल मेरे वर्तमान की आधारशिला, गुरूकुल मेरे भविष्य का प्रकाश स्तम्भ। गुरूकुल की संस्कृति मेरे खून में घुल मिल गई है।

गुरूकुल से लौटने के बाद जिस मुक्त आकाश में मैने साँस लेना आरम्भ किया है, वहाँ माता पिता का लाड़ प्यार, घर में भाई बहनों और स्कूल में मित्रों का संग मेरे बाल सुलभ शरारती मन को सुकून देने लगा है। मुझे सनातन धर्म स्कूल में दाखिल करवाया गया है। स्कूल बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए उत्तरदायी होता है। साम्प्रदायिक और धार्मिक संस्थाओं ने व्यक्तित्त्व निर्माण के लिए जिन अनेक शिक्षण संस्थाओं को निर्मित किया है उनमें शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा और बच्चों के नैतिक तथा चारित्रिक विकास की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। सनातन धर्म स्कूल और हमारे घर के दरम्यिान फ़ासिला मात्र पैदल दूरी तक का ही है। लेकिन यहां रेलवे फाटिक क्रॉस करना हमारी विवशता है।

सुबह की गुनगुनी धूप में अपने कन्धों पर स्कूल बैग लिए जब बच्चे अपनी अपनी पाठशाला की ओर जाते हैं उस समय देवता भी शायद सड़क के किनारे खड़े होकर उनका अभिनन्दन करते होंगे। निच्छलता, निर्मलता, सरलता, निरीहता बड़ी ही सहज गति के साथ जैसे सड़कों पर प्रवाहित हो रही हो। हम भी अपने कन्धों पर स्कूल बैग लिए अपनी पाठशाला सनातन धर्म स्कूल जाते हैं।

घर में मुझसे तीन वर्ष बड़े भाई गोपाल कृष्ण मुझसे अत्यन्त स्नेह रखते हैं।अढाई तीन वर्ष मुझसे छोटे भाई बाल कृष्ण और उनसे छोटे मनमोहन कृष्ण, हरि कृष्ण, अवतार कृष्ण और सबसे छोटे भाई जितेन्द्र हैं। सत्या बहन और मनमोहन तो जुड़वां हैं। बहन पुष्पा, प्रेम, स्वर्णा और सुदेश हैं। इतने भाई बहनों के बीच खूब धमा चौकड़ी रहती है। बैडमिण्टन की शटल और रैकट से मेरी दोस्ती हो गई है। ताश खेलने का भी मुझे खूब शौक है। पूज्य माता जी और पिता जी हमारी पढ़ाई के लिए सचमुच फ़िकरमन्द हैं

और गम्भीर भी। मुझे स्कूल भेज कर उन्होंने चैन की साँस ली हो, ऐसा बिल्कुल नहीं है। वे बराबर हम सब बच्चों की पढ़ाई की ओर ध्यान देते हैं। मेरी पढ़ाई लिखाई जिस वातावरण में हो रही है उसमें स्कूल के अध्यापकों के उत्तरदायित्व को हमारे घर में बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। स्कूल में तो अनेक अध्यापक हैं लेकिन मास्टर अनोख सिंह की बात ही कुछ और है। सादगी की प्रतिमूर्ति, ईश्वर भक्त और कर्त्तव्य पारायण- मास्टर अनोख सिंह। साईंस मास्टर सरदार अनोख सिंह जी स्कूल में तो हमें विज्ञान पढ़ाते हैं। लेकिन मुझे घर पर ट्यूशन पढ़ाने के लिए आते हैं तो विज्ञान के अतिरिक्त गणित, अंकगणित और अन्यान्य विषयों में भी मेरी स्थिति पर पूरी नज़र रखते हैं। बच्चे के सर्वांगीण विकास का उत्तरदायित्त्व निभाने वाले अध्यापक हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। बहुत ही संवेदनशील हैं मास्टर अनोख सिंह जी। मास्टर जी के प्रति मैं सदैव श्रद्धावनत हूं।

पढ़ाई के अतिरिक्त मैंने यहाँ वॉलीबाल खेलना भी सीख लिया है। खेलना और पढ़ना, पढ़ना और खेलना... मेरे लिए बस यही दो महान काम हैं। वॉलीबाल में मुझे मेरी योग्यता के आधार पर टीम का कैप्टन मनोनीत किया गया है। नैट के इस ओर आती हुई बॉल को अपने दोनों हाथों की विशेष मुद्रा से नैट के दूसरी ओर पहुंचा देना और तालियों की गड़गड़ाहट सुन कर आत्म विभोर हो जाना। अनुशासन, समर्पण, संगठन, परस्पर तालमेल और बन्धुत्व की भावना से हम खेल के मैदान में उतरते हैं। ज़िन्दगी का यह पहला सबक हमने इसी खेल के मैदान से सीखा है।

अब मांस पेशियों में ताकत और मस्तिषक में उजाला अपने पंख फैलाने लगा है। इस माध्यमिक विद्यालय (सनातन धर्म स्कूल) से मैनें आठवीं श्रेणी पास कर ली है (1934-35)। पढ़ाई में अगरचे मैं बहुत होशियार नहीं हूं लेकिन कुछ कम भी नहीं हूं। हमारे घर में बच्चों को सुशिक्षति बनाने के लिए माता जी और पिता जी दोनो बहुत उत्सुक हैं। मुझे डी. एम. कालेज में पढ़ने के लिए भेज दिया गया है। यहाँ मैं नौवीं श्रेणी में हूं।

समय का प्रवाह और मेरी चेतना का प्रवाह बरबस मुझे किसी अन्य दिशा की ओर खींच कर लिए चला जा रहा है।

शाम ढल रही है। सूरज की तपिश में अब न रौशनी ही बाकी है न ऊष्मा। चुपचाप डूबते हुए सूरज को देखना और अपनी ज़िन्दगी की किताब को पढ़ना और आकाश में उड़ते हुए परिन्दों को देखना... जी तो चाहता है कि एक बार फिर से उन्हीं पगडण्डियों पर से अपनी ज़िन्दगी का सफर शुरू करूं कि जिस पर से होता हुआ आज मैं एक लम्बी यात्रा तय करने के बाद यहाँ पहुंचा हूं। कीर्त्तिध्वज जहाँ फहराते हों, वहाँ परम पुरुषार्थ पर परम सत्ता की विशेष कृपा दृष्टि होती है। हवाओं में अनहद नाद गूंजता है। नवांकुर की पवित्र मुस्कान पर खुशबूएं न्यौछावर होती है !

मैं जिस मिट्‌टी की खुशबू हूं... उस पर गुज़रे हुए वक्त के कदमों के निशान बहुत गहरे अंकित हैं। गुज़रा हुआ वक्त इतिहास की कब्रों में दफ़न हो कर भी हमेशा जीता जागता रहता है।जैसे कि यह सब अभी कल की बात हो। मेरे पितामह (दादा) स्व: लाला राम चन्द जी पुरी बटाला (जिला गुरदासपुर) में रेलवे विभाग से सम्बन्धित रहे हैं। मेरी दादी माँ देवी स्वरूपा थीं। दादा जी धर्म पारायण, कर्त्तव्य पारायण और समाज के लिए समर्पित व्यक्तित्त्व के स्वामी थे। उनके सम्मान और श्रेय की सुगन्ध से सुवासित मेरे पूज्य पिता जी- लाला देवी दास जी पुरी अल्पायु में ही मातृस्नेह से वंचित हो गये।

पूज्य पिता जी की आयु उस समय केवल चार वर्ष थी। (जन्म 9 अगस्त 1891, जन्म स्थान बटाला जिला गुरदासपुर) उस समय चार वर्ष के अबोध बालक के लिए पिता ने किस प्रकार मां की भूमिका को भी सरन्जाम दिया होगा इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। ईश्वर द्वारा एक अभाव की पूर्ति करने का ढंग भी निराला है। पिता जी को मेधा बुद्धि देकर ईश्वर ने उनके कठिन मार्ग को भी सुगम बना दिया। पूज्य पिता जी अपने अध्ययन काल में प्रत्येक श्रेणी में अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होते। अभी जवानी में कदम रखा ही था कि पूरे देश को आज़ादी की जंग में जूझते हुए देख कर पूज्य पिता जी भी देशभक्ति के तराने गाते हुए इस जंग में शामिल हो गये। राष्ट्रीय विचारधारा से ओतप्रोत पिता जी महान देश भक्त सरदार अजीत सिंह के साथी रहे। इसी मध्य दादा जी का तबादला श्रीनगर (जम्मू काशमीर) हो गया। पिता जी को भी पंजाब छोड़ कर उनके साथ श्रीनगर जाना पड़ा। परन्तु उनकी पढ़ाई में पूज्य दादा जी ने कोई व्यवधान नहीं आने दिया। पिता जी पढ़ाई में खूब होशियार थे। उन्हें महाराजा हरि सिंह के सहपाठी होने का भी सुअवसर प्राप्त हुआ। उस ज़माने की कुछ धुंधली यादें, कुछ सुनी सुनाई कहानियां हमें आज भी रोमांचित करती हैं।

उन दिनों लाहौर से रावल पिण्डी तक रेलवे द्वारा जो सामान श्रीनगर (जम्मू काशमीर) के लिए भेजा जाता, उसे श्रीनगर तक पहुंचाने के लिए एक प्राईवेट एजन्सी राधा कृष्ण एजन्सीज़ के पास काँट्रैक्ट था। डाक, पत्राचार, पार्सल इत्यादि अन्यान्य सामान पिण्डी से श्रीनगर लाने के लिए उन दिनों मात्र टांगे ही उपलब्ध थे। इन दुर्गम रास्तों पर घोड़ों की टापों की प्रतिध्वनियाँ वादियों में गूंजतीं तो जैसे पूरा वातावरण स्पन्दित हो कर प्राणवान हो जाता। इन लम्बे रास्तों पर टांगों में जुड़े घोड़े हांफने लगते। थक कर चूर हुए घोड़ों को प्रत्येक 8 मील बाद बदल दिया जाता। टांगे बदस्तूर अपने रास्ते पर गतिशील रहते। यातायात के इन साधनों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता शायद उनकी बदौलत ही विकास की सम्भावनाएं उजागर हुई हों।

बहरहाल दादा जी चौबीस घण्टे अपनी ड्यूटी पर तैनात रहते। दादी जी के देहावसान के बाद तो उन्होनें कर्मक्षेत्र के इस बृहत यज्ञ में जैसे अपने आप को होम कर दिया। इतने समर्पित और कर्त्तव्य पारायण व्यक्ति का सम्मान तो स्वाभाविक ही था। श्रीनगर रहते हुए पूज्य पिता जी ने दसवीं श्रेणी की परीक्षा बहुत ही अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की। पढ़ाई के प्रति पिता जी की विशेष रुचि को देखते हुए, उन्हें उच्च शिक्षा के लिए लाहौर भेजने का फैसला हुआ। पिता जी को **VDJH** टैक्निकल

इन्सटीट्यूट लाहौर में दाखिल करवा दिया गया। वर्ष 1913 में पूज्य पिता जी ने इस इंस्टीट्यूट से प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने शैक्षणिक जीवन में उन्होंनें जितने प्रंशसा पत्र और प्रमाण पत्र संग्रहीत किये उनमें पंजाब सरकार से प्राप्त स्वर्ण पदक की आभा हमें आज भी गौरवान्वित करती है।

सन 1914 में पूज्य पिता जी का विवाह हमारे पूज्य माता जी श्रीमती राजरानी पुरी से सम्पन्न हुआ था। पूज्य माता जी हमारे लिए ममता की साक्षात मूर्ति थीं। अत्यन्त कोमल, धार्मिक और सौम्य स्वभाव पूज्य माता जी घर गृहस्थी के लिए जहाँ समर्पित थीं वहाँ पूज्य पिता जी के लिए एक समर्थ सहयोगी थीं। अपने कोमल स्वभाव और बुद्दि कौशल से उन्होनें हमेशा हम सबका मार्गदर्शन किया।

एक समृद्ध विरासत की यह सम्पदा सदैव मेरी भावनाओं को उद्वेलित करती है। मैं उम्र के जिस पड़ाव पर हूं, वहाँ सपनों का संसार और इसके चुम्बकीय आकर्षण में भी मैं अपने वास्तविक उद्देश्य को कभी नहीं भूलता। दयानन्द मथुरादास महाविद्यालय मेरे लिए एक सरहद है जिसे पार करना वास्तविक कर्मक्षेत्र में उतरने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। मैं इस हकीकत को जानता हूं। मेरे सामने प्रकट होने लगे हैं ज़िन्दगी के नये नये आयाम। डी. एम. कालेज के प्रिं. श्री आर. के. कुमार के गतिशील नेतृत्त्व में यह कालेज प्रगति के पथ पर है। वैदिक कर्मकाण्ड और आर्यत्व यहाँ की गतिविधियों में स्पष्टत: परिलक्षित होता है। यहाँ शिक्षा के साथ साथ नैतिक शिक्षा और राष्ट्रीय चरित्र को विकसित करने पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। वैदिक परम्परायें पुष्पित पल्लवित हो रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की भूमिका से यह राष्ट्र कभी उऋण नहीं हो सकता। चेतना की इस मशाल को प्रि. आर. के. कुमार ने रौशन किया है। मुझमें गुरूकुल के संस्कार फिर अंगड़ाई लेने लगे हैं। मैं अन्तरमन से सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगा हूं। साँस्कृतिक गतिविधियों और खेल के मैदान में मैं बराबर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा हूं।

यहाँ शिक्षा प्राप्त करते हुए मुझे पिता जी के कारोबर की ओर भी ध्यान देना होता है। बड़े भाई गोपाल कृष्ण तो व्यवसाय के प्रति पूर्णत: समर्पित हैं। आंशिक रूप से मैं भी अपना योगदान देता हूं। आय के स्त्रोत विकसित करने के लिए मेरे मन में एक चिंगारी तब से ज्वाला बनने की प्रतीक्षा में है जब से मुझे पता चला है कि लाहौर की सड़कों पर दो घोड़ों वाली बग्घी पर सवार होकर पिता जी जब गुज़रते थे तो राह चलते लोग रुक कर इस शानो शौकत को देखा करते थे। फिर अपने व्यापारिक पार्टनर की गलतियों से उन्हें आर्थिक तंगी के दौर में से गुज़रना पड़ा। मैं वे पुराने वैभवशाली दिन लौटाने के लिए कृतसंकल्प हूं। मैं समय के घोड़ों को अपनी दिशा बदलने के लिए विवश कर दूंगा।

अपने मन में भावनाओं का ज्वार लिए मैं अपनी पढ़ाई को जारी रखे हुए हूं। यज्ञों के आयोजन और आर्य समाजी गतिविधियों में भी बराबर भाग लेता हूं। हमारे अध्यापक मा. खुशी राम जी हमें इतिहास पढ़ाते हैं। दिखने में शान्त, सौम्य और दार्शनिक जैसे मास्टर खुशी राम इतिहास के अतिरिक्त होम्योपैथी में भी रुचि रखते हैं। इतिहास और होम्योपैथी के बीच केवल मात्र इतनी समानता है कि इतिहास हमें हमारे राष्ट्र के अतीत से परिचित करवाता है और होम्योपैथी किसी रोगी के रोग का इतिहास और उसका निदान ढूंढने की प्रक्रिया है। इन्हीं विरोधाभासों में खोये खोये मा. खुशी राम अपनी शालीनता और सौम्य स्वभाव से हमें प्रभावित करते हैं। प्रो. राम नारायण जी हमें साईंस पढ़ाते हैं। कुल मिला कर हमारे समय में बच्चों के व्यक्तितत्त्व निर्माण में अध्यापक की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

घर, स्कूल और हमारा व्यवसाय ! मैं अन्तर्विरोधों के बीच एक शक्ति अर्जित कर रहा हूं। मैं सोचता हूं कि डी. एम. कालेज के इतिहास में प्रि. आर.के. कुमार की भूमिका स्वणाक्षरों में अंकित होगी। परन्तु प्रि. कुमार इन सब बातों से विरक्त कालेज के विकास के लिए कटिबद्ध हैं। उनका निश्चय है कि वह गर्ल्ज़ कालेज भी चलायेंगे। स्त्री शिक्षा के लिए आर्य समाज के सरोकार को महार्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायियों ने बाखूबी समझा है। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने कन्या महाविद्यालय और गुरूकुल की स्थापना करके जागृति का जो बिगुल बजाया था उसकी अनुगूंज मोगा में भी सुनाई देने लगी। प्रिंसीपल कुमार ने गर्ल्ज़ कालेज का शुभारम्भ कर दिया। बहन सत्या उस कालेज की पहली और एक मात्र छात्रा हैं शेष भाई बहन मथुरा दास एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल और आर्य पुत्री पाठशाला में विद्याध्ययन कर रहे हैं। संघर्ष के इस दौर में, मेरे संकल्प के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को आप कुछ भी समझें, मैं विवशतावश इस श्रृंखला से धीरे-धीरे विलग होने के कगार पर हूं।

मैं इधर दसवीं श्रेणी में हो गया हूं। घर बाहर की वस्तु-स्थिति को समझने लगा हूं।

डी. एम. कालेज मोगा के संस्थापक राय बहादुर डा. मथुरा दास के साथ पूज्य पिता जी के मित्रतापूर्ण सम्बन्धों का आधार मै. बांकामल निरंजन दास फर्म के साथ डा. साहब के व्यापारिक सम्बन्धों में आई खटास रहा लेकिन पूज्य पिता जी की मध्यस्थता से इस समस्या का निदान हो गया। पूज्य पिता जी मै. बांकामल निरंजन दास फर्म में मैनेजर के पद् पर कार्यरत हैं। परन्तु उन्होनें निडरता के साथ जो बात सच है उसे हमेशा सच कहा और जो झूठ है उसे झूठ कहा। पिता जी न्यायप्रिय हैं। उन्होनें बिना किसी भेद्भाव के न्याय किया। राय बहादुर डा. मथुरा दास उनकी इस आदत से अत्याधिक प्रभावित हैं। महान व्यक्ति अपने गुण कर्म और स्वभाव से महान होते हैं। वह अपनी आलोचना पर भी सकारात्मक प्रतिक्रिया करते हैं। पूज्य पिता जी हमेशा हां में हां मिलाने वालों में से नहीं। क्योंकि वह जानते हैं कि महान व्यक्ति अक्सर महान गलतियाँ करते हैं। राय बहादुर डा. मथुरा दास सामाजिक गतिविधियों में जहाँ कहीं भी गलत निर्णय लेते हैं, पिता जी डट कर उनका विरोध करते हैं। तमाम नाराज़गी के बावजूद सांयकाल डा. साहब हमारे घर आते हैं और पिता जी को मना कर ही दम लेते हैं। इस सरलता और उदारता की कोई दूसरी मिसाल कहाँ। अपनी गलती को स्वीकार करने ओर उसे सुधारने में डा. साहब कभी भी हिचकिचाते नहीं।

पद्म विभूषण राय बहादुर डा. मथुरा दास विलक्षण प्रतिभा के स्वामी हैं। वह एक सुयोग्य डाक्टर हैं। नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. साहब ने कितने रोगियों का आप्रेशन किया, कितने रोगियों को नेत्र ज्योति प्रदान की इसका कोई हिसाब नहीं है। लेकिन ज्ञान की ज्योति जला कर उन्होनें शिक्षा के क्षेत्र में भी मोगा को आत्म निर्भर बनाया है। उनकी दूरदर्शिता से ही मोगा में आर्य पुत्री पाठशाला, मथुरा दास ऐंग्लो संस्कृत माध्यमिक पाठशाला और डी. एम. कालेज मोगा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के पथ पर हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जिस क्रान्तिकारी संस्था आर्य समाज की स्थापना की वहाँ शिक्षा के प्रचार प्रसार की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। इसी प्रवाह को गति प्रदान करने के लिए राय बहादुर डा. मथुरा दास जी पाहवा प्राण- मन से जुटे हुए हैं।

न्यू टाऊन मोगा के निर्माण में भी डा. साहब की भूमिका को हमेशा याद रखा जायेगा। जिस योजनाबद्ध तरीके के साथ उन्होनें न्यू टाऊन का निर्माण किया और इसे बसाया है, यह भी एक अद्वितीय घटना है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर डाक्टर साहब ने अपनी प्रतिभा का सिक्का मनवा कर मोगा नगर को गौरवान्वित किया है। इसी महापुरुष के नेतृत्व में संचालित डी. एम. कालेज मोगा में मैं दसवीं श्रेणी का विधार्थी हूं। मेरे लिए प्रात: सांय हमेशा काम ही काम रहता है। कभी कालेज का, कभी घर का, कभी कारोबार का। कितने हिस्सों में बंटा हुआ हूं मैं।

इसी कड़े संघर्ष की एक लम्बी दास्तान को मैं अपने प्राणों के स्पन्दन में अनुभव कर रहा हूं।

वर्ष 1929 में पूज्य पिता जी मोगा आये थे ओर मैं: बांकामल निरंजन दास की कॉटन फैक्ट्री में बतौर मैनेजर कार्यरत थे। पिता जी ने इस डगमगाते हुए जहाज़ को जैसे अपने बाज़ुओं की ताकत से थाम लिया था। कारोबार ठीक चल रहा था। परन्तु वर्ष 1933 में उन्होनें नौकरी छोड़ दी और कृष्णा कंपनी के नाम से अपना कारोबार शुरूकिया। बिना किसी तैयारी के नदी में छलांग लगाने वाले तैराक को अपने प्राणों की रक्षा के लिए जो चेष्टाएं करनी पड़ती हैं, हमें भी वह सब करनी पड़ीं। व्यापार के लिए धन की व्यवस्था दरअसल सबसे मुश्किल काम था। हमारा परिवार बहुत बड़ा था। ज़रूरतें बहुत ज्यादा थीं और संसाधन बहुत कम। पिता जी इन दिनों कठिनाई में थे। बड़े भाई गोपाल कृष्ण एफ. ए. कर रहे थे। पढ़ाई छोड़कर उन्हें भी ज़िन्दगी की इस वास्तविक जंग में शामिल होना पड़ा। शुरू में एक आटे की चक्की और 1934 में कपास की चार जिनिंग मशीनें लगा ली गईं।

कठिन समय हमेशा मद्धम गति से ही गुजरता है। वक्त हमेशा पहाड़ जैसा लगता है। लेकिन वक्त कभी नहीं रुकता। समय के साथ साथ चलना ही ज़िन्दगी है। पूज्य पिता जी ने आटा चक्की के

साथ साथ चावल निकालने के लिए हॉलर लगा लिया है। उन्होनें पंजाब एग्रीकल्चरल डिपार्टमैंट को पंजाब में चावल का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। किसानों को इस दिशा में जागरूक किया। गोपाल जी नें मोगा मण्डी में धान का कारोबार सम्भाल लिया है। धान की खरीद का काम उनके ज़िम्मे है। उन्होनें बाखूबी अपना काम सम्भाल लिया है। अस्तित्व की इस जंग में गोपाल जी ने सदैव संयम बनाये रखा। गोपाल जी पढ़े लिखे हैं, बोल चाल की भाषा और सम्भाषणा की कला जानते हैं। अपने मधुर व्यवहार, बुद्धि कौशल, पुरुषार्थ एवं सद्-व्यवहार के कारण वह मण्डी में अत्याधिक लोकप्रिय हैं। मैं तो उनके सामने कुछ भी नहीं हूं। जितना सम्मान और विश्वसनीयता उन्हें प्राप्त है इतना बहुत कम लोगों के नसीब में होता है। वह घर-बार और कारोबार की तमाम ज़िम्मेदारियों का निर्वहन कर रहे हैं। कितना ज़ब्त है इस इन्सान में, मैं सोचता हूं तो मेरी पलकें भीग जाती हैं।

पृथ्वी राज (गणपत राय पृथ्वी राज) के साथ गोपाल जी के सम्बन्ध बहुत ही मित्रतापूर्ण हैं और डाबर साहब (डायरैक्टर सिविल सप्लाई डिपार्टमैंट) के साथ इन दोनों की खूब पटती है। निश्चित रूप से कारोबार में यह बात लाभप्रद है। धान का कारोबार प्रगति के पथ पर है। हमनें धान सुखाने के लिए किराये पर ज़मीन ले ली है और धान के इस कारोबार के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया है।

वर्ष 1937 में इधर मैनें दसवीं की परीक्षा पास की उधर पिता जी ने मुझे भी काम पर बिठा दिया। आर्थिक विषमताओं के सम्मुख कई बार हम कितनें विवश होते हैं। मेरे काम में शामिल होने से कम-ज़-कम एक आदमी की कमी तो पूरी हुई-वह खर्च बचा और दूसरा पढ़ाई का खर्च भी बचा। इस मुश्किल में जब कभी पिता जी का हौंसला डगमगाता है, मां के शब्द उन्हें सहारा देते हैं : आप हौंसला करें ये मुश्किल दिन ऐसे ही गुजर जायेंगे आपकी औलाद बड़ी लायक है। ये बड़े होकर आपके सब कष्ट दूर कर देवेंगे... वगैरा वगैरा।

कठिन समय हमेशा मद्धम गति से ही गुजरता है। वक्त हमेशा पहाड़ जैसा लगता है। लेकिन वक्त कभी नहीं रुकता। समय के साथ-साथ चलना ही ज़िन्दगी है।

मेरा जीवन उन लोगों से नितान्त भिन्न है कि जो लोग मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुए हैं। मैं तो अपना पैराहन सीते सीते साहस की चादर बुनने में पारंगत हो गया हूं। ईश्वर कृपा और मेरा पुरूषार्थ ही इस चादर का ताना बाना है। मैं जानता हूं कि इसके सिवा दूसरा अन्य कोई रास्ता भी नहीं है। मैं एक साधारण बालक हूं, जिसे असाधारण परिस्थितियों ने वक्त से पहले, ज्यादा गम्भीरता से सोचने समझने और कुछ करने के लिए मजबूर कर दिया है। लेकिन इतनी छोटी उम्र में आखिर मैं क्या कर सकता हूं। मैं क्या सहयोग दे सकता हूं ? संघर्ष के इन दिनों में पूज्य माताजी को घर गृहस्थी के खर्चे की व्यवस्था करते हुए देखता हूं। सोचता हूं मुझे भी कुछ करना चाहिये। मैनें यथा सामर्थ्य सब्ज़ी लाने का उत्तरदायित्व सम्भाल लिया है। इसके लिए पूज्य माता जी ने पाँच रुपये महीना का खर्च निश्चित किया है। सब्ज़ी लाने के लिए अक्सर मैं काफी दूर गन्दे नाले की ज़मीन पर रोज़ पैदल चल कर जाता हूं। वहाँ पूज्य पिता जी के एक दोस्त के खेत में से मुझे बहुत कम कीमत पर सब्ज़ी मिल जाती है। कई बार तो मुफ़्त भी। मैं अपनी मेहनत और होशियारी से पाँच रुपये में से अन्दाज़न एक रुपया माहवार बचा लेता हूं। यह उपलब्धि मेरे नन्हे मन को आत्म विश्वास प्रदान करती है। व्यापार की ये कुछ प्राथमिक बातें मुझे घुट्टी में मिली हैं।

इन दिनों हमारी फैक्ट्री में तीन या चार मुलाज़िम काम करते हैं। दरअसल इसे फैक्ट्री कहना ही सिरे से ग़लत है। असल में तो यह एक आटे

की चक्की है। आम लोग इसे बाबू देवी दास की आटे की चक्की कहते हैं। यहाँ एक ऑयल इन्जन का मिस्त्री सन्ता सिंह है जो कि बड़ा ही समझदार और पिताजी का हितचिन्तक है। वह पिताजी के पास बांके मल निरन्जन दास फर्म में काम करता था और फिर जब पिताजी नें अपना काम शुरू किया तो वह भी उनके साथ ही चला आया। दूसरा ताज मुहम्मद है जो कि आटे की चक्की तैयार करता है और इसी चक्की पर काम करता है। वह बड़ा ही मेहनती, हमदर्द और ईमानदार आदमी है। एक मुन्शी यानि क्लर्क श्री राम है। यह तो कमाल का आदमी है। बाहर का काम और घर के अनेक छोटे बड़े काम श्री राम ही देखता है। यहाँ तक की वक्त ज़रूरत घर की सफाई तक भी वह खुद ही कर देता है और चौथा मैं हूं, इन तीनों का सहयोगी। मैं पढ़ाई के साथ साथ इंजन का काम और चक्की का काम भी सम्भालता हूं। मैं दरअसल काम सीख रहा हूं। इस प्रकार खुद अपने हाथों से काम करता हूं। नौवीं और दसवीं श्रेणी की पढ़ाई तथा यह काम काज ! निश्चय ही इससे मेरी पढ़ाई का काफी हर्ज़ होता है। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में मेरे लिए ये दोनों काम ज़रूरी है।

संघर्ष के ये दिन मुझे बता रहे हैं कि ज़िन्दगी का दूसरा नाम संघर्ष है। निरन्तर प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझना ही शायद हमारी नियति है। एक छोटा सा कमरा हमारा आफिस है। इस आफिस की सफाई श्री राम अथवा मैं स्वयं अपने हाथों से करते हैं। खुद ही अपने हाथों से झाडू लगाना और चक्की पर काम करना। सख्त मेहनत के ये दिन मेरे आत्मबल की परीक्षा के दिन हैं। पिताजी ने 1936 में पुन: बांका मल निरंजन दास के यहाँ कैथल जिला करनाल में 250/- रुपये माहवार पर नौकरी कर ली है और मेरे बड़े भाई श्री गोपाल कृष्ण ने पढ़ाई छोड़ कर काम शुरू कर दिया है। हमारे पुरुषार्थ ने ज़िन्दगी की इस जद्दोजहद में, हमारे खानदान को गरिमा प्रदान की है।

वर्ष 1937 में मैट्रिक पास करने के बाद मुझे भी काम पर बिठा दिया गया है। परिस्थितियां कैसी भी क्यों न हों, परिस्थितियों के आगे घुटने टेकना मेरी फितरत नहीं। बहरहाल हम दोनों भाई खूब मेहनत कर रहे हैं। पूज्य माता जी भी काम काज में हमें सहयोग देतीं और हमारा मार्ग दर्शन करती हैं। वह हम दोनों भाईयों को हौसला देती हैं। वह व्यापार को समझती हैं, ईश्वर कृपा से हम दोनों भाईयों की मेहनत रंग ला रही है। काम बढ़ने लगा है। पूज्य पिता जी 1938 में नौकरी छोड़ कर पुन: काम पर आ गये हैं। पिता जी के सरंक्षण में हम दोनों ने खूब मेहनत की है और आज ईश्वर की कृपा से फैक्ट्री में, दो आटे की चक्कियां, चार कॉटन जिनिंग मशीनें, दो कोल्हू, एक रूई धुनने वाली मशीन और एक चावल वाली मशीन यानि हॉलर लग गये हैं। अब हमारा ध्यान चावलों के काम की ओर ज्यादा हो गया है।

आसमान ने कितने रंग बदले हैं। कभी धूप कभी छांव। कभी निराशा के घने बादलों का झुरमुट, कभी इन बादलों को चीरती हुई आशा की कोई एक किरण। ज़िन्दगी की इस महाभारत में हममें से कोई भी अर्जुन की तरह हताश नहीं हुआ। इस कर्म भूमि में कुरूक्षेत्र हमारे सीने में अंगड़ाई ले रहा है। हम इस युद्ध में निश्चित रूप से विजयी होंगे इसी विश्वास के साथ हम इस कर्मक्षेत्र को कुरूक्षेत्र मान कर कर्म का शंखनाद करते आगे बढ़ रहे हैं।

व्यापार में पूज्य पिता जी और भाई गोपाल जी प्राण मन से जुटे हुए हैं, मैनें भी इस कारोबार में पदार्पण किया है। व्यापार की जटिलताओं से मैं अनभिज्ञ हूं। मैं महिला ग्राहकों में घिरा हुआ हूं। किसी की रूई तोल रहा हूं, किसी की कनक उसके सिर से उतरवा रहा हूं। कभी कनक की बोरी आटा पीसने के लिए चक्की में उंडेल रहा हूं। कभी चक्की के कलपुर्ज़े देख रहा हूं। मैं जानता हूं कि चक्की का पहिया ठीक से घूमेगा तो ज़िन्दगी का पहिया चलेगा। ताज मुहम्मद बहुत ही सुयोग्य कारीगर है। वह बिगड़ी हुई मशीनों के कान ऐंठने में माहिर है। मैं उससे यह हुनर सीख रहा हूं। मैं सब काम आपने हाथ से करता हूं। मुझे न हाथ गन्दे होने की चिन्ता है और न अपने कपड़ों की कोई परवाह। ईश्वर ने प्राणों में शक्ति का संचार कर दिया है। मांस पेशियों में ताकत इतनी कि अगर किसी की बाज़ू अथवा टांग पकड़ लूं तो फिर इस गिरफ़्त को तोड़ना किसी के लिए भी दुश्वार हो जाये। लेकिन लोहे के कलपुर्ज़ों का क्या ? एक बिगड़ी हुई मशीन को सुधारते हुए सिर पे ऐसी गम्भीर चोट लगी है कि मैं लहूलुहान हो गया हूं। लेकिन मैंने कभी हिम्मत नहीं हारी।

यद्यपि धान का कारोबार अभी इतना नहीं है कि जिससे आत्म निर्भर हुआ जा सके। लेकिन यह पिता जी की हिम्मत अथवा दूरदर्शिता है कि उन्होनें चावल उत्पादन के लिए कमर कस ली है। हम भी लगे हुए हैं। हुण्डियों पर कारोबार चल रहा है। किस तरह चल रहा है ओर कैसा चल रहा है, अभी हमारे पास यह सब सोचने की फुरसत नहीं है।

ये वर्ष 1942 के दिन हैं जबकि बंगाल में अकाल की स्थिति पैदा हो गई है। इस प्राकृतिक प्रकोप में भूख, बेकारी और बीमारी से लोगों को बेहाल कर दिया है। सरकार इस आपदाग्रस्त क्षेत्र में चावल भेजने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है। इस मुश्किल वक्त में हम भी अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वाह करना चाहते है। मगर...

वक्त ने इस कथानक को एक नया मोड़ दे दिया है।

दिन भर का थका हारा सूरज अस्ताचल में डूब रहा है। रात अपने पंख फैला रही है। शहर जैसे खामोश हो गया है। सन्नाटे को चीरती हुई रेलगाड़ी की सीटी की आवाज़ सुनाई देती है, गोपाल और मैं रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर बेसब्री से गाड़ी की इन्तज़ार में हैं। आज की रात इस आखिरी रेलगाड़ी का कोहराम न जाने अपने अन्दर क्या कुछ समेटे हुए है। इस सबसे बेनियाज़ हम अपने किसी आत्मीय सम्बन्धी की प्रतीक्षा में हैं। अतिथि सत्कार की तैयारियां हो रही हैं। रसोई में पक रहे पकवानों की गन्ध से सारा वातावरण सुवासित है। लेकिन हमारा सारा उत्साह उस वक्त ठण्डा पड़ गया जबकि हमने देखा कि गाड़ी में से उतरने वाली तमाम सवारियों में हमारे अतिथि का कुछ अता पता नहीं चल रहा।

उसी समय गाड़ी से उतरे एक पढ़े लिखे सम्भ्रान्त व्यक्ति ने जो कि किसी सिख परिवार से सम्बन्धित हैं, हमसे किसी होटल अथवा सराय का पता ठिकाना पूछा। परन्तु इस सज्जन व्यक्ति के ठहरने के लिए हमारे इस छोटे से गांव नुमा कस्बे में कोई ऐसी जगह नहीं है कि जहाँ ठहरने के लिए हम उन्हें अपना सुझाव दे पाते।

हम दोनों भाईयों ने परस्पर एकमत हो कर उनसे अनुरोध किया कि अगर उन्हें कोई आपत्ति न हो तो वह हमारे निवास स्थान पर ठहर सकते हैं। सरदार जी ने थोड़ा संकोच से ही सही हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और हम उन्हें अपने साथ ले कर घर चले आये।

अतिथि का स्वागत सत्कार हमारे घर की परम्परा है। लेकिन आज तो जिस विशेष अतिथि के स्वागत में विशेष व्यवस्था की गई हैं... वह सब सरदार जी के नाम कर दी गई। परस्पर सामान्य बातचीत के दौरान हमें सरदार जी ने बताया कि वह लाहौर से मोगा, मार्किट कमेटी के किसी सर्वेक्षण के लिए आये हैं। बस इतना मात्र ! और हमने भी कुछ ज्यादा पूछताछ करना मुनासिब नहीं समझा। भारतीय सभ्यता-संस्कृति में अतिथि की सेवा देव पूजा के समान है। इस दृष्टि से हमने अपनी पारिवारिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए अतिथि के स्वागत को हमेशा प्राथमिकता दी है।

दूसरे दिन नाश्ते के पश्चात हमारे अतिथि महोदय अपने कार्यालय सम्बन्धी काम से निकल गये और बाद दोपहर खाने के समय पर ही वापिस लौटे। खाने के तुरन्त बाद वह लाहौर के लिए रवाना होने वाले हैं। इस थोड़े से समय में ही हमने परस्पर स्नेह का ऐसा संसार सृजित किया है कि हमारे मेहमान और हम सब घर के लोग भावुक हो गये हैं। सरदार जी, हमारे अतिथि सत्कार से कुछ ज्यादा ही अभिभूत हैं। हमसे विदा लेते समय उन्होंनें अपना विज़िटिंग कार्ड थमाते हुए हमें कभी लाहौर आने के लिए कहा।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति में अतिथि की सेवा देव पूजा के समान है। इस दृष्टि से हमने अपनी पारिवारिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए अतिथि के स्वागत को हमेशा प्रथमिकता दी है।

सरदार जी तो चले गये ! लेकिन मैं विज़िटिंग कार्ड की इबारत पढ़ रहा हूं। मैं यह पढ़ कर आश्चर्य चकित हूं कि सरदार जी, जिनके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते थे, वह लाहौर सचिवालय के एक बहुत बड़े उच्च अधिकारी हैं। बहरहाल मैंने यह विज़िटिंग कार्ड किसी बेशक़ीमती चीज़ की तरह सम्भाल कर रख लिया है।

इस घटना को दो तीन महीने बीत चुके हैं।

इधर अख़बार में मैनें एक विज्ञापन पढ़ा है कि बंगाल में जो अकाल की स्थिति पैदा हो गई है उसके दृष्टिगत पंजाब सरकार ने जो कलकत्ता चावल भेजने की योजना बनाई है। उसके लिए व्यापारियों से आवेदन पत्र

मांगे गये हैं। मैं इस उधेड़ बुन में हूं कि बंगाल मे चावल भेजने का परमिट कैसे हासिल किया जाये। निश्चित रूप से मैं सोचता हूं कि अगर यह काम बन जाये तो यह व्यापार के लिए अच्छा अवसर है। मैनें आवेदन पत्र भरने का मन बना लिया है। दूसरे ही दिन मैं लाहौर के लिए रवाना हो रहा हूं। लाहौर सचिवालय में हमारे मामाजी श्री जगन्नाथ दुग्गल सुपरिण्टैडेण्ट के पद पर कार्यरत हैं। मैं उनके पास उनके आफिस चला आया हूं। मैनें उनसे अपने लाहौर आने का प्रयोजन बताया और उनसे पूछा कि हमें कलकत्ता चावल भेजने के लिए परमिट कैसे प्राप्त होंगे। संयोगवश मैनें उन्हें वह विज़िटिंग कार्ड भी दिखाया जो कुछ माह पूर्व हमारे घर आये अपरिचित अतिथि सरदार जी मुझे लाहौर आने का निमन्त्रण दे कर थमा आये थे।

यह विज़िटिंग कार्ड देख कर मामा जी बहुत ही हैरान हुए। उनके लिए हैरानी का यह भी एक कारण है कि यह विज़िटिंग कार्ड मेरे पास कैसे आया। मुझे मामा जी ने बताया कि यह सज्जन तो लाहौर सचिवालय के बड़े ही समर्थ अधिकारी हैं। सब कुछ उन्हीं के हाथ में है।

मामा जी ने टैलीफोन करके पता किया कि वह विशिष्ट अधिकारी अपने कार्यालय में उपस्थित हैं अथवा नहीं। यह पता चलते ही कि वह सम्बन्धित अधिकारी अपने कार्यालय में उपलब्ध हैं उन्होनें अपने किसी आदमी के साथ मुझे उनके पास भेज दिया।

मेरे लाहौर आने का आशय जान कर सरदार जी ने कई जगह टैलीफोन किये अन्तत: उन्होनें किसी मि. आनन्द से फोन के माध्यम से सम्बन्धित योजना की पूरी जानकारी प्राप्त की। मि. आनन्द सिविल सप्लाई विभाग की किसी मीटिंग में व्यस्त हैं। उन्होनें सरदार जी से कहा कि वह अपने आदमी को मेरे पास भेज दें। सरदार जी ने अपने सेवक के साथ मुझे मि. आनन्द के पास भेज दिया।

वहां पहुंच कर मुझे पता चला कि सिविल सप्लाई के दफ्तर में इसी विषय पर मीटिंग हो रही है। मि. आनन्द मुझसे बड़े ही सम्मान के साथ मिले। उन्होनें बताया कि शीघ्र ही इस विषय में कुछ फैसला होने वाला है। चाय के उपरान्त उन्होनें मुझे बताया है कि सभी व्यापारियों से आवेदन पत्र लिये जायेंगे और तत्पश्चात लॉटरी सिस्टम से परमिट दिये जायेंगे। मि. आनन्द ने मुझे सुझाव दिया है कि मैं अलग अलग फर्मों के नाम से आवेदन पत्र भर दूं ताकि किसी न किसी प्रकार से मेरे नाम का परमिट निकल आये। मैनें सात फर्मों के नाम से आवेदन पत्र भर दिये हैं।

निश्चित तिथि पर प्रार्थना पत्र जमा करवाये गये हैं।

जिस समय लॉटरी निकाली गई तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मैं इसे कुदरत का करिश्मा कहूं अथवा क्या कहूं कि मेरे सातों आवेदन-पत्र लॉटरी में निकल आये। ये परमिट मिलते ही मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं रही। यह मेरी ज़िन्दगी का एक बहुत ही महत्वपूर्ण मोड़ है। मेरी ज़िन्दगी की यह पहली बड़ी कामयाबी है। मैं घर वापिस लौट आया हूं। परी कथाओं जैसी मेरी बातों पर कोई विश्वास नहीं कर रहा। लेकिन यह सच है कि मैं इतना उत्साहित हूं कि जैसे कोई जंग जीत कर घर वापिस आया हूं। चावलों की फ़रोख्त की ज़िम्मेदारी भी मुझे सौंप दी गई है। इस सिलसिले में मेरे लिए कलकत्ता आना ज़रूरी था इसलिए मैं पूज्य पिता जी की इच्छानुसार कलकत्ता चला आया हूं।

कलकत्ता भी क्या खूब शहर है। महानगरों की संस्कृति की चमक दमक और रंग ढंग भी निराले होते हैं। रेलवे जंक्शन पर गाड़ियों का ताँता लगा हुआ है। भीड़ के रेले हैं। सड़कों पर बसें, कारें, मोटर गाड़ियां, टमटम, स्कूटर, तांगे, ऑटो रिक्शा एक दूसरे को कुचल कर जैसे आगे निकल जाना चाहते हैं। यहां के लोग बांग्ला भाषी हैं लेकिन यहां हिन्दी और अंग्रेज़ी बोलने वाले भी कुछ कम नहीं हैं। ट्रांसपोर्टेशन और कारोबार से जुड़े हुए पंजाबियों की संख्या भी बहुत है। समस्त प्रान्तों की एक मिश्रित संस्कृति यहां फल फूल रही है।

मुझमें जवानी का जोश भी है होश भी है और कुछ कर गुज़रने का जज़्बा भी। मुझमें उत्साह और उमंग ठाठें मार रहा है। चावल के परमिट मिलने की घटना से मेरा हौंसला आसमान की बुलन्दियां छू रहा है। कल्पनाओं का एक आसमान मेरे सामने है। मैं जहाँ तक चाहूं उड़ सकता हूं। मैं यहां अपने 'पर' तोल रहा हूं। मेरे सामने आकाश के मनमोहक रंगों का सम्मोहन है। मेरे पाँवों के नीचे ठोस धरती है। व्यापार की दृष्टि से इस उर्वरा मिट्टी को मैं अपने खून पसीने से सींच रहा हूं।

मेरे लिए कलकत्ता का आर्कषण इसलिए भी कुछ ज्यादा है कि यहाँ मेरी एक कज़िन सिस्टर फूलां ब्याही हुई है। फूलां के साथ मेरी खूब पटती है। फूलां के पति फाईव स्टार होटल रिट्ज़ के असिस्टैंट मैनेजर हैं।दोनों की नई नई शादी हुई है। लेकिन फूलां के पति का ज्यादा वक्त होटल में गुज़रता है और घर में फूलां के लिए दिन भर नितान्त अकेले वक्त गुज़ारना बहुत मुश्किल है। लेकिन मेरे यहां आ जाने से फूलां की खुशी का भी ठिकाना नहीं है। हम दोनों भाई-बहन की आदतें और शौक लगभग एक से हैं। इसलिए दोनों का समय अच्छा गुज़र रहा है।

मैं यहां व्यापार करने के लिए आया हूं। पग पग पर सफलतायें जैसे मेरे कदम चूमने के लिए आतुर हैं। मेरी सब गोटियां सीधी पड़ रही हैं। मैं बेहद खुश हूं। मेरे कन्धों पर सफलताओं के पंख उग आए हैं। मैं कल्पनाओं का आकाश छू सकता हूं। फूलां बहन मेरी मन: स्थिति को समझ सकती है। फूलां पर घर की कुछ विशेष ज़िम्मेदारियां नहीं हैं। यहां तक कि हमारा खाना भी होटल से आता है। किसी फाईव स्टार होटल का खाना घर बैठ कर खाने का लुत्फ ही कुछ दूसरा होता है। फिर असिस्टैंट मैनेजर के घर भेजे जाने वाले खाने के स्तर का तो आप सहज ही में अनुमान लगा सकते हैं। खाली समय में हमारे पास काम ही क्या था खाना-पीना-घूमना-फिरना सिनेमा हाल में पिक्चरें देखना, ताश खेलना।

ये दिन मेरे लिए किसी उत्सव के समान हैं। व्यापार में श्री लाभ से प्रसन्नता का वातावरण बना हुआ है। मैं ये दिन कभी नहीं भूल पाऊंगा। धीरे-धीरे बंगाल में परिस्थितियां सामान्य हो रही हैं। सख्त मेहनत के बाद श्रम का प्रसाद प्राप्त हो रहा है। मैं ईश्वर कृपा से अभिभूत हूं। कलकत्ता में मेरी कार्य-अवधि समाप्त हो रही है। मैं घर लौटने के लिए उत्सुक हूं।इस बार कितनी खुशियों की सौगातें लेकर मैं अपने घर वापिस लौट रहा हूं। सुख वैभव और ऐश्वर्य का एक संसार अपनी बांहों में समेट कर मैं फूले नहीं समा रहा। घर के सभी सदस्यों के लिए उनकी रुचि अनुसार मैनें कुछ उपहार खरीद लिये हैं। पूज्य माता जी के लिए एक सिल्क की साड़ी मैनें खरीदी है। ज़िन्दगी में पहली बार कोई उपहार मैं पूज्य माता जी को समर्पित कर रहा हूं। अत्यन्त श्रद्धा और समर्पण की पवित्र भावना के साथ मैं पूज्य माता जी को यह उपहार दे रहा हूं। मेरा पुरुषार्थ फलीभूत हुआ है। ईश्वर की इस महती कृपा से मैं प्रसन्नचित घर लौट रहा हूं।

लगभग दो महीने के प्रवास के उपरान्त मैं घर वापिस लौटा हूं। घर में जैसे खुशियां लौट आई हों। पूज्य पिता जी मेरे काम से अत्याधिक प्रसन्न हैं। यहाँ उन्होनें सरसों के तेल का जो कारोबार शुरू किया था। सरसों के उस तेल का उत्पादन अब गोपाल ब्राण्ड के नाम से हो रहा है। गोपाल ब्राण्ड सरसों के तेल की मांग को देखते हुए वर्ष 1945 में लाहौर में ब्रान्च आफिस खोला गया है। मुझे गोपाल ब्राण्ड सरसों तेल की बिक्री के लिए लाहौर ब्रान्च आफिस में तैनात किया गया है। यहां मैं खूब मेहनत कर रहा हूं। दिन ब दिन काम बहुत तेज़ी के साथ बढ़ता चला जा रहा है। पूज्य पिता जी मेरे काम से बहुत खुश हैं। गोपाल ब्राण्ड सरसों आयल अब एक प्रतिष्ठित नाम है। लाहौर के बड़े बड़े स्टोरज़ पर गोपाल ब्राण्ड सरसों का पैक्ड (सील बन्द) तेल बिक रहा है। अच्छी मांग है इस तेल की।

लाहौर में यह काम किस प्रकार बढ़ा-यह एक लम्बी कहानी है। दरअसल लाहौर में एक कमिशन एजेण्ट के माध्यम से हमने तेल सरसों की बिक्री का काम शुरूकिया था। इस सिलसिले में लाहौर मेरा जाना आना बराबर बना रहता था। इस शहर का जादुई आर्कषण किसी को भी अपनी ओर खींच लेने में समर्थ है। यहां हमारे कई रिश्तेदार हैं। निजी दोस्तों और अपने सम्बन्धियों से ही नहीं कारोबारी लोगों के साथ भी मैं ऐसे ही मधुर सम्बन्ध निर्मित कर लेता हूं। अगरचे कारोबारी लोगों के सम्बन्ध अक्सर कारोबारी होते हैं लेकिन मैं इन्हें कारोबार तक ही सीमित नहीं रखता। मैं प्यार और मुहब्बत का ऐसा रिश्ता कायम कर लेता हूं कि धीरे-धीरे व्यापारिक रिश्तों में भी ऊष्मा का संचार होने लगता है और सम्बन्धों की घनिष्टता हमारे निजी और व्यापारिक हितों के लिए सुरक्षा कवच बन जाती है। व्यापार में व्यवहार की शुद्धता और निष्ठा ही मेरी सफलता का मूल मन्त्र है।

लाहौर की ज़बान, तहज़ीब और खान पान का तो कोई जवाब नहीं। मैं यहां मज़े में हूं। पंजाबीयत की यह मिठास मेरे व्यक्तित्व में घुल मिल गई है।

लाहौर का यह आफिस मेरी देख रेख में चल रहा है। आफिस में मेरे पास एक अकाउंटैंट है, दूसरा सेल्ज़मैन और तीसरा एक सफाई कर्मचारी। हमारे पास एक रेहड़ी है, जिस पर तेल सरसों की सप्लाई होती है। बस इतने से साधन-संसाधन मेरे पास हैं। लेकिन गोपाल ब्राण्ड की विश्वसनीयता को स्थापित करने के लिए मैं इन साधनों का भरपूर सद्उपयोग कर रहा हूं।

अगरचे कारोबारी लोगों के सम्बन्ध अक्सर कारोबारी होते हैं लेकिन मैं इन्हें कारोबार तक ही सीमित नहीं रखता। मैं प्यार और मुहब्बत का ऐसा रिश्ता कायम कर लेता हूं कि धीरे-धीरे व्यापारिक रिश्तों में भी ऊष्मा का संचार होने लगता है।

मुझे नहीं पता कि मैं अपने भाई बहनों के साथ रस्सी कूदते, अन्तक्षारी खेलते, गेंद-गीटों से मन बहलाते कब जवानी की दहलीज़ पर पहुंच गया हूं। मैं तो ढोलक की थाप पर गीत गा गा कर दूसरों की खुशियों में चार चांद लगाता, घर बाहर और सर्वत्र सबका स्नेह पात्र बना रहा। मैं लड़कों और लड़कियों में समान रूप से लोकप्रिय हूं। हमारे घर में लड़कों और लड़कियों में भेद भाव की परम्परा नहीं रही। वैसे भी गुरूकुल की पृष्ठभूमि ने मेरे चरित्र को ठोस आधार दिया है। इसलिए सबके साथ मेरा व्यवहार मित्रवत रहा है-सामान्य और सहज। वे लड़कियां कि जिनके साथ बचपन में रस्सी कूदते मैं बड़ा हुआ हूं, वे अपनी ससुराल में अपने सुखी गृहस्थ जीवन की व्यस्तताओं में कभी न कभी तो मुझे ज़रूर याद करती होंगीं। मेरे लिए भी शायद अब उसी बन्धन में बंधने का वक्त आ गया है। मेरी शादी के सिलसिले में भी घर में बातें होने लगी हैं।

कारोबार की इन व्यस्तताओं में, मेरे पास इतना समय कहां कि मैं यह सब सोच पाऊं। मैं तो उस इन्सान की तरह दौड़ता रहा हूं कि जिसके पांवों में जलते हुए अंगारे हों और सफलताओं का क्षितिज जिसके लिए बाहें फैलाये खड़ा हो। ऐसे में विवशताओं की सलीब से आहत हुए कन्धों की चिंता कौन करे। मेरे लिए ज़िन्दगी वजूद की जंग है, और जंग में रोमानियत नहीं हकीकत से दो चार होना होता है।

बहरहाल हमारे घर में बड़े भाई गोपाल की शादी के बाद अब घूम फिर कर सुई मुझ पर आ कर अटक जाती है। ऐसे में मुझे ज़ंजीर पहनाने के लिए हमारे दो बुजुर्गों में होड़ लगी हुई है। मुझ आज़ाद परिन्दे के लिए सैय्याद तो और भी होंगे। लेकिन आसमान पर उड़ते हुए परिन्दे को कैद करने का अवसर सबके मुकद्दर में कहाँ ? बस कोई एक होगा कि जिसकी रेशमी जंज़ीर के सामने मेरी एक नहीं चलेगी। सबके साथ ऐसा ही तो होता है। इन दिनों श्री मेहर चन्द (मैः मेहर चन्द एण्ड सन्ज़) के सुपुत्र श्री राम नाथ एक रिश्ते के लिए पूज्य माता जी और पिता जी को मनाने की जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं। कोई भल्ला परिवार है। उनकी लड़की के रिश्ते के लिए वह प्रतिदिन आग्रह करते हैं।अक्सर वह मेरे साथ भी इसकी चर्चा करते हैं। लेकिन हमारा युग ऐसा नहीं कि लड़के और लड़कियां बड़ों के आगे कभी अपनी राय का इज़हार भी कर सकें। अपनी बातचीत में श्री राम नाथ लड़की वालों के धन-वैभव का उल्लेख करना कभी नहीं भूलते।

इधर डा. प्रेमनाथ जो कि सिविल अस्पताल में चिकित्सिक हैं और जिनका कि हमारे परिवार के साथ बहुत गहरा ताल्लुक है, वह गुजराँवाला से किसी रिश्ते के लिए पूज्य माता जी को मनाने के लिए हर सम्भव कोशिश कर रहें हैं।लड़की के पिता सुपरिण्टैण्डैंट जेल के पद से सेवा निवृत हुए हैं। हमारे यहां सुपरिण्टैण्डैंट जेल के पद को लेकर कई आशंकायें हैं जैसे कि यह पद शरीफ आदमियों के लिए उपयुक्त नहीं हो। फिर भी डा. प्रेमनाथ के व्यक्तित्व में ही शायद कोई ऐसा जादू रहा होगा कि माता जी लड़की देखने के लिए मान गईं हैं। हालांकि मानसिक रूप से वह कतई इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं। बड़े भाई गोपाल जी और पूज्य माता जी मेरे लिए लड़की देखने गुजराँवाला जा रहे हैं।

मैं तो उस इन्सान की तरह दौड़ता रहा हूं कि जिसके पांवों में जलते हुए अंगारे हों और सफलताओं का क्षितिज जिसके लिए बाहें फैलाये खड़ा हो। ऐसे में विवशताओं की सलीब से आहत हुए कन्धों की चिंता कौन करे।

मैं तो इस बीच लखनऊ में हूं। भाई श्री कृष्ण चन्द पुरी हिन्दुस्तान कमर्शियल बैंक में मैनेजिंग डॉयरैक्टर के पद पर हैं। मैं उन्हीं के यहां ठहरता हूं। भाभी जी मुझसे विशेष स्नेह रखती हैं। मैं बच्चों में हिल मिल जाता हूं। मुझे यहां कभी ये अहसास नहीं हुआ कि मैं अपने घर से बाहर हूं। यहां काम

के वक्त काम और शेष समय घर में आनन्द पूर्वक बीतता है। बिल्कुल हमारे अपने घर जैसा ही वातावरण है। मेरा जीवन दुख सुख की जिन तरंगों पर तैरता है मैं उसे सहज ही स्वीकार कर लेता हूं। लेकिन पुरुषार्थ मेरे लिए गुरूमन्त्र की तरह है जिसको कि मैं कभी भी दृष्टि विगत नहीं करता। जीवन की इस गतिमयता में जब कभी भी कोई अवरोध आया मेरा पुरुषार्थ ही मेरा सम्बल बना।

गुजराँवाला में लड़की देखने के बाद पूज्य माता जी और भाई गोपाल अजीब दुविधा में फंस गये। न उनसे हाँ कहते बन पड़ा और न वे साफ इन्कार कर सके। दोनों घर लौट आये हैं। पूज्य माता जी और पिता जी असमंजस में हैं। यद्यपि लड़की खूबसूरत है, शालीन है, सम्भ्रान्त परिवार से है लेकिन यह सुपरिण्टैण्डैंट जेल... बहरहाल इस बीच कशमकश चलती रही। श्री राम नाथ भल्ला परिवार की ओर से अपने आग्रह को बार बार दोहराते रहे। और डा. प्रेमनाथ गुजराँवाला से कपूर परिवार की ओर से अनुनय विनय करते रहे।

इधर प्रतिवर्ष की तरह घर के सभी सदस्यों का काशमीर जाने का कार्यक्रम बना है। डा० प्रेमनाथ का विचार है कि हम लड़की वालों को एक बार पुन: मिल लें। संयोगवश पूज्य माता जी, पिता जी और घर के सभी सदस्य एक साथ जा रहे हैं। सभी एक बार मिल लेंगे तो निर्णय लेने में सुविधा रहेगी। इस बार मैं काशमीर नहीं जा रहा। भाई गोपाल और मैं- हम दोनों में से कोई एक ही जा सकता है। जिस दफा भाई गोपाल काशमीर जाते हैं-मैं यहां कारोबार सम्भालता हूं। और अगर मुझे जाना होता है तो भाई गोपाल जी यहां का काम देखते हैं। हम दोनों कभी एक साथ गये हों ऐसा अवसर सम्भवत: कभी भी हमें उपलब्ध नहीं हुआ।

मोगा से जम्मू काशमीर जाते हुए रास्ते में लाहौर का आर्कषण किसी को भी अपनी ओर खींचने का सामर्थ्य रखता है। परिवार के सभी सदस्यों का हमारे जीजा जी श्री राधा कृष्ण के यहां रुकने का कार्यक्रम है और डा. प्रेमनाथ जी चाहते हैं कि यहां एक बार पुन: हम लड़की और लड़की के परिवार वालों से मिल कर अपने फैसले पर पुनर्विचार करें। मोगा से चल कर गाड़ी लाहौर पहुंचेगी और लाहौर से जम्मू। फिर जम्मू से बस में सवार हो कर सभी लोग काशमीर जायेंगे। लेकिन मेरी ज़िन्दगी की गाड़ी का कुछ पता नहीं। डा. प्रेमनाथ की तर्क संगत बात को पूज्य माता जी और पिता जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

लाहौर में लड़की के माता पिता और दो एक आत्मीय सम्बन्धी हमारे पूज्य माता जी, पूज्य पिता जी और घर के सभी सदस्यों से मिलने के लिए आये हुए हैं। सामान्य बातचीत में पता नहीं वह

कौन सी बात है कि जिससे पूज्य पिता जी इस परिवार से अत्याधिक प्रभावित हुए हैं। तुरन्त उन्होनें हां कर दी।बुजुर्गों की हां का भी कुछ अर्थ होता है। न कुछ दिया न कुछ लिया। बस एक हां को गांठ बांधकर गुजराँवाला के श्री दयाल सिंह कपूर अत्यन्त प्रसन्न और सन्तुष्ट हो कर विदा हुए। काशमीर पहुंच कर पूज्य माता जी ने मुझे यह खबर दी कि तेरे पूज्य पिता जी ने तेरे रिश्ते के लिए हां कर दी है।

बस इस एक हां को न में तबदील करने के लिए श्री राम नाथ पुन: एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं।उन्होनें भल्ला परिवार की लड़की के रिश्ते के लिए पुन: अपनी सरगर्मियों को तेज़ कर दिया है। भल्ला परिवार के धन ऐश्वर्य की चकाचौंध से पूज्य पिता जी को लुभाने की उनकी तमाम कोशिशें बेकार साबित हो रही हैं। पूज्य पिता जी का एक ही उत्तर है कि-उन्होनें इससे पूर्व कहीं हां कर दी है। परन्तु श्री राम नाथ जी भी इतनी आसानी से हार मानने वालों में से नहीं हैं। उनका तर्क है कि जब तक हमने कोई शगुन नहीं किया। उस स्थिति में अपना निर्णय बदलने के लिए हम स्वतन्त्र हैं। इससे हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा में कोई अन्तर नहीं आने वाला। कोई भी इस पर एतराज़ नहीं कर सकता। लेकिन पिता जी टस से मस नहीं हो रहे। मैं लखनऊ से लौट कर वापिस घर आया हूं तो उन्होनें मुझ पर भी अपना ज़ोर डालना शुरू कर दिया है। उनका कहना है कि इतने समृद्ध परिवार का रिश्ता ठुकराना कोई बुद्धिमता की बात नहीं है। मैनें उन्हें अत्यन्त विनम्रता के साथ बताया कि पूज्य पिता जी अन्यत्र कहीं हाँ कर चुके हैं। इस लिए अब यह सम्भव नहीं। लेकिन राम नाथ जी यह सब मानने के लिए तैयार नहीं। अन्तत: पूज्य पिता जी को कहना पड़ा कि लाला जी मैनें मात्र हां नहीं की, ज़बान की है ओर हमारे यहां ज़बान करने का कुछ मतलब होता है इतनी साफ़गोई के बावजूद पिता जी कोई परेशानी मोल लेना नहीं चाहते।

इन अनचाही परिस्थितियों से बचने के लिए पूज्य पिता जी ने डा. प्रेम नाथ जी के सुझाव पर शगुन लेने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। पंजाब में विवाह शादी की रस्मों में शगुन यानि मंगना की अहमीयत को तो कौन

सामान्य दिनों में भी हमारे घर में यह प्यार की गंगा सदैव प्रवाहित रहती है। यहां तो प्रतिदिन सायंकाल संध्या-वन्दन हवन, भजन और संगीत की स्वर लहरियां गूंजती रहती हैं।

नहीं जानता। इस मांगलिक अवसर के सन्दर्भ में मुझे घर से बुलावा आया है। मैं निर्धारित तिथि से दो एक दिन पूर्व ही घर वापिस लौटा हूं। अन्दर से ढोलकी की थाप और विवाह शादी के अवसर पर गाये जाने वाले पारम्परिक गीतों के माधुर्य ने मेरा स्वागत किया है। पूज्य माता जी अपनी सहेलियों और मेरी बहनों के संग मिल कर घोड़ियां गा रही हैं। ये मंगल गान मेरे लिए वन्दन वार बन गये हैं। मैं भी इस जश्न में शामिल हो गया हूं। हमारे घर का कोना कोना जैसे खुशियों से चहक रहा हो। गीतों की माला को हममें से हर कोई अन्तिम छोर से पकड़ कर इस महफिल को सजाने संवारने में मशगूल है। कितने प्यारे प्यारे गीत ! हंसी मज़ाक के फव्वारे। सचमुच घर में जैसे खुशियों का जमघट लगा हुआ है।

सामान्य दिनों में भी हमारे घर में यह प्यार की गंगा सदैव प्रवाहित रहती है। यहां तो प्रतिदिन सांयकाल संध्या-वन्दन हवन, भजन और संगीत की स्वर लहरियां गूंजती रहती हैं। मेरी प्यारी बहनें स्वर्ण, सुदेश, पुष्पा, प्रेम अथवा सत्या सब एक ही रंग में रंगे हुए हैं। यह रंग वही लोग जान सकते हैं जो कि पूज्य माता जी के स्वभाव से परिचित हैं। इन्ही पवित्र भावनाओं की नाव पर सवार हो कर हमने इस सांसारिक वैतरणी को पार करना है। पूज्य पिता जी अथवा भाई हरि हारमोनियम बजाते हैं तो सुर संगम की मंदाकिनी बहने लगती है। माता जी भजन गातीं हैं तो आराधना के फूलों की सुगन्ध से जैसे सारा घर-आंगन महक उठता है।

आज शगुन का दिन है। प्रात:काल से ही घर के सभी सदस्य इस अवसर के लिए तैयारियों में अत्याधिक व्यस्त हैं। कब दिन उगा कब शाम हुई कुछ पता नहीं चला। यह शाम मेरी ज़िन्दगी की एक यादगार शाम है। सान्ध्यकालीन हवन-यज्ञोपरांत शगुन की कार्यवाही शुरू हो रही है। आमन्त्रित अतिथियों के आगमन से हमारे घर का प्रांगण महक रहा है। लड़की वालों की ओर से रिश्तेदार मित्र और सम्बन्धी आसन ग्रहण कर चुके हैं। शगुन का थाल हमारे दरम्यिान रखा है। पण्डित जी के मन्त्रोच्चारण के साथ मुझे तिलक लगाया गया है। सांकेतिक रूप से मेवा मिष्ठान्न और छुआरे से मेरा अभिनन्दन किया गया है। मेरी झोली में शगुन डालने वालों में जैसे होड़ सी लग गई है।परस्पर बधाइयों का आदान प्रदान हो रहा है। मैं अपनी बहनों के चेहरों पर खुशियों के झिलमिलाते हुए नूर को देख कर मन ही मन कितना आह्लादित हुआ हूं इसका वर्णन करना मेरे बस की बात नहीं। पूज्य माता जी की सौम्यता ओर प्रसन्नता को कोई कैसे व्यक्त कर सकता है।

सभी अतिथि चाय-पानी, और एक शानदार पार्टी का आनन्द उठाने में व्यस्त हो गये हैं। मैं इन सब औपचारिकताओं से मुक्त हुआ हूं तो सर्वप्रथम पूज्य माता जी और पूज्य पिता जी के चरण छू कर उनसे आशीर्वाद ले रहा हूं। बधाई-शगुन-उपहार और आशीर्वाद यह सब अपनी झोली में समेट कर मैं धन्य हो गया हूं।

घर में दो-तीन दिन तक ढोलकी बजती रही। महिला संगीत की महफिलें सजती रहीं। लेकिन मुझे तो ज़िन्दगी के इस सफर पर अभी एक लम्बा रास्ता तय करना है। अन्दर से मैं ज़िन्दगी की तल्ख हकीकतों से भी परिचित हूं। परन्तु मेरे लिए ज़िन्दगी जीने का यही एक ढंग तरीका है कि जो

काम करो पूरी निष्ठा से करो। वह चाहे व्यापार हो, व्यवहार हो अथवा मांगलिक उत्सव का आयोजन हो। मैं हर काम तन्मय हो कर करता हूं। वर्तमान में जीना और भविष्य के सपनों को साकार करना मेरे लिए ये दोनों काम समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए मैं अपने दुखों से निपटने और खुशियों को जीने का ढंग सलीका जानता हूं। मुझ पर ईश्वर की महती कृपा है।

मैं लखनऊ वापिस चला आया हूं तो पुन: अपने काम काज में व्यस्त हो गया हूं। फिर वही व्यस्ततायें फिर वही भाभी जी और बच्चों की वह प्यारी दुनियां। लेकिन यहां सबको मेरे विवाह की तैयारियों के इलावा कुछ सूझ ही नहीं रहा। भाई कृष्ण चन्द जी पुरी, भाभी जी और बच्चे-इन सबकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं। निश्चय ही हमारे घर में भी कुछ ऐसा ही माहौल होगा। मैनें यहाँ अपने विवाह के अवसर पर दूल्हे की शानो-शौकत के अनुरूप एक शानदार सूट सिलवाया है। मैनें कहा न कि मैं जो काम भी करता हूं पूरे मन से करता हूं। फिर उसमें कोई कोर कसर नहीं छोड़ता। शादी के लिए सिल कर तैयार हुए मेरे कपड़ों को बच्चे छू कर देखते हैं तो उनकी आँखों में एक अजीब चमक को देख कर मैं मन ही मन खुश हो लेता हूं।

मैं हर काम तन्मय हो कर करता हूं। वर्तमान में जीना और भविष्य के सपनों को साकार करना मेरे लिए ये दोनों काम समान रूप से महत्त्वपूर्ण है

मैं अपने विवाह की निश्चित तिथि से दो एक दिन पूर्व ही घर वापिस लौटा हूं। निश्चित तिथि (11 दिसम्बर 1944 !) इस वक्त मेरी उम्र लगभग 24-25 के बीच रही होगी।(जन्म 16 मार्च 1920)... एक खूबसूरत सा नाम राजनन्दिनी ! पिता का नाम श्री दयाल सिंह कपूर। तीन भाई श्री दिलबाग सिंह कपूर, श्री बलदेव सिंह कपूर, श्री बृजमोहन कपूर। तीनों ही दिल्ली में उच्च सरकारी पदों पर आसीन। दो बहनें : श्रीमती कृष्णा चोपड़ा, श्रीमती प्रेम सरीन।

इस परिवार में राजनन्दिनी का जन्म 2 फरवरी 1926 को करनाल में हुआ। जहाँ कि उनके पिता श्री दयाल सिंह कपूर जेल सुपरिण्टैण्डैण्ट के पद

पर कार्यरत थे। श्री कपूर सेवा मुक्त होने के बाद गुजराँवाला में अपनी रिटायर्ड लाइफ बिता रहे हैं। इससे ज्यादा की तो मैं मात्र कल्पना ही कर सकता हूं। मेरा सामान्य ज्ञान केवल इतना ही है। बस केवल उतना–जितना की मुझे बताना ज़रूरी समझा गया है।

पूज्य माता जी और पिता जी का यह निर्णय है कि बारात में केवल रिश्तेदार और सगे सम्बन्धी ही सम्मिलित होंगे। यह उनका अन्तिम फैसला है। हममें से कोई भी इस फैंसले से इधर उधर होने की हिम्मत नहीं कर सकता। परन्तु कुछ भी हो... दो शख्सियतों की अवहेलना करना तो कतई मुमकिन नहीं। एक तो पण्डित जी (पुरोहित) जिन्होनें कि विवाह संस्कार सम्पन्न करवाना है और दूसरे मास्टर हरबंस लाल जी भूषण ! मास्टर जी ने हमारे घर के सभी बच्चों को पढ़ाया है और इस बीच वह हमारे घर के सदस्य ही बन गये हैं। उन्होनें बड़े ही शौक से मेरा सेहरा लिखा है। सेहरा छप चुका है। यह सेहरा मास्टर जी गुजराँवाला में बा–आवाज़े–बुलन्द पढ़ेंगे। मास्टर जी का सेहरा लिखने और पढ़ने का अपना एक ख़ास अन्दाज़ है।

बारात रवाना होने का समय हो चुका है। एक मोटर गाड़ी यहां से चल कर लाहौर पहुंचेगी। लाहौर में ही दोपहर के खाने का इन्तज़ाम है। घर पर नाश्ते इत्यादि की व्यवस्था है। नए रंग बिरंगे परिधान में सज कर तैयार हुई बारात को लेकर बस (मोटर गाड़ी) लाहौर की तरफ चल दी है। हंसी–मज़ाक और ठहाके ! संसार की तमाम खुशियां जैसे सिमट कर इस बस में सवार हो गई हों। शाम होते यह कारवां गुजराँवाला पहुंच गया है।

गुजराँवाला के कितने ही गणमान्य लोग बारात के स्वागत में और सेवा में तत्पर मिले। एक सरकारी अधिकारी फिर वह चाहे सेवा मुक्त अधिकारी ही क्यों न हो उनके यहां की शान कुछ निराली ही होती है। बारात में आये हुए सभी सम्बन्धी इस सेवा सत्कार से अभिभूत हैं।

प्रासंगिक रूप से मैं यह बताना चाहूंगा कि मेरे विवाह संस्कार का समय रात 12:30 बजे तय हुआ है। सर्दियों की इस ठिठुरती हुई रात में हमें विवाह संस्कार के लिए बुलावा आया है। मैं और मेरे निकटतम सम्बन्धी बारात घर से वधु के घर की ओर चल दिये हैं। ये बहुत भारी साहे के दिन हैं। कदम कदम पर गली गली में विवाह शादियों की चकाचौंध है। आज की रात मेरी ज़िन्दगी की एक ऐतिहासिक रात है। यह रात मेरी ज़िन्दगी की दशा और दिशा दोनों बदल देगी। इसी उधेड़ बुन में हम लड़की के घर में सजे विवाह मण्डप की ओर अग्रसर हुए ही थे कि लड़की वालों के यहां हर्षोल्लास के

साथ यह खबर फैल गई कि लड़के वाले आ गये हैं। हमारे स्वागत अभिवादन और अभिनन्दन में महिलायें मुख्य द्वार पर आ कर गीत गाने लगीं। तुरन्त किसी ने कहा कि माफ कीजीए आप को अभी आगे थोड़ी दूर पर किसी दूसरे घर जाना है। इस मुग़ालते के लिए हमने उनसे माफी मांगी। लेकिन साथ ही साथ हममें से कोई भी अपनी हंसी को रोक नहीं पाया। इस अविस्मरणिय घटना को मैं ज़िन्दगी भर कभी नहीं भुला पाऊंगा।

इस रात एक सिख परिवार में पूर्णत वैदिक परम्परा के साथ मेरा विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। राजनन्दिनी के पिता भले ही जेल सुपरिण्टैण्डैण्ट के पद से सेवा निवृत हुए हैं! लेकिन उन्हें पद का अहं छू तक नहीं गया वह बड़े ही भले इन्सान हैं। पूर्णत: धार्मिक और स्वभाव से अत्यन्त कोमल। उनके एक दामाद श्री चोपड़ा धार्मिक और सुसंस्कारित व्यक्ति हैं दूसरे श्री शम्मी सरीन वायु सेना में स्कवार्डन लीडर हैं। तीसरा मैं हूं-एक व्यापारी और कारोबारी इन्सान।

प्रात:काल तारों की छांव में कन्यादान उपरान्त मैनें जैसे चैन की सांस ली। सेहरा उतार कर कुछ सामान्य हुआ हूं। विदायगी का समय करीब आ गया है। बहुत ही बोझिल और भावुक क्षण। इस आर्द्र माहौल में हम जब एक दूसरे से विदा हुए तो वहां जैसे आँसुओं का सैलाब आ गया। मेरे लिए और राजनन्दिनी के लिए प्रथम श्रेणी में आरक्षण करवाया गया है। इस रेलगाड़ी के माध्यम से ही हम पति-पत्नी वापिस अपने घर आ रहे हैं। यह एक लम्बी दास्तान है। इसी एक दास्तान को मैं कभी इस तरफ से खोल कर पढ़ता हूं, कभी उस तरफ से। ज़िन्दगी एक ऐसी पहेली है कि जिसका समाधान ढूंढते-ढूंढते आदमी इस पहेली का एक हिस्सा बन कर कहीं खो जाता है।

वर्ष 1944-46 के दरम्यिान मेरा एक पाँव अगर मोगा में होता तो दूसरा दिल्ली लखनऊ बम्बई लाहौर ! न जाने कहाँ कहाँ। भाई गोपाल जी केन्द्रीय कार्यालय का कार्य भार संभालते हैं और मैं एक सैयारे की तरह दूर- दराज़ के क्षेत्रों में व्यापार की सम्भवानाएं तलाशता धनोपर्जन के लिए सख्त मेहनत कर रहा हूं। इधर हमें श्रीलंका सरकार को चने सप्लाई करने का अवसर प्राप्त हुआ है। 'भारत बैंक' के शाखा प्रबन्धक बहुत छोटी उम्र के हैं लेकिन ज़हीन हैं और सहृदय भी। डी. डी. बिल परचेज़ करके उन्होनें गोडाऊन से चने रिलीज़ करना स्वीकार कर लिया बशर्ते कि हुण्डी का भुगतान सुनिश्चित हो। मैनें श्री लंका सरकार के ऐजण्ट से सम्पर्क स्थापित करके तुरन्त इसकी व्यवस्था करवा दी। इससे मेरी विश्वसनीयता और सम्मान में तो श्री वृद्धि हुई ही, आर्थिक लाभ भी हुआ।

विवाहोपरान्त मेरी व्यापारिक यात्राओं में मेरी सहधर्मिणी का सहयोग भी बराबर बना रहता है। साधारणत: वह मेरे साथ रहती हैं। मेरी ज़रूरतों का ध्यान रखती हैं। इससे मेरी बहुत सी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। मैं काम काज से वापिस लौटता हूं तो अपनी उपलब्धियां और नाकामियां दोनों भूल जाता हूं। तब मैं बहुत ही घरेलू किस्म का इन्सान बन जाता हूं। हम पति पत्नी परस्पर मित्रवत व्यवहार करते हैं। हम दोनों को ताश खेलने का बहुत शौक है। ताश की बाज़ी कभी खत्म नहीं होती। आखिर तक हम यह तय नहीं कर पाते कि हममें से कौन जीता कौन हारा। वह अक्सर मुझे शादी के अवसर पर हुई उस रोचक घटना की याद दिलाती है कि जिस समय विवाह संस्कार के लिए आधी रात मैं किसी और ही दुल्हन के दरवाज़े पर पहुंच गया था। मुझसे मज़ाक करने के उद्देश्य से अक्सर वह कहती है कि वह लड़की मुझसे ज्यादा खूबसूरत थी आप तो वहीं शादी कर लेते और फिर हम हंसते-हंसते लोट पोट हो जाते हैं।

जब कभी भी राजनन्दिनी का मायके जाने के लिए मन होता है तो वह खुशी के साथ जा सकती हैं क्योंकि सच्ची बात तो यह है कि मेरे पाँवों में तो चक्कर है। मैं आज यहां तो कल वहां। मेरा क्या भरोसा ?

ज़िन्दगी एक ऐसी
पहेली है कि
जिसका समाधान
ढूंढते-ढूंढते
आदमी इस पहेली
का एक हिस्सा बन
कर कहीं
खो जाता है।

व्यवसायिक व्यस्तताओं के बावजूद भी हम लोग ज़िन्दगी को भरपूर तरीके के साथ जीते हैं। यहां हमने 'फिफ्टीन कॅप्पल क्लब' निर्मित की है। इस क्लब में श्रीमती एवं श्री डा. देव राज अग्रवाल। श्रीमती एवं श्री गुरमुख सिंह ढिल्लों–श्रीमती एवं श्री सतवान ढिल्लों–सुपरिण्टैण्डैण्ट पुलिस श्री बराड़ का परिवार–एस.डी.एम. मोगा–तीन मैजिस्ट्रेट–डी.एस.पी.–एस.बी.आई. मोगा के एजण्ट–हास्पिटल इन्चार्ज, कुल मिलाकर पन्द्रह हैं। शहर की आबादी कोई 30–35 हज़ार से ज्यादा नहीं है। राज के पिता चूंकि Supdt. Jail थे। इस लिए प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिलने जुलने का तरीका वह बाखूबी जानती है। इसलिए हमारे इस छोटे से संगठन को वही संचालित करती है।

इस क्लब की पाक्षिक सभायें बारी बारी क्रमानुसार सभी सदस्यों के घरों में रात्रि भोज के अवसर पर होती हैं। खूब हंसी मज़ाक और ताश की बाज़ियाँ जमती हैं। ताश में पैसे नहीं लगाये जाते। प्रत्येक घर में भोजन की बड़ी अच्छी व्यवस्था होती है। लेकिन मस्ती में हम खाने में जो चीज़ ज्यादा स्वादिष्ट होती, उसे पहले खत्म करने में जुट जाते। बेशक इससे मेज़बान परिवार फ़िकरमन्द हो जाता लेकिन हम लोग तो यह सब जान बूझ कर किया करते हैं। एक बार हमारे साथ भी ऐसा ही हुआ। दहीं और पकौड़ी के रायते का मज़ा लेते हुए सदस्यों ने हमारी बस करवा देने का मन बना लिया। लेकिन राज ने मेरे कान में आकर बता दिया कि आप चिन्ता न करें आज गलती से रायता दुगना बना हुआ है। फिर किसी ने उठ कर रायते में एक मुटठी मिर्ची मिला दी। हंसी मज़ाक और मस्ती की ये महफिलें हमें खुशियों से सरोबार कर देतीं हैं। होटलों ओर क्लबों में जाने का शौक न हमें पहले कभी था न अब है।

हमें तो पूज्य माता जी ने जो संस्कार दिये और जिस प्रकार दूध दही मक्खन और पनीर खिला कर हमें बड़ा किया, वही आदतें आज भी हममें विद्यमान हैं। खाने पीने के मामले में बचपन से ही पूज्य माता जी मुझ पर कुछ ज्यादा ही ध्यान देती हैं। मेरे भाई बहनों में से जब कभी भी कोई इस पर आपत्ति करता है तो पूज्य माताजी का एक ही उत्तर होता है–यह तो तुम्हारे घर की बेड़ी का मल्लाह है।– पूज्य माता जी ने इस किश्ती को जिन झंझावातों में अपने अद्वितीय धीरज के साथ सम्भाले रखा उसकी भी कोई दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है। पूज्य पिता जी तो बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। लेकिन पूज्य माताजी का अदम्य साहस देखते ही बनता है। कितनी ही विकट समस्या क्यों न हो, अगर कोई बाहर का आदमी अचानक आ जाता है तो वह अन्दाज़ा नहीं लगा सकता कि पूज्य माता जी किसी परेशानी में हैं। आओ–बिठाओ–खिलाओ–पिलाओ और एक मुस्कान अतिथि के स्वागत में हमेशा तैयार मिलती।

'किश्ती के मल्लाह' को अपने भाईयों और बहनों से भरपूर प्यार मिला है। मेरे जन्म दिन के अवसर पर बहन सुदेश और स्वर्ण में यह मुकाबला होता कि उन दोनों में से सबसे पहले ग्रिटींग्ज़ कौन देगा। इस उद्देश्य से वह मेरे दरवाज़े की ओट में छिप कर खड़ी हो जातीं और जब मैं अपने बिस्तर से उठ कर बाहर आता तो फूल लेकर दोनों मुझे घेर लेतीं।फिर– बधाई, प्यार और मनुहार ! यही तो है जीवन !

'फ़िफ्टीन कॅपल क्लब' में हमने इस संस्कृति को अपनी धरोहर मान कर एक ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया है कि यह धरती हमें स्वर्ग समान लगती है।

इस क्लब के सदस्य बलदेव (मैजिस्ट्रेट) को ईश्वर ने सुमधुर कण्ठ दिया है। वह पंजाबी गीत गाते तो सचमुच थोड़ी देर के लिए समय जैसे ठहर जाता है। मैजिस्ट्रेट महोदय की पत्नि जब भजन गातीं तो उनकी स्वरलहरियों पर समय जैसे स्माधिस्थ हो जाता। 'फ़िफ्टीन कॅपल क्लब' के सभी सदस्य कभी कभार पिकनिक मनाने के लिए हरि के पत्तन पर जाते हैं। मालवा बस पर सवार हो कर यह काफिला जब सतलुज के किनारे पहुंचता है तो जैसे दरख्तों के पत्ते हवायें और परिन्दों की आवाज़ें तथा लहरों की रुनझुन एक आर्केस्ट्रा की तरह वहाँ हमारा स्वागत करती हैं। ये दिन ज़िन्दगी के बेहतरीन दिन हैं।

एक दिन क्लब में रात्रि भोज के अवसर पर डा. चड्ढा ने मुझे पंजाब नैशनल बैंक में चल रहे

उपद्रव की हकीकत बयान की है। डा. चड्ढा भाई हरि कृष्ण के साथी रहे हैं इसलिए वह मुझे बहुत सम्मान देते हैं। पी. एन. बी. के झगड़े से मेरा सरोकार केवल इतना है कि मैं इस बैंक के महत्वपूर्ण ग्राहकों में से एक हूं और यूनियन के लड़के शाखा प्रबन्धक के साथ बदसलूकी कर रहे हैं और हद ये कि बैंक के अच्छे ग्राहकों को बैंक से नाता तोड़ने के लिए उकसा रहे हैं। मुझसे भी उन्होनें कहा है कि मैं अपनी फर्म का खाता यहां से बन्द करवा दूं। पी. एन. बी. के शाखा प्रबन्धक श्री बतरा बहुत परेशान हैं। बुजुर्ग आदमी हैं। ईमानदार हैं। लेकिन लड़के कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं। सभी सीमाओं का अतिक्रमण करके इन लड़कों में से एक ने अपना दाँत खुद ही तोड़ कर शाखा प्रबन्धक के खिलाफ केस दायर कर दिया है। आज डा. चड्ढा ने यह हकीकत मुझे बयान की है तो मैं इस बात से बेहद परेशान हूं।

मैनें इन उपद्रवी लड़कों के वकील मिस्टर बत्तरा से बात की है। मैनें एस. डी. एम. से भी बात की है। मैं चाहता हूं कि इन लोगों की सुलह हो जाए और बैंकिंग इण्डस्ट्री में असन्तोष का यह वातावरण समाप्त हो। मेरी बात पर लोग यकीन करते हैं। एस. डी. एम. ने लड़कों के वकील से बात की और बताया कि वह हकीकत से वाकिफ हैं इसलिए बेहतर यह है कि इनका समझौता करवा के हालात को सामान्य बनाया जाये। इधर मैनें बैंक के जाँच अधिकारी से भी बड़ी सख्ती के साथ यह आग्रह किया है कि आप हालात को ठीक करें वरन बैंक बन्द कर दें। आपकी वजह से मोगा की बैंकिंग इण्डस्ट्री खराब हो रही है और यह बात हम हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेंगे। कुल मिलाकर इस दबाव की नीति में एस. डी. एम. ने भी कड़ा रुख अख्तियार किया। और बैंक स्टाफ को लिखित माफी मांगने पर ही छोड़ा गया। मैं इन्साफ पसन्द हूं, इसलिए मैं दूध का दूध पानी का पानी चाहता हूं। मेरे निकट अन्याय सहना और अन्याय करना दोनों ही अक्षम्य अपराध हैं।

लाहौर आफिस नें मुझे लाहौर की गलियाँ चौबारे ओर बाज़ारों से बाखूबी परिचित करवा दिया है। लाहौर पंजाब की राजधानी है। बड़ा ही सुन्दर शहर है और मैं यहां बेहद् खुश हूं। वर्ष 1946 में अन्तत: मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती राज को भी लाहौर ले आया हूं। हमने यहां एक मकान किराये पर ले लिया है। अमृतधारा बिल्डिंग में हमारा कार्यालय है। आफिस से कुछ ही दूरी पर है सुहेल सिंह स्ट्रीट। यहां निस्बत रोड पर इस सुहेल सिंह स्ट्रीट में हमने अपने लिए किराये पर मकान लिया है। सच तो यह है कि मेरे लिए तो जहां जहां राज मेरे साथ है वहीं वहीं मेरे लिए राजधानी है।

सांयकाल हम पति पत्नी दोनों लाहौर की सैरगाहों और बाग बगीचों में सैर करने के लिए निकल जाते हैं। क्लब और होटल संस्कृति से दूर हम अक्सर अपना खाना घर पर ही खाते हैं। फिर वो चाहे अपने घर पर हो अथवा दोस्तों मित्रों या फिर अपने किसी न किसी रिश्तेदार के यहां खाने का निमन्त्रण हो। यहां हमारे बहुत से रिश्तेदार हैं। मेरे चचेरे भाई श्री मनोहर लाल वडेला का पूरा परिवार मुझसे बहुत स्नेह रखता है। बीमार पड़ने पर आदरणीय भाभी जी ने मेरी जो सेवा की है मैं इसे कभी भुला पाऊं यह नामुमकिन है। मैं तो उनके प्रति कृतज्ञ हूं। भाई साहब की बेटियां कुछ नये मिजाज़ की हैं। ये बच्चे मुझे चाचा जी कह कर ही पुकारते हैं। जब कभी इनका पिक्चर देखने का मन होता है तो ये मुझी से आग्रह करती हैं और मैं सहर्ष उनकी मांग पूरी कर देता हूं। इसलिए इन बच्चों को मुझसे विशेष लगाव है।

यहां लाहौर में 'भाईयों की दुकान' पर से लस्सी पीना मेरी कमज़ोरी है। अनारकली बाज़ार में भाईयों की दुकान पर तैयार होने वाली लस्सी पर मलाई की एक मोटी परत, उस पर चमकते हुए चीनी के दाने और फिर रूह केवड़ा की महक। चार पैसे में लस्सी का यह गिलास और पास की एक दुकान से पैसे पैसे की पूरी। सुबह का यह नाश्ता मुझे तृप्ति के अहसास से भर देता है। समय बड़े आनन्द में बीत रहा है।

लेकिन समय के चाक पर घूमते हुए ज़िन्दगी का हर लम्हा खूबसूरत शक्ल अख्तियार कर लेगा यह ज़रूरी नहीं। आज़ादी की जंग जिस निर्णायक दौर में है वहां किसी भी समय कुछ भी घट सकता है। लेकिन फिर अन्ततः जो कुछ घटा, शायद उसकी किसी ने कल्पना तक न की होगी। राजनीति ने मातृभूमि को जिस तरह ज़लील किया है, यह इतिहास कभी सिर उठा कर चलने के लायक नहीं रहा। 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तान बन गया। कितनी भी महत्त्वपूर्ण क्यों न हो लेकिन यह बात अब दूसरे स्थान पर है कि 15 अगस्त 1947 को भारत को आज़ादी प्राप्त हुई। यह कैसी आज़ादी है कि जिसने कत्लो गारत की एक शर्मनाक दास्तान से पूरे देश को लहुलुहान कर दिया है।

वक्त के संगीन तेवर देख कर मैनें 8 अगस्त को ही लाहौर आफिस को ताला लगाकर सील कर दिया है। स्टाफ को एक माह की छुट्टी दे कर मैं मोगा वापिस आ गया हूं। फिर उसके बाद तो वापिस लाहौर जाने वाली कोई बात ही न रही। लाहौर का काम बन्द हो गया है। काफी नुकसान हुआ है। सभी लेनदारियां डूब गईं। कुछ स्टॉक और काफी सामान वहीं छूट गया। रिहायशी मकान भी भरा पूरा वहीं छोड़ आया हूं। लाहौर से मेरे वापिस लौट आने के दूसरे दिन बाद ही हालात बेहद खराब हो गये हैं। भाई हरि कृष्ण अभी लाहौर में ही हैं। आगज़नी-लूट मार-दंगा फसाद ! इसी बीच लाहौर में उनके कालेज होस्टल में दंगाइयों ने आग लगा दी है। आग की लपटें-धुआं और चीत्कार जैसे भयानक दृश्यों को पार करके 11 अगस्त की रात भाई हरि कृष्ण भी वापिस मोगा पहुंच गये हैं।

मज़हबी जनून, आग का एक ऐसा दरिया है कि जिसे पार करना निहायत खरतरनाक जुर्रत का काम है। मगर अफसोस कि हमारे वक्त को इन्हीं संगीन रास्तों से गुज़रना पड़ा कि जिन पर पाँव रखते ही सारे बदन में नफरत के फफोले फूटने लगें। हमारे लिए तो इन्सानियत का जज़्बा ही अज़ीम है। इन्सान का धर्म इन्सानियत के इलावा और क्या हो सकता है।

साम्प्रदायिक सद्भाव हमारे घर-परिवार की फितरत है। इन्सानी भाईचारा हमारा मज़हब है। यही हमारा धर्म है।

मैं जानता हूं कि हमारे घर में फतह बीबी की मौजूदगी इस घर की अहम ज़रुरत है। पूज्य माता जी फतह बीबी पर उतना ही यकीन रखती हैं कि जितना खुद अपने आप पर। पहले फतह बीबी की मां भी यहीं हमारे पास काम करती थीं। अब फतह बीबी इस घर की देखभाल करती हैं। इस घर के सभी काम फतह बीबी के ज़िम्मे हैं। फतह बीबी का किरदार कुछ ऐसा हैं कि जिसे भुला पाना नामुमकिन है। वह घर की तमाम ज़िम्मेदारियां जिस खूबी के साथ निभाती है उससे तो यही लगता है कि जैसे वह हमारे ही घर की एक सदस्य हो। इस दरवाज़े से उस दरवाज़े, इस कमरे से उस कमरे... वह घर की तमाम चीज़ों को करीने से रखती है। सभी बच्चों को नहलाना धुलाना, कपड़े पहनाना... बालों में तेल लगाना, कंघी करना... सब काम उसी के ज़िम्मे हैं।
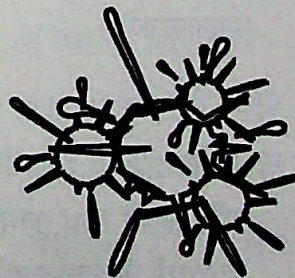
कभी किसी के दिल में यह ख्याल तक नहीं आया कि वह एक मुसलमान औरत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह महान कृपा है कि उन्होनें आर्य समाज की संस्थापना करके इन्सानी बिरादरी को अच्छे और बुरे केवल दो भागों में वर्गीकृत किया है। आर्य यानि श्रेष्ठ पुरुष ! कर्त्तव्य पालन में कभी जी न चुराने वाली फतह बीबी को आप क्या कहेंगे। निहायत बासलीका लड़की है फतह बीबी। माता जी का रखा धरा वही जानती है। यहां तक कि पूज्य माता जी घर की चाबियां तक उसे सौप देती हैं। क्या मज़ाल कि कहीं अमानत में ख़यानत हो। इतना विश्वास तो शायद अपने आत्मीय जनों के अतिरिक्त कोई किसी पर नहीं करता।

पूज्य माता जी और पूज्य पिता जी ने हमें जो संस्कार दिये हैं उनमें इन्सान की ज़ात, रंग, नस्ल और सम्प्रदाय कुछ मायने नहीं रखते। यहां तो गुणों के आधार पर ही व्यक्ति का मूल्यांकन होता है। मुझे यह बात बेहद रोमांचित करती है कि हमारे कारखाने का शिलान्यास एक मुसलमान भाई सुलेमान ने किया था। मुझे लगता है कि आपके लिये यह जानना रूचिकर रहेगा कि आखिर यह सुलेमान है कौन ? यह सुलेमान और मिस्त्री सन्ता सिंह दोनों पिता जी के वफादार साथी थे। दोनों मै: बांका मल निरंजन दास फर्म में पूज्य पिता जी के सहयोगी थे। दोनों अपने अपने काम में माहिर थे। परन्तु पूज्य पिता जी के फर्म छोड़ देने के बाद उनका मन भी उचाट था।वहां का वातावरण उन्हें रास नहीं आ रहा था। वे दोनों तो पिता जी के साथ बंधे हुए थे।

दरअसल वक्त जब अपना मिजाज़ बदलता है तो अच्छे बुरे की तमीज़ नहीं करता। यद्यपि चीज़ों को देखने और परखने के हमारे अपने अपने ज़ाविये होते हैं। लेकिन कुछ सार्वभौमिक सच्चाइयां होती हैं कि जिन पर बदलते हुए मौसम असरन्दाज़ नहीं होते। ज़िन्दगी जीने के लिए पूज्य पिता जी के अपने नियम कायदे और ज़ाबिते हैं। दूसरों के दोष ढूंढने की बजाये उन परिस्थितियों से किनारा कर लेना ही बेहतर है कि जिन परिस्थितियों को बदलने के लिए आप असमर्थ हों। हर बशर को अपनी तरह ज़िन्दगी जीने का हक हासिल है। इसलिए यही बेहतर है कि हम अपने रास्ते खुद तलाश करें।

पूज्य पिता जी ने मै. बांका मल निरंजन दास फर्म में जब तक काम किया, निहायत ईमानदारी के साथ किया। हमेशा इस फर्म के मुस्तिकबल के लिए फिकरमन्द रहे। सख्त मेहनत की। अपने साथ काम करने वाले साथियों के लिए खुद एक आदर्श स्थापित किया। इसलिए वह सब साथियों के आर्कषण का केन्द्र बने रहे। अब जब खुद अपना काम शुरू किया है तो उन्हें चाहने वाले

खुद-ब-खुद उनके व्यक्तित्व के आर्कषण में बंधे उनकी तरफ खिंचे चले आये हैं। पूज्य पिता जी ने कभी नहीं चाहा कि अपना घर बसाने के लिए दूसरों को नुक्सान पहुंचे। इसलिए उन्होनें अपना काम चुपचाप शुरू कर दिया है।

यह ठीक है कि सफलता के लिए सख्त मेहनत के इलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं होता। लेकिन पूज्य पिता जी ने जब मै. बांका मल निरंजन दास फर्म को छोड़ा तो उनके पास कुल दस हज़ार रूपये का सरमाया था। दस हज़ार की रकम बहुत बड़ी न सही लेकिन कुछ कम भी नहीं इस राशि में से पच्चासी सौ रूपये तो कारखाने की इमारत पर खर्च हो चुके हैं। शेष बचे पन्द्रह सौ रूपये। इन रूपयों से कारोबार की कल्पना करना ही अव्यवहारिक है। लेकिन पिता जी के पास इच्छा-शक्ति की जो पूंजी है वह उनके बुलन्द इरादों को बल प्रदान करती है। उस पर सुलेमान जैसे मेहनती लोगों का साथ उनके लिए सम्भावनाओं को उजागर कर रहा है। यह दृढ़ विश्वास, उनके परिश्रम के लिए वन्दन वार बन कर उनकी बाट जोह रहा है।

सच तो यह है कि पहले लोगों में जो प्यार और मुहब्बत का जज़्बा था, आजकल वह कहीं दिखाई नहीं देता। सन्ता सिंह ईंजन पर काम करता था। अपने काम में माहिर सन्ता सिंह पिता जी का स्नेह पात्र था। वह पूज्य पिता जी की बहुत इज्जत करता था सुलेमान की तरह बेशक उसने मै: बांका मल निरंजन दास फर्म को नहीं छोड़ा, लेकिन मन तो उसका पिता जी के ही साथ था। पर सुलेमान की तो बात ही दूसरी थी। जब कारखाने की आधारशिला रखने का वक्त आया तो पूज्य पिता जी ने सुलेमान को नींव की पहली ईंट रखने के लिए बुलाया। नंगे पांव, सुलेमान ने जब नींव में उतर कर पहली ईंट को यथा स्थान रखा तो उसकी आंखें सजल हो गईं। इन आंसुओं की भाषा लफ़्ज़ों की मुहताज नहीं होती। यह सुलेमान मै: बांका मल निरंजन दास फर्म में लेबर का ठेकेदार था। ये श्रमिक कारखाने की रीढ़ की हड्डी होते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह महान कृपा है कि उन्होनें आर्य समाज की संस्थापना करके इन्सानी बिरादरी को अच्छे और बुरे केवल दो भागों में वर्गीकृत किया है

मुझे आज सन्ता सिंह को याद करना भी बहुत अच्छा लग रहा है। मेरी स्मृतियों में गुज़रे हुए वक्त के जो दृश्य बार बार मेरी निगाहों के सामने घूमते हैं उनमें वे चारपाईयां जो सन्ता सिंह ने अपने हाथ से हमें बना कर दी थीं, हमारे लिए एक नायाब तोहफा थीं। क्योंकि इसके पीछे सन्ता सिंह के मन में पूज्य पिता जी के प्रति जो आदर भाव छिपा हुआ था, वह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था।

दरअसल कारोबार के लिए भी शायद कुछ ख़ास लोग मखसूस होते हैं व्यापार की तमाम ऊंच नीच देख चुके पूज्य पिता जी ने एक बार फिर अपने कारोबार में कदम रखा है। एक ज़माना था कि स्यालकोट में पूज्य पिता जी ने खेलों के सामान के व्यवसाय में सांझेदारी में काम शुरू किया था। शायद वह उनके जीवन का स्वर्ण काल रहा होगा। समृद्धता उनके कदम चूम रही थी। खेलों का सामान एक्सपोर्ट होने लगा। इंगलैण्ड में आफिस खोला गया। लेकिन वहाँ जिस व्यक्ति को ईंचार्ज नियुक्त किया गया उसने समस्त कारोबार बर्बाद कर दिया। पश्चिमी सभ्यता की आबो हवा में गर्क हो कर उसने सर्वनाश कर दिया। घुड़ दौड़ प्रतियोगिताएं, जूए बाजी और विलासिता के शौक ने बुरे दिनों के लिए द्वार खोल दिये। उन दिनों पिता जी के शौक भी शाहाना थे लेकिन विलासितापूर्ण नहीं थे। शायद इन्हीं शुभ संस्कारों के कारण अभी भी उनमें कारोबार शुरू करने के लिए साहस बाकी था। पुन: उन्होनें जुर्रत से काम लिया और नये सिरे से काम शुरूकर दिया।

कभी कभी भूत भविष्य और वर्तमान अपनी अपनी भूमिकायें अदल बदल कर मेरी चेतना के प्रवाह को गतिमान कर देते हैं। मैं समय का साक्षी बन कर गुजरे हुए वक्त के साथ तारतम्य स्थापित कर लेता हूं। समय के अश्व कितने ही बेलगाम क्यों न हों। प्राय: मेरे सामने तो गुज़रा हुआ वक्त भी प्राणवान हो कर स्पन्दित होने लगता है।

श्रीनगर की हसीन वादियों की खुशबू मेरे खून में घुल मिल गई है। दादा जी के समय से ही इन रंग बिरंगी फिज़ाओं के साथ हमारा गहरा रिश्ता कायम हो गया है। जन्नत का यह नज़ारा पूज्य पिता जी के लिए हमेशा आर्कषण का केन्द्र बना रहा। वर्ष में कम से कम एक बार तो हम सपरिवार श्रीनगर जरूर जाते हैं। इस बार श्रीनगर से जो एक तोहफा हम अपने साथ लेकर आये हैं उसमें रोमानीयत भी है, मासूमीयत भी है और खूबसूरती भी। मैनें अपनी ज़िन्दगी में ऐसा कोई बेजुबान जानवर नहीं देखा कि जिसकी आंखें ब़ोलती हों और संसार की तमाम भाषाएं उसे झुक कर सलाम करती हों। यह एक बहुत ही अच्छी नस्ल की घोड़ी है जिसे देख कर कोई सहज में ही अनुमान लगा सकता है कि यह जिस अस्तबल से निकल कर हमारे घर आई है वह घर भी कोई सामान्य घर नहीं होगा। यह घोड़ी श्रीनगर में एक अंग्रेज़ उच्चाधिकारी के घर की ज़ीनत थी।

श्रीनगर में हमारे पूज्य मामा जी इस अंग्रेज़ उच्चाधिकारी के पी. ए. थे जो कि पड़ोस में रहते थे। जिन दिनों हम श्रीनगर में होते तो भाई मनमोहन अक्सर उनके काम में हाथ बंटा दिया करते थे। मनमोहन पढ़े लिखे थे। इस प्रकार लिखने पढ़ने के काम में वह इस अंग्रेज़ उच्चाधिकारी को अपना सहयोग सहर्ष दिया करते थे। इस प्रकार हमारे परिवार के साथ उस अंग्रेज़ परिवार के सम्बन्ध बड़े ही सौहार्द्र पूर्ण थे। उन दिनों आज़ादी की जंग आखिरी दौर में थी। परिस्थितियां बड़ी तेज़ी के साथ बदल रही थीं। अंग्रेज़ सरकार अपना बोरिया बिस्तर बाँध रही थी। वह अंग्रेज़ उच्चाधिकारी भी अपना सामान समेट रहे थे। लेकिन यह घोड़ी उनके लिए परेशानी का सबब बनी हुई थी। इसे न तो साथ ले जाया जा सकता था न छोड़ कर जाना ही मुनासिब था। इस घोड़ी को पा कर जो परिवार कभी गौरवान्वित हुआ था आज अजीब संकट में था।

दरअसल यह घोड़ी कभी अंग्रेज़ वायसराय के अस्तबल की शोभा थी। अंग्रेज़ अधिकारी के लिए यह एक सम्मान की बात थी कि वायसराय ने यह घोड़ी उसे उपहार में दी थी। वायसराय जो कि सन् 1946 में अपने वतन वापिस चले गये थे उन्होनें यह घोड़ी अपने स्नेह पात्र इस अंग्रेज़ उच्चाधिकारी को सौंप दी थी। फिर यहां भी उसे उतने ही नाज़ और मनुहार के साथ रखा गया। यह घोड़ी कि जिसे वायसराय के लिए सम्भवत: स्विटज़रलैण्ड से मंगवाया गया था। यह एक सरकारी घोड़ी थी ! सरकार की आन बान शान के अनुरूप ही इस घोड़ी की भी शोभा थी। पूज्य मामा जी इस अंग्रेज़ उच्चाधिकारी के निजी सहायक थे। शायद इसी अधिकार अथवा अपनेपन से उन्होनें मामा जी से कहा कि हम लोग यह घोड़ी अपने पास रख लें। उनकी शर्त यह भी थी कि इस घोड़ी की देख भाल करने वाले सईस परिवार को भी हमें हमारे साथ रखना होगा। इस घोड़ी की ओर देख कर तो किसी का भी दिल ललचा सकता था। यह उपहार दरअसल बेशकीमती था। राजकीय स्तर पर इस घोड़ी का अपना एक भव्य इतिहास था। लेकिन पिता जी के शौक भी शाहाना थे। इस प्रकार यह घोड़ी एक मुसलमान सईस परिवार के साथ हमारे घर मोगा आ गई। इस घोड़ी के साथ भी मेरी कुछ यादें बावस्ता हैं।

कैप्टन लाल सिंह ने जब यह घोड़ी हमारी कोठी में खूंटे से बंधी हुई देखी तो वह इस घोड़ी को एकटक देखते रहे। उनके आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी। वह हैरान थे कि यह घोड़ी हमारे घर कैसे पहुंच गई। उन्होनें इस घोड़ी को पहचान लिया था। उन्होनें हमें बताया कि यह घोड़ी कोई साधराण घोड़ी नहीं है। वह जानते हैं कि घोड़ी की एक सरकारी फ़ाईल बनी हुई है। जिसमें इस घोड़ी के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। ऐसी बेमिसाल घोड़ी को याद करके आज भी मन रोमांचित

होता है। यह घोड़ी जब चलती थी तो उसके पैरों में बंधे हुए घुंघरूओं की खनक से किसी नवविवाहिता के कदमों की आहट सुनाई देती थी। घोड़ी के टापों की वह मधुर आवाज़ आज भी मेरे कानों में गूंजती है। अपनी तीन टांगों पर अपने पूरे बदन का सन्तुलन बना कर एक पांव से जब यह घोड़ी सलाम करती थी तो सचमुच उस पर बहुत प्यार आता था। यह घोड़ी बैंड टी भी लेती थी। सुबह की चाय वह अपने कप से पीती थी। एक बड़ा सा कप जोकि विशेष रूप से उसके लिये बनवाया गया था।

सईस पति पत्नी इस घोड़ी को अपने बच्चों की तरह रखते थे। इस घोड़ी को बड़े ही एहतियात के साथ रखा जाता था। गर्मियों में उसके लिये ख़स की टटिट्यों का इन्तज़ाम किया जाता। सईस और उसकी बीवी चौबीसों घण्टे उसकी सेवा में रहते। सईस की बीवी इस घोड़ी के रेशमी बालों को कंघी करतीं उन्हें गून्थती और सजाती संवारती थी। इस घोड़ी के नाज़ नखरे देख कर तो कोई भी उससे ईर्ष्या कर सकता था।

हम अभी इस घोड़ी के चाव मल्हार भी पूरे नहीं कर पाये कि विभाजन की आँधी ने कहर बरपा कर दिया। नफरत की आग और उसकी लपटें वीभत्स रूप दिखाने लगीं। हर तरफ मौत का तांडव दिखाई देने लगा। इस आग की तपिश इससे पहले कि हमारी दहलीज़ तक पहुंचती हमें हमारे शुभ चिन्तकों नें खबरदार किया कि घोड़ी की सेवा में जो सईस परिवार हमारे घर में रहता है हमें उनके बारे में सोचना चाहिये। एक दिन हम पर भी यह उंगली उठ सकती है कि हमने इस मुसलमान परिवार को अपने घर पनाह दे रखी है। इन हालात में इस मुसलमान दम्पत्ति की सुरक्षा को लेकर हमारा फिकरमन्द होना स्वाभाविक ही था। सुरक्षा की दृष्टि से उन्हें यहाँ से निकाल कर पाकिस्तान भेजने में भी अनेक ख़तरे थे। अन्ततः यह तय हुआ कि इन्हें यू. पी. के भइये बता कर होशियारी के साथ पाकिस्तान रवाना किया जाये। इस काम के लिए हमने अपने कुछ आदमियों को नियुक्त किया कि जिनकी ड्यूटी थी कि जैसे भी हो इस मुसलमान परिवार को सकुशल पाकिस्तान पहुंचाया जाये। कुछ रुपये पैसे दे कर चुपके चुपके हमनें उन्हें

इन्सानों की इस धरती पर पशुता का जो नंगा नाच हमने अपनी आंखों से देखा, इतिहास में उसकी कोई दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है। बेज़ुबान पशुओं को भी इस त्रासदी का शिकार होना पड़ा

रात की गाड़ी से जब विदा किया तो उस दृश्य को याद करके आज भी मैं भावुक हो जाता हूं। दोनों पति पत्नि की आंखों में आँसुओं का सैलाब देख कर तो शायद पत्थर भी पिघल जाते। लेकिन इन्सानियत के दुश्मन लोगों की आँखों को तो नफ़रत की चरबी ने ढक दिया था। इस अन्धे जनून के सामने हम असहाय थे। हम कुछ नहीं कर सके।

फिर क्या... खूंटे से बंधी उदास घोड़ी के पांव में बंधे घुंघरूओं की खनक खामोश उदासी के सीने में सुराख़ कर देती। घोड़ी जीने मरने लायक जो कुछ खाती वह सब उसके अन्दर जा कर जैसे ज़हर बन जाता। मुसलमान सईस दम्पति के चले जाने से घोड़ी जैसे अनाथ हो गई। इन हालात में घोड़ी ने ज्यादा देर तक हमारा साथ नहीं निभाया। अन्ततः घोड़ी चल बसी। धार्मिक परम्परानुसार घोड़ी को दफनाने की तमाम रसमें पूरी की गईं हमने फूल मालाओं से उसे श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इन फूल मालाओं में उसके चेहरे को जो कान्ति प्रदान की आज उसे याद करके दि्ल से एक हूक उठती है। इन्सानों की इस धरती पर पशुता का जो नंगा नाच हमने अपनी आंखों से देखा, इतिहास में उसकी कोई दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है। बेज़ुबान पशुओं को भी इस त्रासदी का शिकार होना पड़ा। हम जिस घोड़ी से हाथ धो बैठे वह घोड़ी बार बार स्मृतियों के झरोखों में से झांकती है। मैं आंखें बन्द कर लेता हूं सिर झुका लेता हूं। इसके इलावा मैं और क्या कर सकता हूं।

पूज्य पिता जी को काशमीर से बेहद लगाव था ! बड़ा प्यार था उनको जम्मू काशमीर की वादियों से। वह चाहते थे कि किसी तरह हमारा काम काशमीर में चले। क्योंकि हमारे दादा जी काशमीर में मुलाज़िमत करते थे। पिता जी ने मैट्रिक श्रीनगर से की थी। पूज्य दादा जी वहाँ अच्छी पोस्ट पर थे। इसलिए हमारे पिता जी को वहां सबसे बड़ा प्यार मिलता था। पूज्य पिता जी हमारे पितामह की इकलौती सन्तान थे। इसलिए दादा जी का सारा ध्यान उन पर केन्द्रित रहता था। पिता जी की परवरिश ही उनकी ज़िन्दगी का मकसद था। दादी मां के देहावसान के बाद अगरचे पूज्य दादा जी ही हमारे पूज्य पिता जी के लिए मां और पिता दोनों थे लेकिन पूज्य पिता जी को उनकी नानी से अत्याधिक स्नेह मिला था। हमारे पूज्य माता जी बताया करती थीं कि नानी मां जब उन्हें आशीर्वाद देती थीं तो अक्सर कहा करती थीं परमात्मा करे कि तुम सात सात बेटों के मुंह धोवो ! ईश्वर कृपा से ऐसा ही हुआ।

हम सात भाईयों में से बड़े भाई गोपाल कृष्ण की शादी जम्मू में हुई है। आदरणीय भाभी जी (श्रीमती ऊषा) के पिता लाला देवी दास कपूर जम्मू रियासत के राजा के दरबारी रहे हैं। बड़े ही ठाठ हैं इस परिवार के जम्मू में। अच्छा कारोबार है। अब यहां हमारा 'P' मार्का तेल बिकने लगा है। हमें इस बात की बेहद खुशी है।

यह वर्ष 1947 के प्रारम्भिक दिन हैं। हमने तेल सरसों का काम जम्मू में कमिशन ऐजण्ट की मार्फत शुरूकिया है। इसका नाम 'P' मार्का रखा गया है। 'P' मार्का ही क्यों रखा गया है ? यह भी एक मज़ेदार कहानी है। दरअसल हमारे यहां जो सरसों का तेल तैयार होता था उसे तीन भागों में विभाजित किया जाता था। पूज्य पिता जी शुद सरसों तेल की पैकिंग पर चाक से 'P' का निशान बना देते थे। एक्सपैलर के तेल पर 'X' और मिश्रित तेल पर 'C' का निशान ! 'पी' यानि प्योर (शुद्ध) एक्स यानि (एक्पेलर) 'सी' यानि चालू। अगर तेल पर ऐसे निशान अंकित न किये जायें तो इस तेल को पहचानना किसी के लिए भी सम्भव नहीं। कालान्तर में 'पी' यानि शुद्ध तेल की लोकप्रियता को देखते हुए हमनें हमारे यहां उत्पादित तेल को 'पी' मार्का नाम दे दिया और आज ये नाम हमारी पहचान बन गया है।

परन्तु वर्ष 1947 का लहूलुहान भारत वर्ष केवल मेरे लिए ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान से प्यार करने वाले हरेक आदमी के लिए चिन्ता का विषय है। उगराही के लिए जम्मू गए हमारे अकाऊण्टैण्ट बाबू द्वारिका दास अभी तक घर वापिस नहीं लौटे हैं। भूगौलिक और राजनीतिक परिस्थितियों की उथल पुथल ने इन्सानियत को जो घाव दिये हैं वे अभी ताज़ा हैं। प्रति दिन चोट पर चोट से इन्सानियत कराह रही है। हम लोग फिकरमन्द हैं। धरती के बीचों बीच जैसे किसी ने तलवार की नोक से मां की छाती को विदीर्ण कर दिया है। फिर जैसे आंखों से लहू चूने लगा, जुबान आग उगलने लगी घर की असमत बाज़ारों में लुटने लगी। आखिर यह कैसा जनून है। इन्हीं संगीन हालात में बाबू द्वारिका दास को जम्मू जाना पड़ा। आखिर आठ दिन बाद बाबू द्वारिका दास पुरी जम्मू से पठानकोट होते हुए वापिस मोगा लौटे। वह जब जम्मू गये थे तो बारास्ता लाहौर और स्यालकोट होते हुए गये थे लेकिन उसके बाद सब रास्ते बन्द हो गये। हर तरफ खून ही खून था और साम्प्रयादिक जनून की आंधी थी। आठ दिन पैदल चल कर बाबू द्वारिका दास पठानकोट पहुंचे थे। कितना मुश्किल रहा होगा यह सफर... ज़िन्दगी का सफर यूं भी इतना आसान नहीं है।

तेल सरसों का काम दिन ब दिन बढ़ रहा है। जम्मू में यह हमारी दूसरी ब्रांच है। पहली लाहौर में खोली थी जो कि बन्द हो चुकी है। जम्मू में भाई गोपाल कृष्ण जी के ससुराल हैं सो उनका बड़ा सहारा है।अब हमारा ध्यान केवल तेल सरसों पर ही केन्द्रित है। जम्मू से अत्याधिक लगाव के कारण अब हम यहां अपना काम बढ़ाने की ओर ध्यान दे रहे हैं। अगरचे जम्मू आफिस के ईंचार्ज श्री खुशी राम मित्तल एक सेल्ज़मैन और एक सफाई सेवक से काम चला रहे हैं। लेकिन समग्र रूप में जम्मू आफिस की जिम्मेदारी भी मैं ही सम्भाल रहा हूं। लगभग प्रतिमाह मैं जम्मू जाता हूं। यहां अब

Sale काफी बढ़ गई है। पिता जी जम्मू के काम से बेहद खुश हैं। 1950 में हमने चावलों का काम भी छोड़ दिया क्योंकि अब इस काम में सरकारी दख़ल कुछ ज्यादा ही हो गया है। अब तेल सरसों ओर रूई का काम ही रह गया है जो कि ईश्वर की कृपा से दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की पर है।

शायद ही कोई ऐसा इन्सान हो कि जो अपनी तरक्की पर खुश न हो। लेकिन दूसरों को खुशी में अपनी खुशी ढूंढना और दूसरों के सुख में अपना सुख तलाश करना ही एक अच्छे इन्सान की पहचान है। पूज्य पिता जी और माता जी सदैव सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं। मैं हमेशा उन्हें अपना प्रेरणा स्त्रोत मानकर उनके जनकल्याण के कामों में भरसक अपना योगदान देता हूं। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती राजनन्दिनी पुरी बेशक घर बार के कामों में अत्याधिक व्यस्त रहती हैं लेकिन फिर भी अपनी अभिरुचियों और समाज कल्याण के कामों के लिए पर्याप्त समय निकाल लेती हैं। कढ़ाई बुनाई में उसकी कलात्मकता के बेजोड़ नमूने देख कर तो लोग हतप्रभ रह जाते हैं। उसकी इन कला कृतियों को देख कर तो सचमुच मुझे सुखद आश्चर्य होता है। रंगीन धागों से उसने कल्पनाओं का जो संसार रचा है उसकी प्रदर्शनी लगाने का आग्रह वह हंस कर टाल देती हैं।

गृह कार्य में दक्ष राज जब रसोई में हो तो वहाँ से आने वाली खुशबू बता देती है कि आज डाइनिंग टेबल पर कुछ न कुछ खास चीज़ परोसी जाने वाली है। रसोई का यह रासायन उसने कहाँ से सीखा, यह तो मुझे मालूम नहीं लेकिन उसके हाथ की बनी हुई चीज़ों का खूब आनन्द लिया है। वह बेहद संवेदनशील, कोमल-प्रवृति और दयालुता की प्रतिमूर्ति है। दीन-अनाथों तथा विधवाओं की सहायता के लिए वह सदैव तत्पर रहती है। बाढ़ पीड़ितों का दुख भी उन्हें अपना ही दुख लगता है। उनके लिए कपड़ा लत्ता और दवाईयों इत्यादि का इन्तज़ाम करते हुए वह अपनी सुध बुध भूल जाती है। कुष्ठ रोगयों के लिए भी उनके मन में सदैव दया उमड़ती है। कुष्ठ आश्रम के लिए भी वह कुछ न कुछ भेजती रहती हैं।

धरती के बीचों बीच जैसे किसी ने तलवार की नोक से मां की छाती को विदीर्ण कर दिया है। फिर जैसे आंखों से लहू चूने लगा जुबान आग उगलने लगी घर की असमत बाज़ारों में लुटने लगी

मैं बेशक बहुत घरेलू किसम का आदमी नहीं हूं। फिर भी व्यवसायिक व्यस्तताओं में से मैं अपने घर परिवार और समाज के लिए कुछ न कुछ वक्त ज़रूर निकाल लेता हूं। मेरे लिए तो समाज का प्रत्येक काम बिल्कुल ऐसे ही है कि जैसे मेरे घर का काम है। मेरा यह मानना है कि जो काम करना है दिल से करो। पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करो। निश्चय ही परमात्मा आपको सफलता और यश प्रदान करेंगे। ज़िन्दगी में कठिनाईयां तो पग पग पर हैं लेकिन सुख दुख के झंझावातों में से समय निकाल कर अपनी किश्ती को किनारे पर ले जाना हर किसी के बस की बात नहीं। मुश्किलों के पहाड़ तो हम पर भी टूटे लेकिन राजनन्दिनी का अदम्य साहस और सक्रिय सहयोग सदैव मेरा सम्बल बना।

पूज्य पिता जी श्रद्धेय श्री देवी दास पुरी का पारिवारिक उपवन
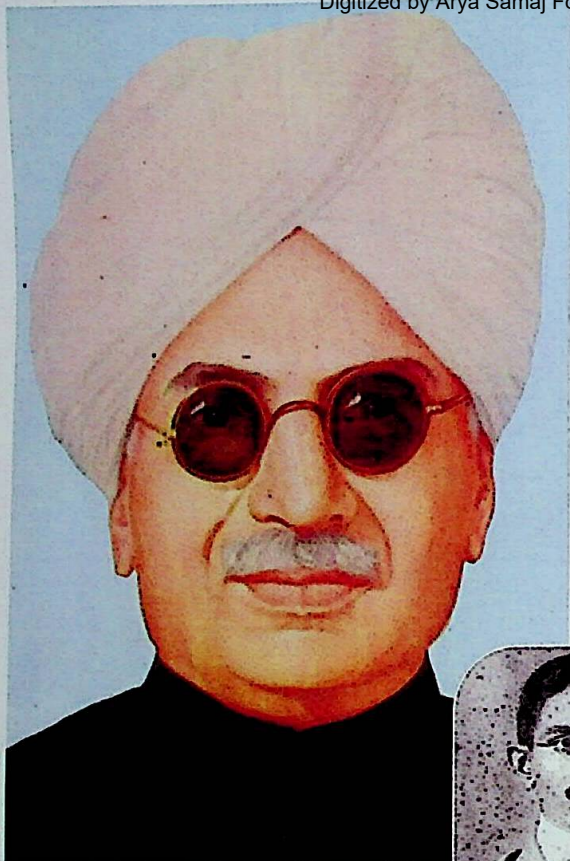
पूज्य पिता जी श्री देवी दास पुरी
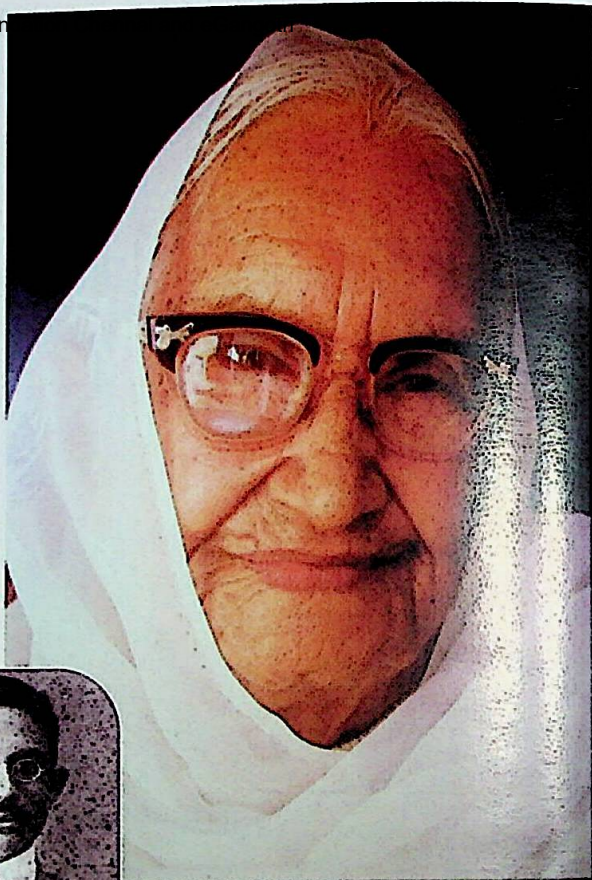
पूज्य माता जी श्रीमती राजरानी पुरी

पंजाब यूनी. लहौर से
जब स्वर्ण पदक प्राप्त किया

किशोरावस्था से आज तक – केवल कृष्ण पुरी
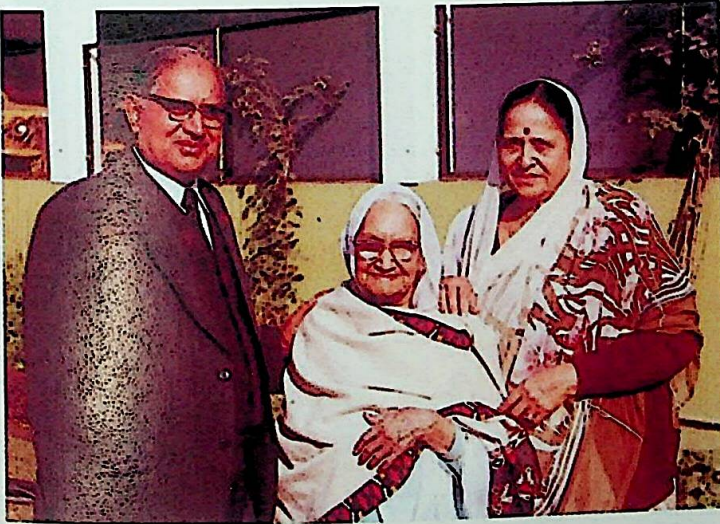
श्रीमती राजनन्दिनी पुरी एवं घर-परिवार की
कुछ स्मृतियां

प्रिय बेटी मधु के विवाह-उत्सव के अवसर पर
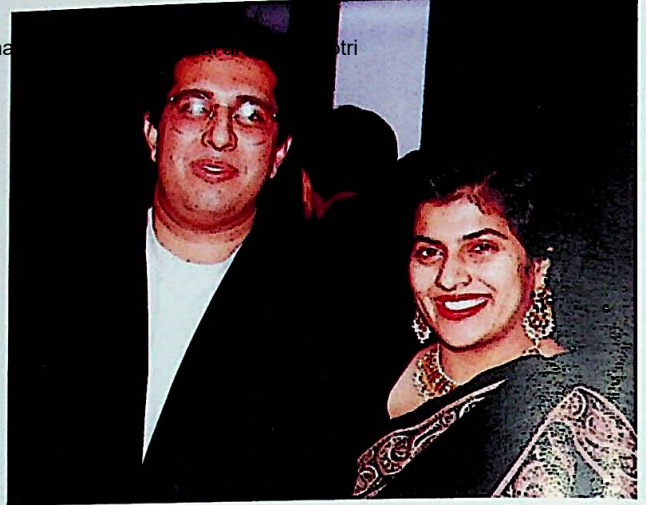
प्रिय बेटा विवेक पुरी एवं श्रीमती शालिनी पुरी
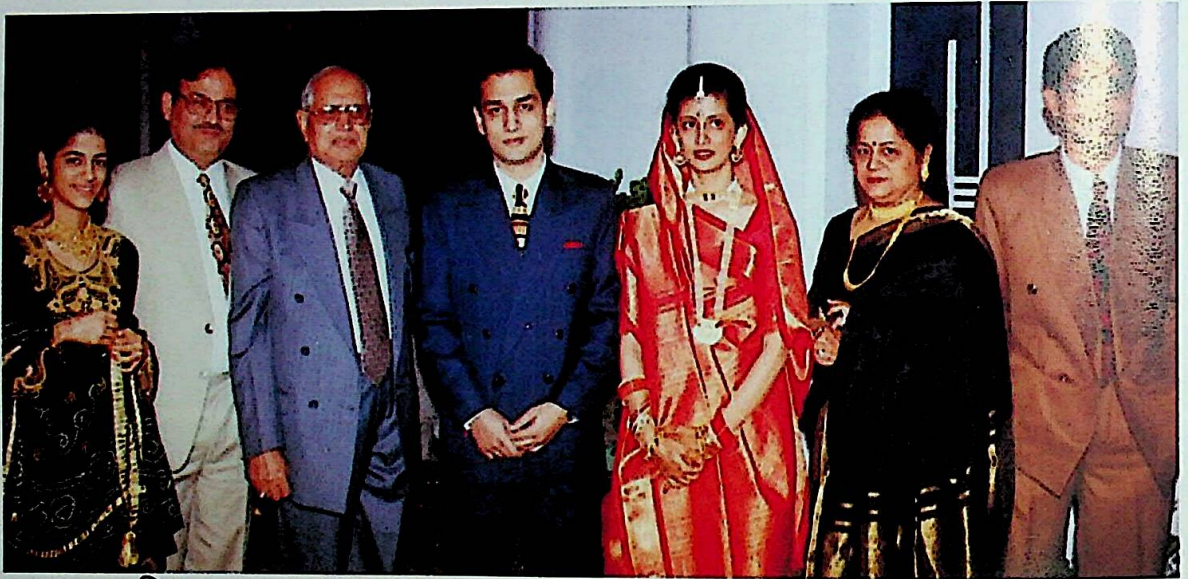
मधु का परिवार

उत्कृष्ट उत्पादन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार
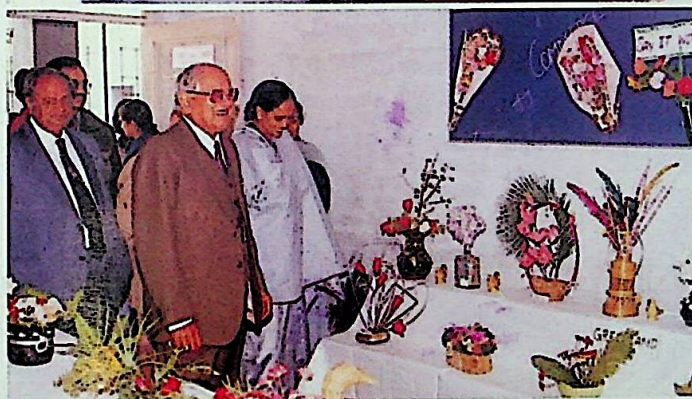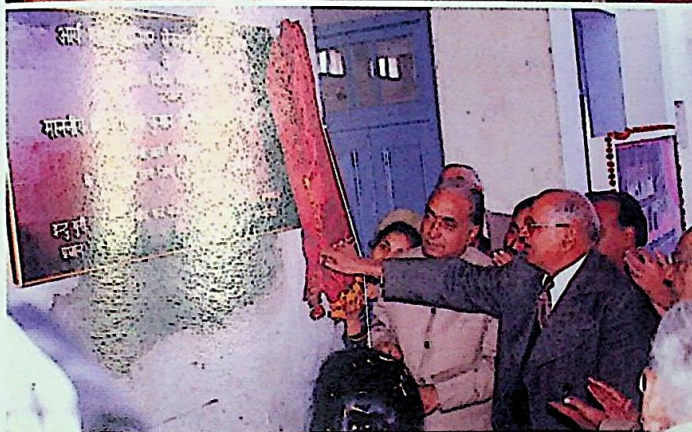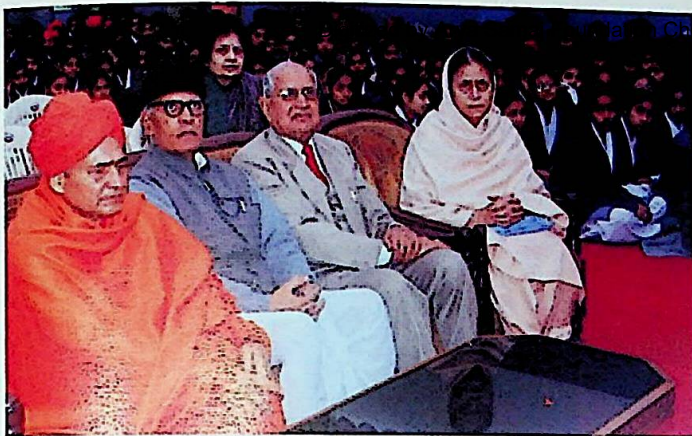
शैक्षणिक, साँस्कृतिक, सामाजिक और अध्यात्मिक गतिविधियों की दीपशिखा को प्रज्जवलित करते हुए केवल कृष्ण पुरी
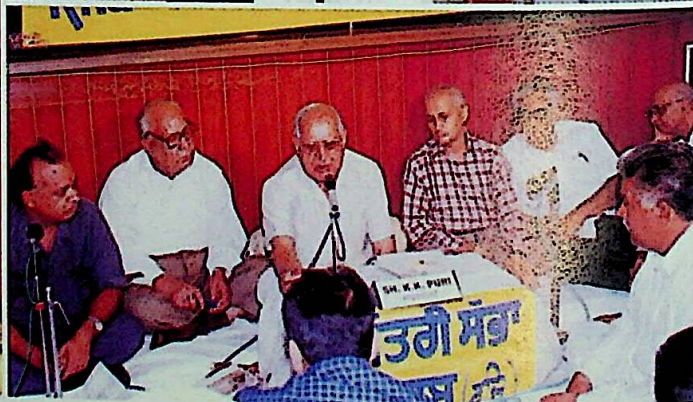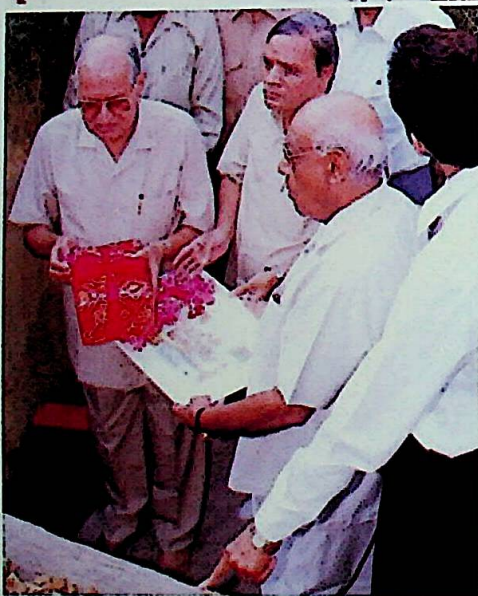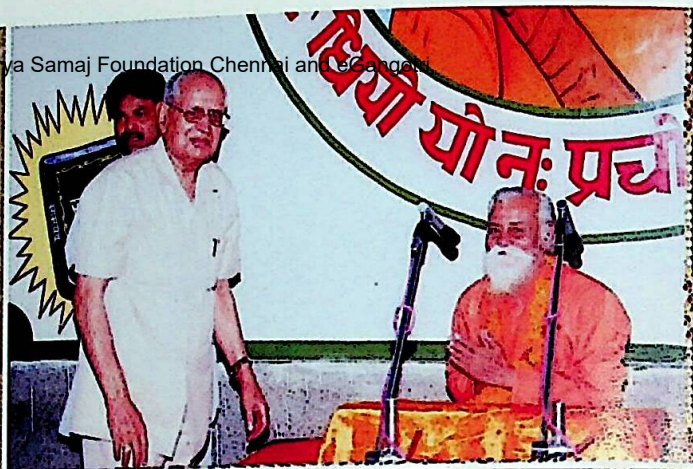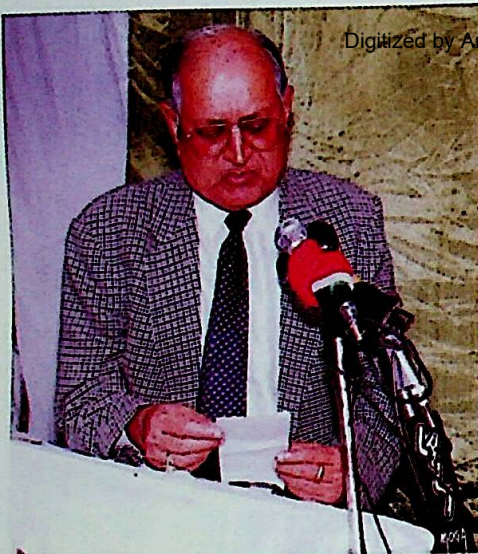
सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों की कुछ झलकियां
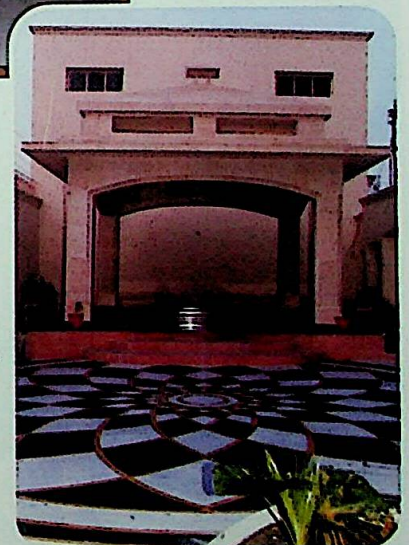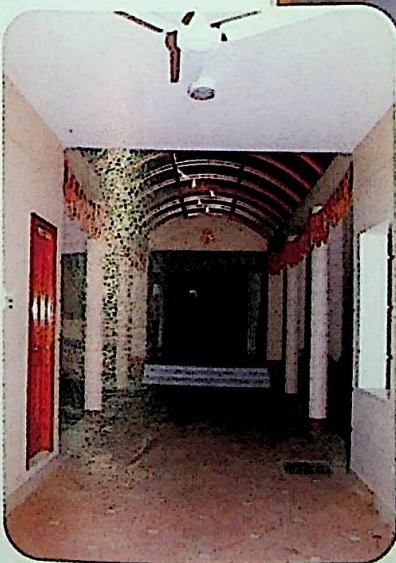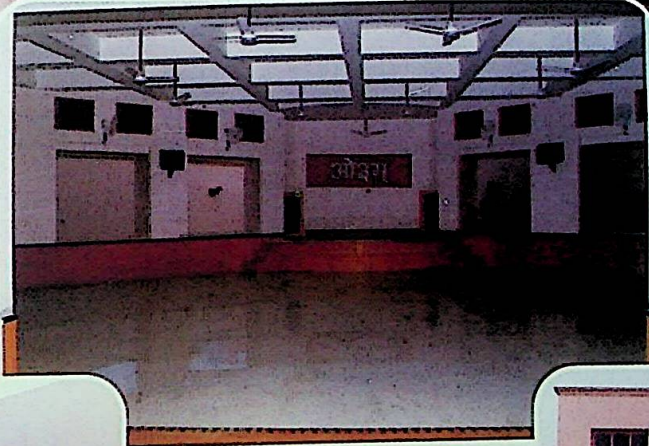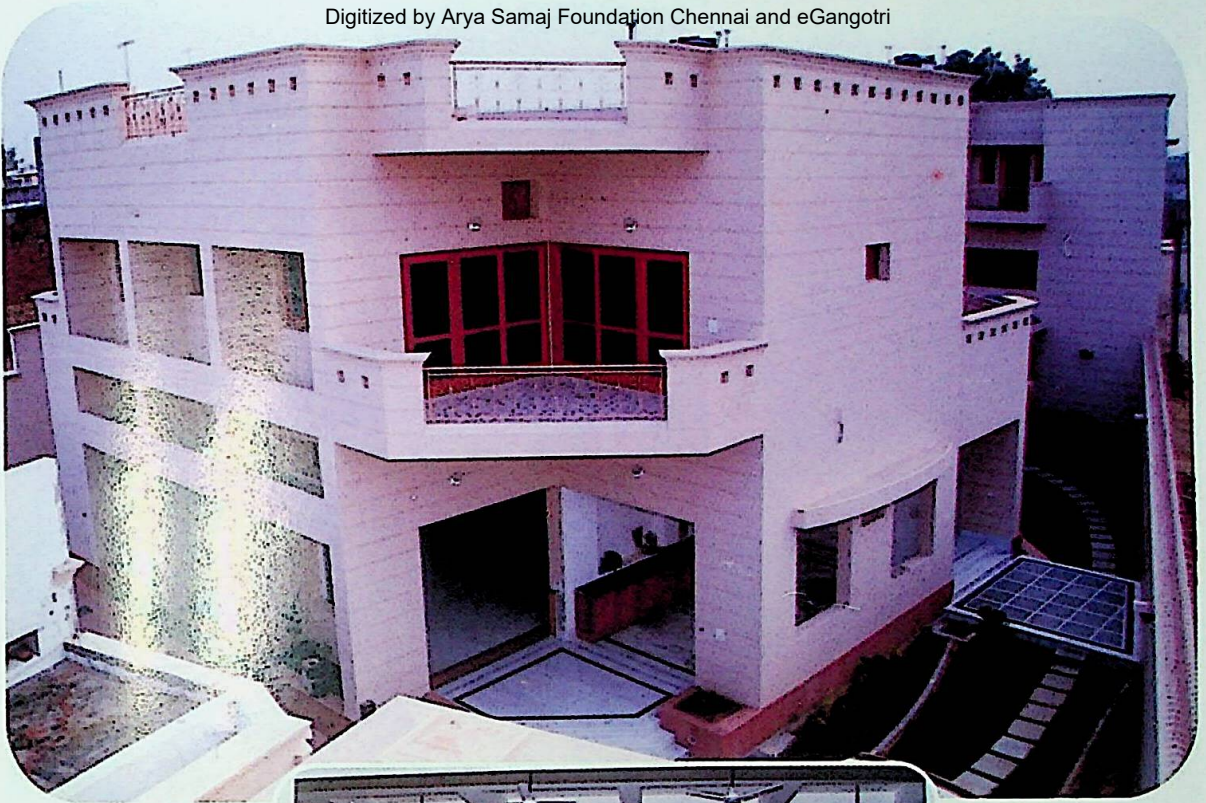
देवी दास केवल कृष्ण
चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित
राजनन्दिनी सत्संग भवन
के कुछ विहंगम दृश्य
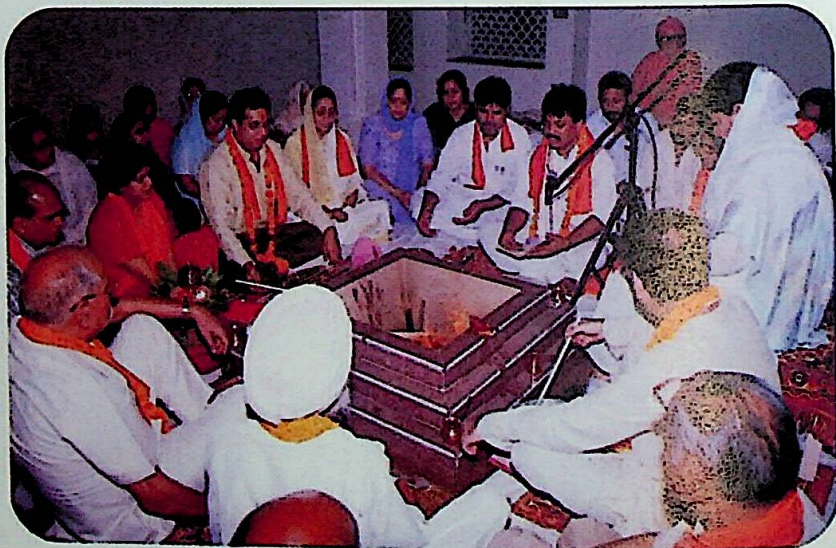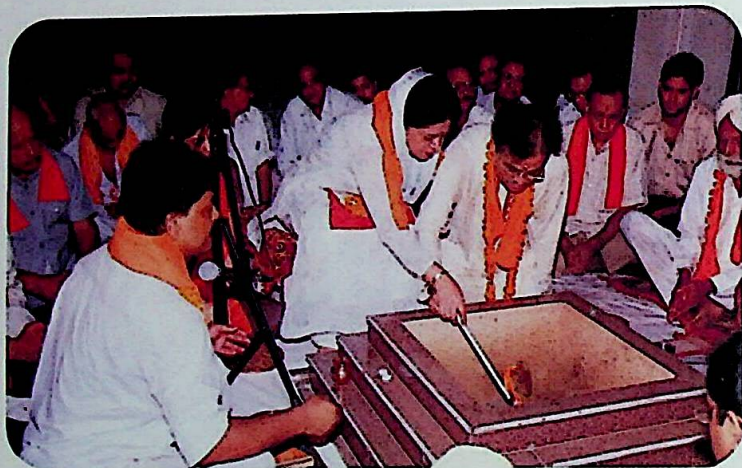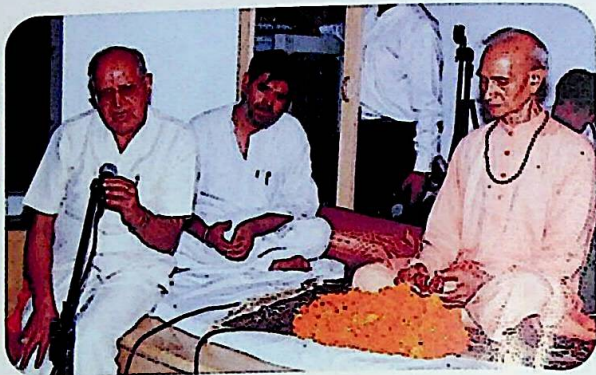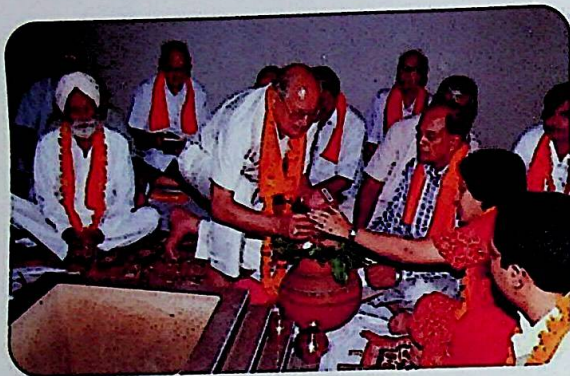
शुभारम्भ

राजनन्दिनी सत्संग भवन के शुभारम्भ के अवसर की विभिन्न झलकियां

गृहस्थाश्रम सचमुच उस वक्त स्वंग समान लगने लगता है जब इस वाटिका में कोई नया फूल खिलता है । उस फूल क़ी एक मुस्कान पर माता पिता अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते है। सृजन का यह आनन्द अनिवर्चनीय है । ईश्वर कृपा से हमारे घर भी आनन्द की इस पहली फुहार से सारा आंगन महक उठा । प्रथम सन्तान बेशक लड़का हो या लड़की सबके मन में रोमांच पैदा करती है । इसलिए हम भी अतिरिक्त रूप से उत्साहित है । इस घर में मधु ने 12 अक्तूबर 1949 को जन्म लिया है । इस सुन्दर सलोनी आकृति में कभी मैं अपना चेहरा ढूंढ़ता हूँ तो कभी उसकी माता राजनन्दिनी का। मधु जब मुस्कराती है तो जैसे सारी कायनात मुस्कराती है । मधु जब रोती है तो हमारी जान जैसे मुट्ठी में आ जाती है । मधु के लिए घर में ढ़ेर सारे खिलौने हैं, फिर थोड़ी बड़ी हुई तो उसकी रूचि अनुसार व्यंजन बनने लगे । मधु से घर में सभी बहुत प्यार करते हैं। हमारा यह प्यार नैसर्गिक है । सामान्य माता पिता की तरह मैं भी अपने सपने मधु में साकार होते हुए देखना चाहता हूँ ।

उषा भाभी जी गवर्नमैण्ट गर्ल्ज़ स्कूल में अध्यापिका हैं । इसलिए मधु को उन्हीं के साथ स्कूल भेज दिया गया है । मधु ने जब इस स्कूल से मैट्रिक, तक की शिक्षा प्राप्त कर ली तो मैंने उसे उच्च शिक्षा के लिए डलहोज़ी सेंट बीट्स कालेज में दाखिल करवा दिया । दरअसल जो अभाव मुझमें रहा, मैं उसकी पूर्ति इन्हीं बच्चों के माध्यम से करना चाहता हूँ । मैं चाहता हूँ कि मधु का जीवन पथ आलोकित हो । मात्र हमारा परिवार ही नहीं बल्कि पूरा समाज उस पर गर्व करे। मधु ने सेंट बीट्स कालेज डलहौज़ी से जब ग्रैजुएशन कर ली तो हम सबने यही सोचा कि अब उसे बी.एड. करवा दें । दरअसल इन दिनों लड़कियों के लिए अध्यापन के व्यवास क़ो ही सबसे अच्छा समझा जाता है । इसी ख्याल से उसे दयानन्द मथुरादास शिक्षा महाविद्यालय मैं बी.एड. में दाखिल करवा दिया गया । मधु ने बी. एड की शिक्षा उत्तीण कर ली ।

इस बीच मधु कितनी बड़ी हो गई । अभी कल की बात है कि जब मधु घुटनों के बल चलती थी । उसकी भोली भाली शरारतें हम सबका मन मोह लेती थीं । सब उसे गोद में उठाने के लिए आतुर थे और आज... आज वह जब बराबर खड़ी होती है तो सब उसकी शादी के बारे में सोचने लगते हैं । वर्ष 1972 की गुनगुनी धुप में बैठ कर मैं भी उसकी शादी के सपने बुनने लगता हूँ । कलकत्ता के जिस सुप्रतिष्ठित परिवार के विषय में, मैं सोच रहा हूँ । यह लाला मुलख राज जी मल्होत्रा का परिवार है स्वयं लाला मुलख राज जी आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान हैं । M. E. S. के अच्छे कॉन्ट्रेक्टर है । सुप्रसिद्ध व्यवसायी हैं। लाण्ड्री में एक प्रतिष्ति नाम Band box के मालिक हैं । उनके सुपुत्र श्री विजय कुमार जी मल्होत्रा, सुन्दर शालीन और अच्छे व्यक्तित्व के मालिक हैं । यह पंजाबी परिवार मेरी सोच का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है । मेरी दृष्टि में मधु के लिए यह घर सर्वथा उपयुक्त रहेगा । यही सब सोच कर यहाँ हमने मधु का रिश्ता पक्का कर दिया है ।

इधर 11 अक्तूबर 1972 को जब मधु की शादी हो रही है तो मोगा के स्थानीय हालात बहुत ही खराब है । यहाँ रीगल सिनेमा के साथ हुए झगड़े को ले कर स्टूडैण्ट्स् यूनियन और प्रशासन के दरिम्यान स्थिति बहुत तनाव पूर्गा बनी हुई है । इन परिसिथियों के दृष्टिगत हमने बारात को अपनी कोठी के उस हिस्से में ठहराने का मन बनाया है जो कभी बांके मल निरन्जन दास फर्म की मल्कियत थी । इस कोठी के मुख्य द्वार से बारात जब मेन रोड़ से होती हुई कारखाने के मुख्य द्वार से प्रतिष्ट हुई तो लगा कि जैसे एक साथ अनेक खुशियों ने हमारे घर आंगन में पाँव पसार लिए ।

बारात के स्वागत में श्रीनगर से फूल मंगवाये गये हैं । सारे घर को ताज़ा फूलों से सजाया गया है । फूलों की छतरी तले बारात के इस भव्य स्वागत की अनुपम छटा ने सचमुच एक प्रकार से अलौकिक दृश्य का सृजन कर दिया है। दिल्ली से आमन्त्रित शहनाई वादक सबके आकर्षरा का केन्द्र बने हुए हैं । बहुत ही सुन्दर समाँ बंध गया है । चंडीगढ़ से केटरिंग का इन्तज़ाम किया गया है । अतिथियों का स्वागत सत्कार हो रहा है । बारातियों की आव भगत हो रही है । शहनाई की मधुर धुनें सुनाई दे रही हैं । इससे ज्यादा अलौकिक आनन्द और क्या होगा । ये कार्यक्रम तीन दिन तक लगातार इसी प्रकार जारी रहेंगे ।

आज 12 अक्तूबर को मधु का जन्म दिवस भी है । इस सुन्दर सुखद संयोग से मन आह्लादित है । मधु के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में विशेष रूप से केक बनवाया गया है । इस केक

को काटते वक्त मधु के साथ विजय जी और उनके परिवार के सब सदस्य उपस्थित है । हम सब मिल कर मधु का जन्म दिवस मना रहे हैं । ये मांगलिक अवसर मुझे जिन्दगी भर याद रहेंगे ।

इसके दूसरे दिन जब मधु की डोली विदा हो रही है । उस वक्त शुभ कामनाओं के अम्बार उसके साथ जाने के लिए आतुर है । मैं खुश हूँ कि मैनें अपने धर्म का निर्वाह किया । मैं उदास हूँ यह सोच कर कि मधु के बिना यह घर कैसा लगेगा लेकिन संसार का यही नियम है। हमारा सभ्य समाज इस नियम से बंधा हुआ है।

प्रसन्नता की बात यह है कि मधु जिस घर में जा रही है यकीनन उसे वहाँ हर प्रकार की सुख सुविधा और खुशियाँ प्राप्त होंगी जो कि उसे हमारे यहाँ प्राप्त हो रही हैं । हमारी मंगल कामनायें और शुभाशीष है कि परमात्मा उसे सदैव सुखी रखे...

विवाहोपरान्त मधु की ओर से ठण्डी हवायें आती रहीं। हवाओं के कन्धों पर सवार हो कर खुशियों के काफिले आते रहे । अक्तूबर 1973 में जब वरुण का जन्म हुआ तो लगा जैसे ईश्वर ने मेरे यहाँ पुत्र रत्न के अभाव की पूर्ति कर दी । उसकी पहली लोहड़ी हमने मोगा में ही मनाई । राज की प्रसन्नता का तो क्या ठिकाना । वह तो निश्चय ही अतिरिक्त रूप से उत्साहित है। इस अवसर पर घर में प्रसन्नता का वातावरण है जिसे परम्परानुसार मैं अपने परिवारिक मित्रों के साथ मिल कर समारोह पूर्वक मना रहा हूँ । उसके बाद समित पैदा हुआ तो जैसे हमारी खुशी दुगनी हो गई । परमात्मा ने हम पर सुखों और खुशियों की जैसे बारिश कर दी फिर दो तीन वर्ष पश्चात ईश्वर ने इन दोनों भाइयों के लिए एक बहन भेज दी... आंचल । जैसे ईश्वर नें गृहस्थ की इस तसवीर को मुकम्मल कर दिया । ईश्वर कृपा से तीनों बच्चे सुयोग्य हैं, सुन्दर हैं और उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है ।

वरूण और उसकी पत्नी ॠचा दोनो कम्पयूटर इंजीनियर हैं। दोनो इन दिनों अमेरिका में बहुत अच्छी सर्विस में हैं । ईश्वर नें उन्हें दो पुत्र

मैं उदास हूँ यह सोच कर कि मधु के बिना यह घर कैसा लगेगा लेकिन संसार का यही नियम है। हमारा सभ्य समाज इस नियम से बंधा हुआ है।

रत्न प्रदान किये है राहुल और कर्ण । दोनों यशस्वी हों, आयुष्मान हो, माता पिता का गौरव बनें यही मनोकामना है । परमात्मा उन्हें समस्त खुशियां प्रदान करें । समित भी इन दिनो Band box के विस्तृत कारोबार में अपना हाथ बंटा रहा हैं । सम्पत्ति के कय विकय (प्रापर्टी डीलर) का काम कर रहा है। बहुत ही सुयोग्य बेटा है उसकी पत्नी शिल्पी डाक्टर है। वह सुप्रसिद्ध डैण्ट्रिस्ट है । उसका अपना क्लिनिक है, और अच्छा काम है । उसके पास एक बेटी ईशा और बेटा आर्यन है । परमात्मा उन्हें सुख शान्ति, और सामर्थ्य प्रदान करें । ये बच्चे उन्नति करें... यही मनोकामना है ।

आंचल के लिए मैं सुखी सम्पन्न और वैभवशाली गृहस्थ जीवन की कामना करता हूँ ।

साँसरिक दृष्टि से इन बच्चों में अपना उत्तराधिकारी तलाश करने की कोशिश में बेशक मैं सफल नहीं हुआ । लेकिन मुझे जितना प्यार और सम्मान मिला है वह भी कुछ कम नही हैं । प्रसंगवश ही सही व्यापारिक व्यस्तताओं में से समय निकालकर अपनी घर गृहस्थी पर नजर डालना कुछ उतना ही जरूरी होता है कि जितना रास्ते के मील पत्थर को पढ़ कर यह जान लेना कि मंजिल अभी कितनी दूर है ।

अठारह

मैं बरामदे में रखी हुई जिस कुर्सी पर बैठ कर टैलीफोन सुन रहा हूं इस कुर्सी का पारम्परिक डिज़ाइन और इसकी बनावट बड़ी ही शाहाना है। यह कुर्सी और मेरे आफिस की वह मेज़ मुझे बेहद प्यारी है। इस कुर्सी और इस मेज़ की एक दुख भरी दास्तान है। यह कहानी फिर कभी। अभी तो भाई गोपाल कृष्ण ने बम्बई में आयात का काम शुरूकिया है।

भाई गोपाल कृष्ण बड़े ही मेहनती, दूरन्देश और काबिल व्यापारी हैं। उनका यह मानना है कि मोगा एक छोटी सी जगह है और हम यहां बैठ कर तरक्की नहीं कर सकेंगे। पूज्य पिता जी ने उन्हें बम्बई में इम्पोर्ट का काम शुरू करने की अनुमति दे दी है। भाई गोपाल कृष्ण बम्बई चले गये हैं और वहां उन्होनें अपना आफिस खोल लिया है। उन्होनें वहाँ जाकर बड़ी मेहनत की है और उनकी अनथक कोशिशों से बम्बई अफिस का काम एकदम बढ़ गया है। उनका अक्सर यह कहना कि मोगा में क्या रखा है हम सब बम्बई चले जायेंगे मुझे किसी परी लोक में चले जाने जैसा लगता है। छः महीने के अन्दर ही उन्होनें बम्बई आफिस का अच्छा खासा नफा निकाला है। हम सब बड़े खुश हैं और जादू नगरी मुम्बई के ख़ाब देखने लगे हैं।

जुलाई 1950... किसी कारोबारी सिलसिले में भाई गोपाल कृष्ण दिल्ली आये हुए हैं। फिर दिल्ली से, हम सबको मिलने के लिए मोगा चले आये हैं और यहां आ कर वह बीमार हो गये हैं। डा. गोकुल चन्द और मास्टर खुशीराम जी उनका इलाज कर रहे हैं। मलेरिया की दवाई दी जा रही है। लेकिन बुखार ठीक नहीं हो रहा है। हालत दिन प्रति दिन खराब होती चली जा रही है। खुशी के इस माहौल में उदासी के बादल मंडराने लगे हैं। फिर तो न कोई डाक्टर छोड़ा न दवा दारू। पूज्य माता जी तो पागलों की तरह न जाने

कहाँ कहाँ भटकती फिरीं। लेकिन कुछ आराम नहीं मिला। पूज्य माता जी ने दान के लिए अन्न के भण्डार खोल दिये हैं। चावलों की बोरियां, मांह की दाल–न जाने क्या क्या। हताश हो कर पूज्य माता जी ने पूज्य पिता जी से पूछा कि सच बताओ–कहीं आपकी कमाई में तो कुछ खोट नहीं है। आखिर मेरा बच्चा ठीक क्यों नहीं हो रहा ? पूज्य पिता जी क्या कहें ? यह तो सरासर अविश्वास की तोहमत है। वह आंखों में आंसू भर कर चुप हो जाते हैं।

मा. हरबंस लाल जी अपना घर–बार छोड़ भाई गोपाल के पास से उठ कर कहीं नहीं जाते। दोनों का आपस में बहुत प्यार है। दवाऐं हैं... दुआएं हैं... लेकिन कुछ हाथ पल्ले पड़ता नज़र नहीं आ रहा। अन्ततः भाई हरि कृष्ण अमृतसर से डा. चुटानी को साथ ले कर आये हैं। उन्होनें टायफाइड डाईग्नोज़ किया है इस बीच डिलेरियम हो गया है। बम्बई से दवाई मंगवाई गई है। इससे पहले कि दवाई पहुंचती भाई गोपाल कृष्ण की हालत और खराब हो गई। फिर तो चारों ओर जैसे मौत के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। कुत्तों बिल्लियों ओर जानवरों के रोने की आवाज़ों से सारा वातावरण भयानक सा लगने लगा है। आज 27 जुलाई 1950 की यह सुबह हमारे लिए काली रात में तबदील हो गई है। ठीक 4 ½ बजे भाई गोपाल ने अन्तिम सांस ली है। पूज्य पिता जी, पूज्य माता जी, भाभी जी हम सब भाई बहन और मासटर हरबंस लाल जी के सब्र का बांध जैसे टूट गया है। सब रो रो कर बेहाल हो रहे हैं। कभी ख़त्म न होने वाले इन आंसुओं की कहानी बहुत लम्बी है।

ये कहर के दिन और जान लेवा रातें हैं।

भाई गोपाल जी के फूल चुनने के बाद हम लोग जब काम पर बैठे तो पूज्य पिता जी ने मुझे अलग से बिठा कर समझाया है कि जो होना था, हो चुका। हम लोगों से जो कुछ सम्भव हो सका गोपाल को बचाने के लिए वह सब हमने किया। अपनी तरफ से हमने कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन ईश्वर के आगे तो किसी की कुछ पेश नहीं चलती। अब सारे घर का भार आपके ऊपर है। आपकी भाभी और मां का बुरा हाल है। उनको सम्भलने में अभी बहुत वक्त लगेगा। लेकिन मुझे उम्मीद है कि तुम इस सदमे को बर्दाश्त करते हुए गोपाल के इस अधूरे काम को पूरा करोगे। पिता जी मुझे कारोबार की, घर की, आर्थिक स्थिति की... एक एक बात समझा रहे हैं।यह तल्ख़ हकीकत जान कर मैं सन्न रह गया हूं।

हे ईश्वर ! यह कैसी इम्तिहान की घड़ी है। दुख का पहाड़ जैसे हम पर टूट पड़ा है। एक समुद्री तूफान में, झंझावात में घिरे हुए जहाज़ को सम्भालने की ज़िम्मेदारी पूज्य पिता जी मुझे सौंप

रहे हैं। अब गोपाल भैया भी नहीं रहे। बम्बई आफिस में भी डिपाज़िट वाला ही रूपया था जो कि वहाँ काफी चौपट हो गया है। पिता जी बहुत घबराये हुए हैं। वास्तिवक स्थिति जान कर मैं भी चिन्तित हूं। क्योंकि इससे पूर्व मुझे हकीकत का पूरी तरह से पता नहीं था। मैं मन ही मन सोच रहा हूं कि भाई गोपाल किस प्रकार ख़तरों से खेल रहे थे और उनके माथे पर मैनें कभी एक शिकन तक नहीं देखी। असलियत तो सिर्फ पूज्य पिता जी और भाई गोपाल ही जानते थे और उन्होनें आज तक हमें इस बात की भनक तक नहीं लगने दी ताकि हम लोग परेशान न हो जायें। कितनी ऊंची सोच और जीवट वाले इन्सान थे भाई गोपाल और हमारे पूज्य पिता जी।

घर का पूरा वातावरण शोक में डूबा हुआ है। आदरणीय भाभी जी और पूज्य माता जी के आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे। उधर आफिस का हाल तो मैं देख ही चुका हूं। मैं अपने उत्तरदायित्व को भी समझ रहा हूं। और वास्तिवक परिस्थतियों से भी आमना सामना करने के लिए खुद को तैयार कर रहा हूं। मेरे छोटे भाई बहन अभी पढ़ रहे हैं। मैं चाहता हूं कि उनकी पढ़ाई में कोई व्यवधान नहीं आनी चाहिये। मैं चूंकि पढ़ नहीं पाया इसलिए मैं पढ़ाई की अहमीयत को समझता हूं। पिता जी की काफी कमाई बच्चों को पढ़ाने, घर और फैक्टरी की दशा सुधारने एवं गोपाल जी व मेरी शादी पर खर्च हो चुकी है। ये कड़े संघर्ष के दिन मुझे विरासत में मिले हैं।

हे ईश्वर ! यह कैसी इम्तिहान की घड़ी है। दुख का पहाड़ जैसे हम पर टूट पड़ा है। एक समुद्री तूफान में, झंझावात में घिरे हुए जहाज़ को सम्भालने की ज़िम्मेदारी पूज्य पिता जी मुझे सौंप रहे हैं।

व्यापार में बग़ैर रूपये के काम चलाना तो पानी मथने जैसा होता है। यह तो ईश्वर की कृपा और पूज्य माता जी एवं पूज्य पिता जी का आशीर्वाद है कि इन परिस्थितियों में भी हमारा काम चल रहा है। वर्किंग कैपिटल के लिए रूपया हुण्डियों पर लिया गया है। कमाई भी बेशक सामान्य रूप से बढ़ रही है। लेकिन हमारे पास जो भी है उसे पिता जी Fixed Assets में लगा देते हैं... आय के स्रोत बढ़ाने पर खर्च कर देते हैं। और शेष किसी न किसी भाई बहन की शादी पर रूपया खर्च हो जाता है और परिस्थितियां यथावत बनी रहती हैं।

फिर भी काम जैसे तैसे चल ही रहा है। हमारे पास जो आर्थिक स्रोत हैं, मैं वह सब जान गया हूं। मैं जान गया हूं-पूज्य पिता जी का काम करने का तरीका। मैनें मन ही मन ठान लिया है कि आज से मेरी ज़िन्दगी का हर पल इस खानदान के वैभव और वर्चस्व को बढ़ाने के लिए समर्पित होगा। मैनें यह प्रण लिया है कि मैं पूज्य पिता जी के सपनों को साकार करूंगा। अपना निजी सुख-दुख भूल कर मैं इस फर्म व इस खानदान के लिए अपनी बाकी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगा। मैं सोच में डूबा रहता हूँ। घर की असलियत का जो राज़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ है उसमें आज तक मैनें किसी को अपना हमराज़ नहीं बनाया। राज को अक्सर मुझसे यह शिकायत रहती है कि मुझे चौबीस घण्टे बस काम की फ़िकर रहती है। न पत्नी की ओर ध्यान, न बेटी की ओर ध्यान। हर वक्त बस काम का भूत मेरे सिर पर सवार रहता है। राज बेचारी

को क्या पता कि मैं किस उधेड़ बुन में हूं। राज की बहुत सी बातें ठीक होती हैं। लेकिन मेरे काम से अगर वो मेल नहीं खातीं तो मैं उन्हें टाल देता हूं। फर्म और घर की वास्तविक स्थिति किसी को बताना तो दूर मैं किसी को अहसास तक नहीं होने देता। मुझे अपने घर से ऐसे ही संस्कार मिले हैं। दूसरों के दुख में दुखी होना और उसका समाधान करना लेकिन अपनी तकलीफ को कभी जाहिर नहीं होने देना।

भाई मनमोहन कृष्ण जब से M.Sc. कैमिस्ट्री पास करके दिल्ली से वापिस मोगा आये हैं। पूज्य पिता जी से प्रि. कुमार ने मनमोहन को डी. एम. कालेज मोगा में पढ़ाने के लिए आग्रह किया है क्योंकि कालेज के पास इस विषय के लिए कोई लैक्चरार नहीं है। प्रिंसीपल साहब पिता जी के साथ सैर करने वालों में से हैं और दूसरा आर्य समाज की संस्था को सहयोग देने की बात है। मनमोहन भाई साहब कालेज में पढ़ाने लगे।इसी बीच प्रो. आई. सी. पुरी ने भी डी. एम. कालेज ज्वाइन कर लिया। दोनों में खूब दोस्ती थी। दोनों आई. ए. एस. करना चाहते थे शिमला में कोआपरेटिव सोसायटीयों के लिए होने वाली Interview के लिए मनमोहन जी तैयार नहीं थे। लेकिन पिता जी के आग्रह पर उन्हें जाना पड़ा। बिना किसी तैयारी के। सफर में डेविड कॉपरफील्ड की एक किताब पढ़ते हुए उन्होनें समय व्यतीत किया। लेकिन मज़े की बात यह कि इन्टरव्यू में ज्यादातर सवाल उन्हें इसी विषय पर पूछे गये जो कि कॉपरफील्ड की इस बहुचर्चित किताब में, उन्होनें सफर के दौरान पढ़े थे। और परिणाम स्वरूप वह चुने गये... असिस्टैंट रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसायटीज़।

लेकिन यहां तो सब हालात बदल चुके हैं। गोपाल जी की मृत्यु के बाद बम्बई आफिस के लिए विचार विमर्श हुआ है और ये निर्णय लिया गया है कि मनमोहन को वहां भेजा जाये। इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आयात का काम देखने के लिए जिस ज़हानत की ज़रूरत होती है। वह सब भाई मनमोहन कृष्ण के पास है। मनमोहन पढ़े लिखे हैं, बुद्धिमान हैं ओर हमें विश्वास है कि वह बम्बई आफिस का काम काज सम्भाल लेंगे। नहीं तो वहां का सब काम डूब जायेगा।

भाई गोपाल कृष्ण ने आयात का काम जिस तरह शुरू किया था उसे वही जानते थे। उनके चले जाने के बाद इस कारोबार की बारीकियों की समझ हमारे पास नहीं है। भाई मनमोहन कृष्ण को बहुत ही मेहनत करनी पड़ी। कारोबार के तनाव और उलझनों ने उन्हें परेशान कर रखा है। उस पर यहाँ की आबो हवा उनके अनुकूल नहीं। भाई मनमोहन की सेहत पर इन सब बातों का बहुत बुरा असर पड़ा है। फिर भी जैसे तैसे वह काम चला रहे हैं।

पूज्य माता जी नहीं चाहतीं कि मनमोहन जी इन परिस्थितियों में बम्बई में रहें। वह अपना एक बेटा पहले ही वहां गंवा चुकी हैं। लेकिन इधर नौकरी से तो मनमोहन भाई साहब पहले ही त्यागपत्र दे चुके हैं। बेशक त्यागपत्र अभी स्वीकार नहीं हुआ। बम्बई का कारोबार भी डूबने लगा है।

...बाल कृष्ण जी उदास हैं। सिर्फ तीन हज़ार रुपये की बात है। सोचो तो बात कुछ भी नहीं। मगर तीन हज़ार रुपये की रकम कुछ कम भी नहीं है। मेरे बस में होता तो मैं उनके चेहरे पर उदासी के बादल मंडराने से पहले उन्हे पोंछ देता। मैं चुप हो गया हूं लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं निष्क्रिय हो गया हूं। मैं सोच रहा हूं....

मैं सोच रहा हूं कि भाई बाल कृष्ण के साथ यह बहुत बड़ी ज्यादती हुई है कि उनकी सीनियरटी को नज़र अन्दाज करके उनसे जूनियर अधिकारी को पदोन्नति दी गई है।

बाल जी ने बेंगलौर से इलैक्ट्रिक इन्जिनीयरिंग पास करने के बाद पंजाब राज्य बिजली बोर्ड में सर्विस ज्वाइन की है। वह इन दिनों एस.डी.ओ. हैं लेकिन उनसे जूनियर अधिकारी को पदोन्नत करके एक्स-इ-अन बना दिया गया है। यह तो सरासर ना-इन्साफी है। लेकिन क्या किया जा सकता है।जो कुछ सम्भव था नियमानुसार वह सब कुछ करने के बाद बाल कृष्ण जी ने न्यायालय का दरवाज़ा खटखटाया है लेकिन वहां से भी कुछ सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हुआ विभाग ने तो पहले ही उनकी रिप्रिज़ेन्टेशन को रिजैक्ट कर दिया था। अब लोअर कोर्ट में भी फैसला उनके हक में नहीं हुआ है। भाई बाल कृष्ण जी अन्याय के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ने के मूड में हैं। उन्होनें उच्च नयायालय में अपील दायर करने का मन बनाया है।

उन्हें चाहिए मात्र तीन हज़ार रूपये...

पूज्य पिता जी ने उनकी सारी बात सुनने के बाद जो फैसला दिया है वह भी कुछ कम निराशाजनक नहीं है। उन्होनें स्पष्ट शब्दों में कहा है कि चूंकि इस केस में ज़रा भी जान नहीं है, इसलिए यूं ही पैसे बरबाद करने से कोई मकसद हल नहीं होगा। बेहतर है कि अब बाल कृष्ण जी यंह सब सोचना बन्द करें। लेकिन यह इतना आसान नहीं है। जिस तन लागे वो तन जाने। मैं अपने भाई बाल कृष्ण को उदास नहीं देख सकता। मैनें उनसे चुपचाप कह दिया है कि वह अपील की तैयारी करें। तीन हज़ार रुपये मैं दूंगा। लेकिन मैं कहां से दूंगा ? अब कह दिया सो कह दिया। सिर्फ तीन हज़ार रुपये के कारण, मैं भाई बाल कृष्ण के भविष्य को धूमिल होते हुए नहीं देख सकता।

मैनें अपने मन की दुविधा का ज़िक्र अपने अभिन्न मित्र श्री देवेन्द्र बराड़ से किया तो उन्होनें मुझे तीन हज़ार रुपये की राशि सहर्ष प्रदान की और अपनी सकारात्मक राय भी दी। हम लोग दोस्ती के मायने समझते हैं और एक दूसरे के साथ दोस्ती का हक भी अदा करते हैं। भाई बाल कृष्ण की समस्या का समाधान हो गया। उन्होनें हाई कोर्ट में अपील दायर की। अन्तत: फैसला भाई बाल कृष्ण के हक में हुआ। वह खुश हैं। उन्हें खुश देख कर घर में सभी खुश हैं। मैं भी खुश हूं। लेकिन इस खुशी की पृष्ठभूमि में तीन हज़ार रूपये की उस राशि के बारे में कोई नहीं जानता कि उसकी व्यवस्था मैनें किस प्रकार की।

वर्ष 1950 में जबकि हम भाई बाल बाल कृष्ण जी की शादी का कार्यक्रम बना रहे हैं, घर में अजीब तरह का मातमी माहौल बना हुआ है। हम अभी तक भाई गोपाल कृष्ण जी की मृत्यु के शोक से उबर नहीं पाये। पूज्य माता जी व भाभी जी का बुरा हाल है। पूज्य पिता जी बेहद उदास रहते हैं। मैं ज़ब भी घर जाता हूं पूज्य माता जी और भाभी जी को रो रो कर हलकान होते हुए देखता हूं। बेशक यह दुखद त्रासदी घर की परिस्थितियों पर असरन्दाज़ हुई है। लेकिन बड़ा भाई होने के कारण मैं अपने कर्त्तव्य बोध को समझता हूं और इन परिस्थतियों में भी सामान्य बने रहने की चेष्टा करता हूं। ज़िन्दगी के दुख दर्द अपने सीने में दफ़न करके मुस्कराने की कला मुझे विरासत में मिली है।

जनाब राय साहब श्री बैजनाथ सयाल परिवार में बाल जी का विवाह अत्यन्त सादगी के साथ लेकिन भव्य रूप से सम्पन्न हुआ।गोपाल जी के बाद घर में बड़ा होने का अहसास मुझे हमेशा अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग करता है। हम भाईयों का परस्पर प्यार बेशक नैसर्गिक है। लेकिन पूज्य पिता जी के हर काम को खुशअसलूबी के साथ सरन्जाम देने में, मैं कोई कोर कसर बाकी नहीं रहने

देता। सामर्थ्य और सीमाओं के अन्तर्गत जो कुछ भी सम्भव हो... मैं तो घर की खुशियां वापिस देखना चाहता हूं। ज़िन्दगी और मौत तो बेशक हमारे बस की बात नहीं। लेकिन ज़िन्दगी जीने का सलीका तो आना चाहिए जो कि ईश्वर कृपा के बिना हरगिज़ सम्भव नहीं। मेरे संस्कार सदैव मेरा मार्ग प्रशस्त करते हैं।

बाल जी कुछ गम्भीर प्रकृति के इन्सान हैं। मा0 हरबंस लाल जी उन्हें फिॅलासफर कहते हैं तो फिर ठीक ही कहते हैं। मास्टर हरबंस लाल जी भूषण की हम सब बहुत इज्ज़त करते हैं। मुझे और भाई गोपाल जी को छोड़ कर शेष सभी भाई बहन मास्टर जी से पढ़े हैं। सफेद कमीज़ पायजामा, सर्दियों में बन्द गले का कोट, तुरले और शमले वाली शानदार पगड़ी... कुल मिला कर सादगी की इस प्रतिमूर्ति से हम सब भाई-बहनें बहुत प्रभावित हैं। मास्टर जी हमारे परिवार का अभिन्न अंग हैं। पूज्य पिता जी और मास्टर जी घण्टों आर्य समाज की गतिविधियों पर चर्चा करते हैं। माता जी भी उन्हें बहुत प्यार करतीं हैं। शायद ही कोई दिन ऐसा हो कि जब मास्टर जी हमारे घर नहीं आये हों। वह हम सब की बहुत फिक्र रखते हैं। केवल पढ़ाई लिखाई नहीं वह अपने विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार देते हैं। और उनके व्यक्तित्व निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

लेकिन बड़ा भाई होने के कारण मैं अपने कर्त्तव्य बोध को समझता हूं और इन परिस्थतियों में भी सामान्य बने रहने की चेष्टा करता हूं। ज़िन्दगी के दुख दर्द अपने सीने में दफ़न करके मुस्कराने की कला मुझे विरासत में मिली है।

मैं जब से कारोबार में आया हूं, ज़िन्दगी की तलख़ हकीकतों के साथ दो चार हो रहा हूं। मुझे लगता है कि ज़िन्दगी एक सनातन जंग है। अन्तहीन संघर्ष है। इस सफर में झाड़ झंखाड़ और पगडण्डियां भी हैं और राजपथ भी, फूल भी हैं और कांटे भी, धूप भी है और छांव भी, विष भी है और अमृत भी। इस द्वन्द्वात्मक संसार में मैं बिना परिणाम की चिन्ता किये ज़िन्दगी की यह जंग लड़ रहा हूं। लेकिन ये बातें कहने सुनने में जितनी चित्ताकर्षक हैं हकीकत में उतनी ही कठिन और श्रम साध्य हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात राजनीतिक दृष्टिकोण से भारतीय गणतन्त्र जब इस मिट्टी में अपनी जड़ें स्थापित कर रहा था। हम भी जद्दोजहद के दौर में से गुज़र रहे थे। संक्रमण काल हमेशा ही कष्टप्रद होता है। व्यापारिक दृष्टि से मुम्बई में जो नुक्सान हुआ था उससे निश्चित रूप से हम अपसैट हुये थे। वर्ष 1951 का यह दौर जब हम साठवें दशक में पर्दापण कर रहे हैं, वक्त हमारे सामने सवालिया निशान बन कर खड़ा है। चुनौतियों का सामना करना और मुसीबतों के चक्रव्यूह को तोड़ना बेशक बहादुरी का काम है। लेकिन मेरे निकट जीवन के इन उदात्त मूल्यों की अपेक्षा अपने अस्तित्त्व और अस्मिता के लिए संघर्ष करना अत्यन्त अनिवार्य है। क्योंकि इस वक्त इसके सिवा दूसरा और कोई रास्ता नहीं है। पूज्य पिता जी और पूज्य माता जी का आशीर्वाद सदैव मेरे साथ है। पूज्य पिता जी जिस फर्म के सोल प्रॉपराइटर हैं उसकी आन बान और शान के लिए संघर्ष करना ही मेरी ज़िन्दगी का मकसद है।

मेरे लिए अग्नि परीक्षा के ये दिन सचमुच बहुत ही कठिन हैं। लेकिन मैनें जो संकल्प लिया है कि मैं अपना सर्वस्व इस घर के लिए समर्पित कर दूंगा और इस खानदान की गरिमा पर कोई आंच नहीं आने दूंगा यह सब मेरे लिए एक मशाल से कम नहीं है। पूज्य माता जी अगर यह सोचती हैं कि मैं इस बेड़ी का मल्लाह हूं तो इस बेड़ी को गन्तव्य तक पहुंचाना मेरी ज़िम्मेदारी है। कठिन संघर्ष के दौरान घर की ज़िम्मेदारियों के निर्वाह को भी मैनें अपना धर्म मान कर पूरा किया है।

दिसम्बर महीने के पूर्वार्ध में बहन सत्या की शादी हो रही है। सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आर्थिक तंगी के दौर में विवाह शादियों के कार्य व्यवहार निभाना कितना कठिन होता है। लेकिन मैं बिना अपने माथे पर कोई शिकन डाले अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता हूं। पूज्य पिता जी की मानसिकता को मैं समझ सकता हूं। निश्चय ही वह लड़कियों की शादियों को लेकर फिकरमन्द हैं और अपनी इन ज़िम्मेदारियों से फारिग होना चाहते हैं। मुझे तो पिता जी के आदेश पर फूल चढ़ाने हैं। उनकी एक हां का मतलब होता है कि फिर चाहे सारा घर दूसरी तरफ क्यों न हो उनकी हां सर्वोपरि होती है।

ब्रहम दत्त जी धवन सर्वे आाफ इण्डिया में आफिसर हैं उनके चाचा दीवान हुक्म चन्द (मैजिस्ट्रेट) बड़े ही होशियार आदमी हैं। उन्हीं की वजह से यह रिश्ता हुआ है। बारात को ठहराने का बहुत बढ़िया इन्तज़ाम किया गया है। बारात की रिसैप्शन तो घर पर हुई है लेकिन उनके ठहरने का इन्तज़ाम मैने अपने दोस्त बराड़ की कोठी में किया है।

शादियों का ज़िक्र हो तो मैं यह बताना ज़रूरी समझता हूं कि हमारे घर में इन समारोहों की बहुत बड़ी अहमीयत है। ये समारोह हमारे सामाजिक स्तर को निर्धारित करते हैं। इसलिए मैं सदैव अपने घर की प्रतिष्ठा को उत्तरोतर उन्नति करते हुए देखना चाहता हूं।

इधर जब मनमोहन कृष्ण की शादी डाबर साहिब की बेटी वीणा से होना तय हुई तो उसी दौरान बहन पुष्पा की शादी पी. डी. गेरा से होना निश्चित हुई। लेकिन कुछ समझ में नहीं आ रहा कि पहले किसकी शादी की जाये। पिता जी भी अजीब असमंजस में हैं। लेकिन मास्टर हरबंस लाल जी ने उनकी यह मुश्किल आसान कर दी है। उन्होनें दो टूक फैसला किया है कि पुष्पा की शादी पहले होगी और फिर ओमी की बारात रवाना होगी। मास्टर जी हमेशा मनमोहन जी को ओमी कह कर ही पुकारते हैं। मास्टर जी पूज्य माता जी और पूज्य पिता जी के स्नेह पात्र हैं-बिल्कुल अपने बच्चों की तरह ! पिता जी ने मास्टर जी का सुझाव मान लिया है।

इधर भाई मनमोहन कृष्ण ने खूब तरक्की की है। असिस्टैण्ट रजिस्ट्रार कोअपरेटिव सोसायटीज़ (पंजाब सरकार) से South East Asian Alliance of Coop. Soc. के जनरल मैनेजर के पद तक वह अपनी निष्ठा, लगन और ईमानदारी की सीढ़ियां चढ़ कर पहुंचे हैं। रास्ता कितना भी कठिन क्यों न हो वह हमेशा सच्चाई के रास्ते पर अडिग रहे हैं। उन्होनें कभी सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया।

मनमोहन जी की पत्नी वीणा के प्रति पूज्य माता जी अत्याधिक भावुक हैं और संवेदनशील भी। मां को अपने बेटे और बहुओं के प्रति जो स्नेह हुआ करता है, पूज्य माता जी उसके वशीभूत यह सोचती हैं कि वह वीणा को इतना प्यार देंगी कि वह अपने सब दुख भूल जायेगी। वह उसे कभी मां की ममता के अभाव को महसूस नहीं होने देंगी। इसलिए पूज्य माता जी ने अपना समस्त प्यार दुलार उस पर न्यौछावर कर दिया है।

मनमोहन जी की शादी से ठीक एक दिन पूर्व बहन पुष्पा की डोली ने प्रस्थान किया है। बारात को पलेटियर की कोठी में ठहराया गया है। कुल चालीस बारातियों को अति विशिष्ट सम्मान दे कर उनकी आवभगत की गई है। बहन पुष्पा के पति गेरा साहिब की शख्सियत बेशक रोब-दाब वाली क्यों न हो लेकिन वह बहुत ही नेक दिल इंसान हैं। मिलिटरी में बड़े पद पर आसीन होने के बावजूद भी बहुत सरल स्वभाव के हैं और धार्मिक कामों में बेहद रुचि रखते हैं। ऐसे रिश्ते-नाते किसी भी खानदान के लिए गौरव का प्रतीक होते हैं।

इस प्रकार शानो शौकत से होने वाली शादियों और बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर होने वाले खर्चे निश्चय ही घर की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। व्यापार में कितना ही जोखिम क्यों न उठाना पड़े मैं इन ख़र्चों में कोई कटौती नहीं करता। मेरा मानना है कि शिक्षा सफल जीवन को सशक्त आधार प्रदान करती है और समाजिक प्रतिष्ठा हमारी विश्वसनीयता को स्थापित करती है। घर की वित्तिय स्थिति के बारे में मैं अपने भाई बहनों, पूज्य माता जी-पिता जी और यहां तक कि अपनी सहधर्मिणी राज को भी कुछ नहीं बताता। मुझे अपने पुरूषार्थ पर भरोसा है और ईश्वर पर दृढ़ विश्वास !

इसी बीच श्री कृष्ण देव हाण्डा नैरोबी से भारत आये हैं। वैवाहिक विज्ञापन के माध्यम से हमने प्रेम बहन के लिए उनसे सम्पर्क स्थापित किया है। मनमोहन जी इन दिनों दिल्ली में हैं ओर उन्होनें एक होटल में उनसे भेंट की है। तदुपरान्त वह बहन प्रेम को देखने के लिए मोगा आये हैं। वे

लोग सुहेली भाषा बोल रहे हैं। हम उनकी बातें समझ नहीं पा रहे लेकिन लड़की उन्हें पसन्द है। मात्र आठ दिनों में प्रेम की शादी के तमाम काम सम्पन्न किये गये हैं। प्रेम के विवाह में जालन्धर से पुलिस बैंड बुलवाया गया है और पूरी शानो शौकत के साथ यह विवाह समारोह सम्पन्न हुआ है।

मेरे छोटे भाई हरि कृष्ण डाक्टर हैं। अपनी शादी के लिए उनकी एक मात्र शर्त है कि लड़की खूबसूरत होनी चाहिए। उनकी शादी जालन्धर में हुई है और उनकी पत्नी का नाम विवाहोपरान्त वीणू रखा गया है। मनमोहन भाई साहब की पत्नी का नाम भी वीणा और हरिकृष्ण की पत्नी का नाम भी वीणा है। इसलिए हरिकृष्ण की पत्नी को वीणू नाम दिया गया है। शादी के एक साल बाद ही वे दोनों नैरोबी (कीनिया) चले गये हैं। प्रेम चूंकि कीनिया (नैरोबी) में ही है इस लिए हरि को इससे बहुत सहारा मिला है।

व्यापारिक दृष्टि से ये दिन मेरे धैर्य की परीक्षा के दिन हैं। गर्दिश के ये दिन-जिसकी पीड़ा को मैं चुपचाप आत्मसात कर रहा हूं। मेरी यह आदत रही है कि मैं दुख नहीं खुशियां बांटने में यकीन रखता हूं। मैं सपने देखता हूं और अपने सपने साकार करने के लिए पुरूषार्थ करता हूं। अपने भाई-बहनों और परिवार के सभी सदस्यों के मुस्कराते हुए चेहरे देख कर अपने सब दुख भूल जाता हूं।

मेरा मानना है कि शिक्षा सफल जीवन को सशक्त आधार प्रदान करती है और समाजिक प्रतिष्ठा हमारी विश्वसनीयता को स्थापित करती है।

1954 में आर्य समाज मोगा की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर पूज्य पिता जी एक बहुत बड़े समारोह का आयोजन कर रहे हैं। आर्य समाज के सभी सदस्य अत्याधिक उत्साह के साथ इस सम्मेलन की तैयारी कर रहे हैं।

मेरी व्यस्ततायें भी बढ़ गई हैं। पूज्य पिता जी की आंखों की ज्योति पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। लेकिन वह बिना इसकी परवाह किये अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। एक दिन प्रात: कालीन सत्र में डा. मथुरा दास भी आये हुए हैं। उन्होनें पूज्य पिता जी की आंखों में झांक कर आने वाले खतरे का अनुमान लगा लिया है। आंखों में काला मोतिया है जिसका तुरन्त आप्रेशन किया जाना बहुत जरूरी है लेकिन पिता जी आर्य समाज के सम्मेलन को बीच मंझधार में छोड़ कर जाने के लिए तैयार नहीं हैं। साधु-संन्यासी उपदेशक और आर्य विद्वानों की उपस्थिति में आर्य समाज का यह ऐतिहासिक समारोह सम्पन्न होने के बाद ही पूज्य पिता जी ने अपनी आंखों का आप्रेशन करवाया। लेकिन बहुत ही कम रौशनी दिखाई दी। इस बात से घर के सभी लोग फ़िकरमन्द हैं और उदास भी । थोड़ी बहुत जो रौशनी शेष बची है, पूज्य पिता जी उसी से काम चला रहे हैं। परन्तु अनवरत परिश्रम से अन्तत: उनकी आंखों की शेष रौशनी भी जाती रही। इस हादसे ने पिता जी के जीवन को तो अन्धकारमय कर ही दिया। हमारे धीरज को भी परीक्षा की घड़ी में डाल दिया है। अगरचे मैं लगातार मेहनत कर रहा हूं पर आखिर कब तक ! कर्म के इस समराँगण में मैं अपने अस्तित्व की यह लड़ाई कैसे लड़ रहा हूं, इसे केवल मैं ही जानता हूं।

आखिरकार हमने तेल सरसों के उत्पादन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। जम्मू आफिस से अच्छा रिसपाँस मिला है। लेकिन वहां खुशीराम

का काम सन्तोषजनक नहीं है। इससे कुछ ज्यादा लाभ नहीं हो रहा। पिता जी की आंखों की ज्योति चले जाने से भी मैं अपने आपको अधूरा अनुभव कर रहा हूं। इन्हीं विवशताओं के दृष्टिगत सन 1956 में अवतार कृष्ण को पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा है। बी. ए. पास करने के बाद वह एम. ए. की तैयारी कर रहे हैं। लेकिन उन्हे पढ़ाई बीच में ही छोड़ कर जम्मू जाना पड़ा। अवतार जी के वहां चले जाने से काम में सुधार हुआ है।

वर्ष 1961 तक पूज्य पिता जी फर्म और फर्म से जुड़ी तमाम दुख तकलीफों के Sole Prop. थे। लेकिन 1 अप्रैल 1961 में उन्होनें इस फर्म को पार्टनरशिप फर्म में तबदील कर दिया है। अब इस फर्म के चार बराबर के हिस्सेदार हैं। (1) पूज्य पिता जी -लाला देवी दास पुरी (2) मैं-केवल कृष्ण पुरी (3) अवतार कृष्ण पुरी (4) जितेन्द्र कृष्ण पुरी।

लेकिन हमारी चिन्तायें यथावत हैं। इसमें हमारी निष्ठा, लगन, परिश्रम ओर समर्पण में से किसी का भी कुछ दोष नहीं है। दरअसल हमारी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा बच्चों की पढ़ाई लिखाई, विवाह शादियों अथवा स्थाई सम्पत्ति निर्मित करने पर खर्च हो जाता है। इस प्रकार व्यापार के लिए हमेशा धनाभाव बना रहता है। हम यह सूरते हाल बदलने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

लेकिन पूज्य पिता जी की आँखों की रौशनी चले जाने के बाद घर में सबसे बड़ा होने के कारण मेरी ज़िम्मेदारियां भी कुछ बढ़ गई हैं। जम्मू में अवतार जी भी जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं। मोगा फैक्ट्री का काम मैं सम्भाल रहा हूं। मुझे विश्वास है कि हमारा परिश्रम और पुरूषार्थ निश्चय ही हमें बुलन्दियों तक ले जायेगा। माता-पिता के प्रति श्रद्धा और सेवा भाव, ईश्वर पर विश्वास और पुरूषार्थ ही वस्तुत: सफलता का मूल मन्त्र है। मैं अपनी मान्यताओं और सिद्धान्तों पर दृढ़ता से कायम हूं। मेरा ऐसा विश्वास है कि सद्‌मार्ग पर चलने वालों के लिए एक न एक दिन ईश्वर सौभाग्य के द्वार खोल देते हैं।

अवतार जी के लिए जम्मू से भी रिश्ते आ रहे हैं और मोगा से भी। जम्मू के लिए तो पिता जी बिल्कुल मानने को तैयार नहीं है। हां मोगा से डा. वींरेन्द्र चाटले की बेटी पूनम के रिश्ते को लेकर वह काफी उत्साहित हैं। पूनम, सुदेश, स्वर्ण... ये सब आर्य कन्या पुत्री पाठशाला में पढ़ी हैं और एक दूसरे को अच्छी तरह जानती हैं। इसलिए सबको पूनम पसन्द हैं। अवतार जी जम्मू में जिस उत्साह से कारोबार कर रहे हैं उससे जम्मू के लोग भी उनके प्रति आकर्षित हैं लेकिन पूज्य पिता जी का ख्याल है कि कारोबार के कारण वहां के लोग अवतार जी में रुचि प्रदर्शित कर रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि हम अपना बेटा और कारोबार दोनों से हाथ धो बैठें। इसलिए बेटी पूनम के लिए चिरंजी लाल जी चाटले जो कि मिशन स्कूल में सुपरिण्टैण्डैण्ट हैं-उन्होने जो प्रस्ताव रखा है पिता जी उसके लिए मान गये हैं इस प्रकार पूनम हमारे घर की इज़्ज़त और बहू बन कर हमारे घर आई है।

घर में विवाह शादियों के प्रसंग मेरी ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा है। हमारी खुशियों के ये मांगलिक अवसर निश्चय ही हमारे जीवन स्तर को प्रभावित करते हैं। इन बहुआयामी प्रभावों ने हमेशा मुझे आगे बढ़ कर चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित किया है। अगरचे विवाह शादियों के संयोग तो परम पिता परमात्मा ही सुनिश्चित करते हैं। लेकिन बड़ा होने के नाते मैं हमेशा पूज्य पिता जी के प्रत्येक निर्णय को खुशअसलूबी के साथ पूरा करने के लिए कटिबद्ध रहता हूं। स्वयं परम पिता परमात्मा मेरे मन में उत्साह और उमंग का संचार कर देते हैं।

इसी बीच 2 दिसम्बर 1960 को स्वर्ण बहन की शादी श्री विजय खन्ना के साथ सम्पन्न हो रही है। श्री विजय खन्ना इन दिनों अपनी सर्विस के सिलसिले में कलकत्ता में हैं। मगर बाद में तो उन्होनें भी एक व्यवसायी के रूप में खूब नाम कमाया और आजकल विन्ध्याचल डिसटिलरी चला रहे हैं। मैं खुश हूं। मेरे भाई बहन अगर अपनी घर गृहस्थी में खुश हैं तो इससे ज्यादा मेरे लिए खुशी की बात और क्या होगी।

यहां प्रसंगवश मैं यह बताना चाहूंगा कि स्वर्ण की शादी के लगभग दो वर्ष बाद 1962 में भारत और चीन के मध्य जो जंग शुरू हुई है उससे हमारी मुश्किलें बढ़ गई हैं। व्यापार और कारोबार पर भी ये बातें असरन्दाज़ हुई हैं। हमें भी इन विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है।

इन संगीन हालात में भी अगर हमारी फर्म पर कोई आंच नहीं आई है तो मैं इसे ईश्वर के प्रति हमारी निष्ठा, विश्वसनीयता, व्यापार में, व्यवहार की पवित्रता को ही श्रेय दूंगा। बेशक वे लोग कि जिनका रूपया हमारे पास जमा है, उन्हें हम पर पूर्ण भरोसा है। लेकिन मन की गति और वक्त की गर्दिश पर कौन भरोसा कर सकता है। समुद्र में तूफान आता है तो बड़े बड़े जहाज़ डगमगा जाते हैं। लेकिन पूज्य माता जी और पूज्य पिता जी का आशीर्वाद तथा ईश्वर कृपा से मेरा मनोबल और आत्मबल इन परिस्थितियों में भी अडिग रहा। साहस और धीरज के चप्पुओं से ही किश्तियां पार उतरती हैं।

अब जबकि बहन सुदेश की शादी हो रही है (स्वर्ण की शादी के लगभग दो वर्ष बाद) 4 अक्तूबर 1962 को तो मेरे लिए प्रतिकूल परिस्थितियां भी कुछ मायने नहीं रखतीं। सुदेश घर में सबसे छोटी है। इसलिए हम सब उससे बहुत प्यार करते हैं। मुझे तो वे दिन भी याद हैं जब वह कालेज में पढ़ती थी।उन दिनों हमारे घर के सामने पलेटियर साहब की कोठी थी। जिनकी अपनी चार बेटियां थीं। मेरी बहनें अक्सर उनके घर आया जाया करती थीं। परस्पर प्यार और छोटी-छोटी बातों पर नोंक-झोंक और तकरार आम बात थी। आज उसी सुदेश के विवाह की बात चली है तो मैं भावुक हो गया हूं। श्री वीर सैन नन्दा एयर फोर्स में हैं। मैं और पूज्य माता जी लड़का देखने के लिए दिल्ली आये तो हमें बताया गया कि लड़के की माता जी अपने चुनाव के प्रति बहुत दृढ़ रहती हैं। इसलिए हम अनिश्चय की स्थिति में ही थे लेकिन सुदेश को उन्होनें देखते ही पसन्द कर लिया।

मैं जहाँ खुश हूं वहाँ इस बात से काफी सन्तुष्ट हूं कि पूज्य पिता जी अपनी जिन

ज़िम्मेदारियों के प्रति सदैव चिन्तित रहते हैं। ईश्वर कृपा से वे सब बहुत ही सहजता और सरलता से सम्पन्न हुई हैं।

सुदेश सपरिवार इण्गलैण्ड में रहती है। वह खुश है, सुखी है। अक्सर वीर जी और सुदेश हमारे पास हमें मिलने मोगा आते हैं तो न जाने कितनी भूली बिसरी बातें याद करके हम लोग खुश हो लेते हैं। शायद ज़िन्दगी का कुल जमा हासिल यही है। भूत, भविष्य और वर्तमान के झूले पर झूलते हुए वक्त किस तेज़ी के साथ गुज़र रहा है–कुछ पता नहीं चलता।

व्यापार की स्थिति यह है कि श्रीनगर में तमाम उगराही खतरे में पड़ गई है। डिपाज़िट विदड्रा होने लगा है। इस संकट से उबरने के लिए हम सभी अपने हाथ पांव मार रहे हैं। मोगा में मैं और जम्मू काशमीर में अवतार जी उगराही वसूल करने के लिए भरसक प्रयास कर रहे हैं। मैनें कुछ रूपया अपने दोस्तों से उधार लिया है। मनमोहन जी ने हमारी बहुत बड़ी सहायता की है।

मेरे जीवन का इतिहास अनेकानेक घटनाओं का उलझा हुआ ताना बाना है। इन दिनों इसे खोलने-सुलझाने में वक्त गुज़ार रहा हूं अतीत के रंग बिरंगे और बदरंग दिनों को वर्तमान में पुन: पुन: जीने की प्रक्रिया में काग़ज़ों के कैनवास पर शब्दों के चित्र बना रहा हूं। इन्हें देख कर कभी खुश हो लेता हूं तो कभी उदास हो जाता हूं। शायद सबकी ज़िन्दगी कमोबेश इसी तरह से गुज़रती है।

मेरे सबसे छोटे भाई मै: देवी दास गोपाल कृष्ण के हमारे पार्टनर श्री जितेन्द्र कृष्ण बी. ए., एल. एल. बी. करने के उपरान्त 1964 में हमारे कारोबार में बाकायदा शामिल हो गये हैं। व्यापारिक आपात स्थिति में से उबरने के लिए उनका आना एक शुभ लक्षण है। वक्त की ज़रूरत भी। पूज्य पिता जी ने, अवतार जी ने और मैनें यह फैसला किया है कि हमें केवल श्रीनगर (जम्मू-काशमीर) पर ही आश्रित नहीं रहना चाहिए। राजनीतिक अस्थिरता और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव पूर्ण परिस्थतियां कभी भी हमारे लिए खतरनाक हो सकती हैं। इसलिए हमें हिमाचल में काम शुरू करना चाहिए। पूज्य माता जी ने हमारा साथ दिया है। श्री जितेन्द्र कृष्ण के लिए पठानकोट आफिस खोला गया है। लगभग 20-25 रूपये मासिक किराये पर एक कमरा ले कर आफिस खोला गया है। भाई जितेन्द्र कृष्ण ने वहां अपने पांव जमाने के लिए सख्त मेहनत शुरू कर दी है। घर के एक और सदस्य के आ जाने से स्थिति में सुधार हुआ है। बिज़नेस के आकाश में जितेन्द्र जिस प्रकार अपने पर तोल रहा है, उससे सम्भावनाओं का क्षितिज और विस्तृत हो रहा है।

मैं अपने भाई बहनों में से इस घर में सबसे बड़ा हूं। पिता जी, आंखों की रौशनी से महरूम हो चुके हैं। कारोबार फल फूल रहा है। बेशक हालात आगे से सुधर रहे हैं। सच्ची बात तो यह है कि कारोबार में अनेक झमेले होते हैं। ऐसे ही फैक्ट्री एक्ट के एक केस के लिए मुझे कल फिरोज़पुर जाना है। पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी विदेह भी इन दिनों फिरोज़पुर आये हुए हैं। स्वामी जी से मिलने के लिए पूज्य माता जी ने अपनी इच्छा प्रकट की है। उनका मन है कि मैं उन्हें अपने साथ फिरोज़पुर लेता चलूं। स्वामी जी के प्रति उनके मन में अतीव श्रद्धा है। दूसरे ही दिन पूज्य माता जी और मैं फिरोज़पुर के लिए रवाना हुए हैं। मैं पूज्य माता जी को साथ ले कर जब आर्य समाज फिरोज़पुर पहुंचा तो मुझे पता चला कि स्वामी जी डा. साधु चन्द विनायक के निवास स्थान पर ठहरे हुए हैं। मैं पूज्य माता जी को डाक्टर साहब के घर छोड़ आया हूं।

पूज्य माता जी स्वामी जी के पास रुक गई हैं और मैं कचहरी अपने काम से चला आया हूं। कचहरी के काम से मैं अनुमानत: 3 बजे बाद दोपहर फारिग हुआ हूं। मैं पूज्य माता जी को लेने डा. साहब के घर चला आया हूं। अभी थोड़ी फुरसत मिली है तो मैं 5-10 मिण्ट स्वामी जी के पास बैठा हूं। पता नहीं स्वामी जी के मन में क्या आया कि उन्होनें बड़ी ही गम्भीर मुद्रा में मुझे सम्बोधित करते हुए कहा... केवल जी ! मेरा विचार है कि जितेन्द्र बेटे की शादी डा. जी की बेटी इन्दु के साथ कर दी जाये।

यह उनका आदेश है अथवा सुझाव है ? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या उत्तर दूं। मैनें माता जी की ओर देखते हुए स्वामी जी के चरणों में प्रार्थना की कि हम लोग मोगा जा कर पूज्य पिता जी से सलाह मशविरा करके ख़बर भेज देंगे। इस पर पुन: स्वामी जी ने कहा-केवल जी ! मैं आपके घराने को जानता हूं और आपके पिता जी को भी जानता हूं। आप जो फैसला करेंगे उसे सुन कर आपके पिता जी निश्चय ही खुश होंगे।-मैं अजीब असमंजस में हूं। इतना बड़ा फैसला मैं कैसे कर सकता हूं। मैनें पूज्य माता जी से पूछा तो उन्होनें कहा कि जैसे तेरी मर्ज़ी। मैनें माता जी से कहा कि ये काम आपके व पिता जी के हैं। स्वामी जी ने मेरी बात काटते हुए कहा... केवल जी ! पहले भी सब काम पिता जी के आप ही करते हैं। मैं यह सुनकर निरुत्तर हो गया हूं। मुझे उन्हें हां कहना ही पड़ा। पूज्य माता जी ने भी मेरी हां पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी।

मोगा आ कर जब मैनें यह पूरी राम-कहानी पूज्य पिता जी को बताई तो वह बहुत खुश हुए। उन्होनें मेरी सराहना करते हुए क्या कहा... अब क्या बताऊं। पिता जी के उद्‌गार सुन कर मैं

गौरवान्वित हुआ हूं। जितेन्द्र की शादी हम सबके लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वह उम्र में हम सबसे छोटा है। डा. साधु चन्द विनायक फिरोज़पुर की एक ऐसी शख्सियत हैं कि पूरे फिरोज़पुर शहर में लोग उन्हें इज्ज़त की निगाह से देखते हैं। ऐसे प्रतिष्ठित परिवार के साथ हमारे पारिवारिक सम्बन्ध हमारे लिए गौरव की बात है। सबसे बड़ी खुशी की बात तो यह है कि दोनों आर्य परिवार हैं। इन्दु जैसी सुशील सुन्दर पढ़ी लिखी और व्यवहार कुशल बेटियां तो घर की शोभा होती हैं। पूज्य माता जी की यह इच्छा है कि जितेन्द्र की शादी के सब इन्तज़ाम भव्य ढंग से होने चाहिए। वर्ष 1964 में परम्परानुसार पूरी शानो शौकत के साथ यह विवाह सम्पन्न होने जा रहा है। इस शादी पर भी शाहाना खर्च हो रहा है। मैं सबसे प्यार करता हूं। इस लिए सब मुझसे बहुत प्यार करते हैं और मुझ पर विश्वास भी करते हैं। वह सोचते हैं कि मैं सबकी ज़रूरतें पूरी कर सकता हूं। ईश्वर करे कि यह परस्पर प्यार और विश्वास का वातावरण हमेशा बना रहे।

मैं सबसे प्यार करता हूं। इस लिए सब मुझसे बहुत प्यार करते हैं और मुझ पर विश्वास भी करते हैं। वह सोचते हैं कि मैं सबकी ज़रूरतें पूरी कर सकता हूं। ईश्वर करे कि यह परस्पर प्यार और विश्वास का वातावरण हमेशा बना रहे।

विवाहोपरान्त जितेन्द्र जी इन्दु बेटी के साथ कुछ समय जम्मू में रहे। लेकिन अन्ततः पठानकोट चले आये हैं क्योंकि पठानकोट आफिस की तमाम ज़िम्मेदारी उनकी है। हिमाचल प्रदेश हमारे सपनों की ज़रखेज़ ज़मीन उनकी प्रतीक्षा कर रही है। वह इन्दु सहित पठानकोट पहुंच गये हैं। काम बढ़ाने के लिए वह दिन रात मेहनत कर रहे हैं। जितेन्द्र की कार्यशैली ही कुछ ऐसी है कि उसने आँधी-तूफान की तरह अपने काम सरन्जाम दिये हैं। 1967 में मलिकपुर में पैट्रोल पम्प लगा कर उसने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। पैट्रोल पम्प के लिए उसने ज़मीन कैसे हासिल की यह भी एक लम्बी कहानी है। बाद में उसने 'मण्डी' में आफिस खोला है जहां 'P' मार्का तेल की बिक्री की व्यवस्था की गई है। तत्पश्चात उसने 'भुन्तर' में एक और आफिस खोला है। एक के बाद एक उसकी नई नई उपलब्धियों से हम आश्चर्य चकित हैं।

कुल्लु में पैट्रोल पम्प के लिए ज़मीन हासिल करने के लिए उसे बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। अन्य पैट्रोल पम्प वाले जितेन्द्र को कुल्लु में पम्प के लिए ज़मीन लेने के रास्ते में नई नई अड़चने पैदा कर रहे हैं। वे कहीं भी ज़मीन का सौदा नहीं होने देते। आख़िरकार जब एक जगह ज़मीन के लिए सौदा तय हुआ तो जितेन्द्र ने वहीं उसी होटलमें बैठ कर तुरत फुरत उस जगह की रजिस्ट्री भी करवा ली, जहां बैठ कर यह सौदा तय हुआ है। रात के दस बज गये हैं। जितेन्द्र ने इत्मिनान की साँस ली है। मुझे जब पता चला तो मैं जितेन्द्र की हिम्मत, कार्य कुशलता और दक्षता से अत्याधिक प्रभावित हुआ हूं। ये काम इतने आसान नहीं होते। इस काम में कितनी वैधानिक मुश्किलें पेश आई हैं और उन सब मुश्किलों का समाधान जितेन्द्र ने जिस हिम्मत और बुद्धिमत्ता के साथ किया है वह भी अद्वितीय है। अवतार जी तो जम्मू काश्मीर में इतने व्यस्त हैं कि उनके पास हिमाचल की ओर ध्यान देने का समय नहीं है। लेकिन मैं तो वहां पल पल की खबर रखता हूं। यह ज़रूरी भी है।

जितेन्द्र का हौंसला बुलन्द रहे, इस ख्याल से मैं कभी कभी उसके पास कुल्लु अथवा मण्डी चक्कर लगाता रहता हूं। वह समझता है कि अभी उसे मेरे मार्ग दर्शन की ज़रूरत है। इस लिए मैं भी अपना फ़र्ज मान कर उसके काम पर नज़र रखता हूं। उसकी हर सम्भव सहायता करता हूं। वह बहुत ही मेहनती और लगन वाला इन्सान है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर कृपा से वह निश्चित रूप से सफल होगा। जितेन्द्र की मेहनत से काम दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। वह कुल्लु में पैट्रोल पम्प के साथ साथ 'P' मार्का तेल सरसों के लिए बहुत काम कर रहा है। पठानकोट आफिस तथा मण्डी में 'P' मार्का तेल सरसों की बिक्री पर्याप्त रूप से हो रही है। वह अब कुल्लु–मनाली में भी 'P' मार्का तेल की मार्किट तैयार कर रहा है।

कुल्लु में जितेन्द्र होटल में एक कमरा किराये पर लेकर इन्दु के साथ रह रहा। इन्दु किस कदर जितेन्द्र का साथ दे रही है मैं यह देख कर हैरान हूं। एक कमरे में रहना, खाना बनाना, कपड़े धोने के लिए नीचे दरिया पर जाना। ये कोई मामूली बात नहीं है। मैं और अवतार जी जिस समय मोगा और जम्मू में अपनी अपनी कोठियों में बड़े आनन्द से जीवन बिता रहे हैं। ये पति और पत्नी दोनों संघर्ष के दौर में से गुज़र रहे हैं। मैं इन्दु बेटी के त्याग और उसकी तपस्या से अभिभूत हूं।

एक रात मैं लगभग 10 बजे कुल्लु पहुंचा हूं। अनुमानत: मैं 10 मील पैदल चल कर यहां पहुंचा हूं क्योंकि इस पहाड़ी मार्ग पर चट्टान टूट कर गिरने से रास्ता बन्द हो गया और मैं वहीं अपनी कार छोड़ कर पैदल कुल्लु चला आया। यहां घर आ कर क्या देखता हूं कि रात के 10 बजे हैं

और घर में इन्दु बेटी और नन्हा सा बेटा विक्की दोनों अकेले हैं और जितेन्द्र जी अभी तक अपने काम से वापिस नहीं लौटे। इन्दु बता रही है कि अक्सर ऐसा हो जाता है। उसके चेहरे पर न तो कोई घबराहट है और न शिकन ! बस इतना मात्र कहा कि दिन रात काम में लगे रहते हैं। बस उन्हें इतना कहें कि खाना समय पर खा लिया करें। भावनाओं की पावनता से मैं द्रवित हुआ हूं। जितेन्द्र की शादी को अभी कुछ ज्यादा समय नहीं हुआ है। किस तरह इन्दु बेटी ने एडजस्ट किया है–मैं यह सब देख कर हैरान हूं। जितेन्द्र लगभग आधे घण्टे बाद घर पहुंचे हैं। खाना खाते हुए सब रिपोर्ट दे रहें हैं। मुझे यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता होती है कि बहुत ही थोड़े समय में इन दोनों ने जो लोकप्रियता प्राप्त की है, उससे ये तमाम आफिसरज़ के स्नेह पात्र बन गये हैं।

हिमाचल में बड़ी तेजी से काम बढ़ रहा है। जितेन्द्र ने अपने कार्यकाल के प्रारिम्भक चार वर्षों में ही पहले पठानकोट आफिस खोला, मलिकपुर (1967) में पैट्रोल पम्प लगाया, मण्डी में आफिस खोला, भुन्तर में आफिस खोला और फिर कुल्लु में बड़ी मेहनत से पैट्रोल पम्प चालू किया और हर आफिस में बराबर काम हो रहा है। काम बढ़ रहा है और कमाई भी !

मैं 1960-61 से ही सरकार के साथ एक वैधानिक लड़ाई लड़ रहा हूं। उत्पादन कर और बिक्री कर की यह लड़ाई मैं कानूनी नुकता निगाह से लड़ रहा हूं। मैनें टैक्स का भुगतान रोक दिया है। ब्याज मुक्त इस राशि को मैनें कार्य पूंजी की तरह इस्तेमाल किया है। इस तरह मेरे पास लाखों रूपया एकत्रित हो गया है, जिससे फर्म को बहुत फायदा हुआ है।

दरअसल सर्वोच्च न्यायालय की ओर से भवानी कॉटन मिल के पक्ष में जो निर्णय हुआ है उसे आधार बना कर मैं यह संवैधानिक लड़ाई लड़ रहा हूं। कॉटन पर लगे उत्पादन कर को इस फर्म की ओर से न्यायालय में चुनौती दी गई थी। तर्क यह था कि रूई का किसी भी स्तर पर उत्पादन नहीं होता। यह तो कपास में से रूई और बिनौले को पृथक पृथक करने की प्रक्रिया है, इस लिए इस पर उत्पादन कर लगाना न्याय संगत नहीं हैं। उस समय यह केस बहुत ही चर्चित हुआ और मेरे दिमाग में यह बात घर कर गई कि रूई की ही तरह हम लोग जो सरसों-तेल तैयार करते हैं वह भी सरसों में से निकाला जाता है। सरसों में तेल तो पहले से ही मौजूद होता है। हम तेल उत्पन्न नहीं करते बल्कि सरसों में से तेल और खल को पृथक पृथंक करते हैं। मैनें श्री अमृत लाल जी ज़ीरा वालों के सामने अपना यह तर्क रखा तो उन्होनें मेरा समर्थन किया और उपरोक्त केस को आधार बना कर मुझे अपील दायर करने के लिए प्रोत्साहित किया। मैनें अपील की तो मेरी यह अपील मन्जूर हो गई। मुझे स्टे मिल गया और मैनें टैक्स का यह रूपया अदा करना बन्द कर दिया। इसी प्रकार क्रय कर (परचेज़ टैक्स) को भी मैनें चुनौती दी। मेरा तर्क यह था कि हम सरसों के प्राथमिक खरीददार नहीं हैं। सरसों की खरीद चूंकि कमिशन एजेण्ट करते हैं, इस लिए यह टैक्स हम पर देय नहीं है।

यह लड़ाई बुद्धि कौशल की है। मैं यह लड़ाई लड़ रहा हूं। इस बात की पूरी व्यवस्था करके कि अगर मैं यह केस हार जाता हूं तो टैक्स की पाई पाई सरकार को अदा करूंगा। मैनें अपनी ज़िन्दगी में कभी कोई असंवैधानिक काम नहीं किया है। धोखा कपट और छल का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। मैं ज्यादा पढ़ा लिखा तो नहीं हूं लेकिन मैनें अपनी बुद्धि और विवेक से टैक्स के इस पैसे को अपनी आय के स्रोत बढ़ाने में झोंक दिया है, जिस पर कि सरकार अपना हक समझती है। यह मेरी बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इस रुपये को मैं कैसे रोक पाया और इस रास्ते पर मुझे कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा, अगर मैं यह सब लिखने बैठूं तो सिर्फ इसी एक घटना पर एक किताब लिखी जा सकती है। एक बार तो ऐसा अवसर भी आया कि मेरे एरेस्ट होने के आसार बन गये। मैं दो-एक दिन मोगा से बाहर रहा लेकिन काम पर पूरी निगाह रखता रहा। कर अदायगी के लिए विभाग अपना दबाव बनाये हुए है। कानूनन भी और अन्यान्य हथकण्डों से भी। लेकिन मैं तो कानून में विश्वास रखता हूं। अगर कानून मेरे हक में हुआ तो यह मेरी एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी और अगर नहीं तो मैं कानून में आस्था रखने वाले जिम्मेवार नागरिक की तरह टैक्स का एक एक पैसा अदा करूंगा। इसी दृढ़ता से मैं यह लड़ाई लड़ रहा हूं।

इस बार तो विभाग ने अपने 30-35 कर्मचारियों के साथ हमारी फर्म पर जैसे धावा ही बोल दिया है। खूब तंग किया है। जाते समय विगत चार वर्ष का तमाम रिकार्ड अपने साथ ले गये हैं। मैनें उन्हें पूर्ण सहयोग दिया है। एक एक किताब पेश की है और जो रिकार्ड वे लोग अपने साथ ले कर गये हैं उसकी भी रसीद उनसे ली है। फिर क्या हुआ... इस लम्बी कहानी को यहीं विराम देकर मैं यह बताना चाहूंगा कि यह कोई ईश्वरीय शक्ति ही थी जो मेरी रक्षा कर रही थी और जिसकी प्रेरणा से मेरे लिए सफलता के द्वार खुलते चले गये। फर्म ने सुख की सांस ली है। यह तो ईश्वर की बड़ी कृपा थी वरन टैक्स रोकने का यह जोखिम भरा काम कुछ इतना आसान नहीं था।

टैक्स का यह रुपया हमारे सिर पर है। इस लिए पूज्य पिता जी बहुत फिकरमन्द रहते हैं। वे अक्सर कहते हैं कि यह बोझ बढ़ता चला जा रहा है इसको हम और ज्यादा न बढ़ायें। बल्कि हमें इसे कम करना चाहिए। क्योंकि आखिरकार हमें यह अदा करना ही पड़ेगा। मैं पूज्य पिता जी की इस बात से सहमत हूं कि अगर हम यह केस हार जाते हैं तो निश्चित रूप से हमें टैक्स का यह रूपया अदा करना पड़ेगा। कानूनी दांव पेंच से अभी मैं इस रूपये को अपनी आय के स्रोत बढ़ाने में खर्च कर

रहा हूं। इस बीच 1974 में I. C. Puri का यानि Tribunal का फैसला हमारे हक में हो गया है जिससे कुछ उम्मीद हुई है कि शायद यह रूपया देना ही ना पड़े। मैनें और भी गम्भीरता के साथ यह Case लड़ने का मन बनाया है। पुन: स्पष्ट करना चाहूंगा कि मैनें कभी Sale Tax की एक रूपये की भी चोरी नहीं की और न ही कभी कोई दो नम्बर का काम किया है। यही कारण है कि लाख कोशिशों के बावजूद विभाग मुझे फसाने में असफल रहा। मैनें हिसाब किताब हमेशा शीशे की तरह साफ रखा है।

इस प्रकार से फर्म को जो फायदा हुआ है यह मेरी ज़िन्दगी की एक ऐसी उपलब्धि है कि जिसने हम सबके लिए सुख समृद्धि और ऐश्वर्य के द्वार खोल दिये हैं।

हिमाचल में भाई जितेन्द्र की अनथक कोशिशों से फर्म का काम प्रगति पर है। हमारे पास अब जो टैक्स का पैसा पड़ा है उसे हम कार्य पूंजी की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। जितेन्द्र बड़ा दूरन्देश है। उसका मन लाहौल-स्पीति में काम करने का बन रहा है। यह हमारे खानदान के लिए गौरव और मेरे लिए अपार प्रसन्नता का विषय है कि जिस दिन पहली बार पुरी ब्रदर्ज़ फर्म का मिट्टी के तेल का टैंकर किॅलांग पहुंचा तो वहां के लोगों ने उस टैंकर की पूजा की और उस टैंकर पर पुष्प मालाएं चढ़ाईं हैं। इससे पहले किॅलांग माल खच्चरों पर जाता था। जिसका बहुत ज्यादा किराया पड़ता था। यह सब तो जितेन्द्र की मेहनत से ही सम्भव हुआ है। केन्द्रीय सरकार की ओर से बहुत सी सुविधाएं मिलती हैं इसलिए जितेन्द्र किॅलाँग में काम करना चाहता है। उसके मन में कॉक्सर में पैट्रोल पम्प लगाने का है। उसने मुझसे मशविरा भी किया है। कॉक्सर रोहतांग दर्रा के पास है। यह स्थान ऐसा है कि यहां से एक रास्ता किॅलाँग को जाता है और दूसरा लेह को। इस प्वाइंट पर उसका मन पैट्रोल पम्प लगाने का है ताकि किलाँग और लेह दोनों जगह पर काम हो सके। यह जगह बहुत ऊंचाई पर है। अगर यहाँ पम्प लग जाता है तो यह इण्डिया में सबसे ऊंची जगह पर होगा। इस पैट्रोल पम्प के लिए ज़मीन की व्यवस्था के लिए वह किलाँग के दो-तीन चक्कर लगा चुका है। मिस्टर

मैनें अपनी ज़िन्दगी में कभी कोई असंवैधानिक काम नहीं किया है। धोखा कपट और छल का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

मुखर्जी किलाँग जिला के जिलाधीश हैं, उनसे मिलकर उसने कॉक्सर में पम्प लगाने के लिए ज़मीन अलाट करवा ली है। इधर वह इण्डियन ऑयल कारपोरेशन के अधिकारियों से मिल कर पम्प लगाने की मन्जूरी ले रहा है। दूसरी तरफ उसने कुल्लु में देव भूमि नाम की ट्रांसपोर्ट कम्पनी स्थापित की है। दो बसों के रूट परमिट भी प्राप्त कर लिये हैं। जितेन्द्र खुश है। उसने हिमाचल में काम को जो विस्तार दिया है उसके पीछे यही भावना है कि जम्मू काशमीर में हमेशा अनिश्चितता की स्थिति बनी रहती है। इससे व्यापार में स्थायित्व की सम्भावनाएं भी लड़खड़ाने लगती हैं। हम सब इस बात से हमेशा चिन्तित रहते हैं। जितेन्द्र ने इसी दृष्टि से हिमाचल में कारोबार बढ़ाने को वरीयता दी है।

अठाईस

ज़िन्दगी में कोई न कोई कसक तो हर वक्त इन्सान को परेशान रखती है। इस धरती पर शायद ही कोई ऐसा इन्सान पैदा हुआ हो कि जिसने दुनियां के इस बाग में केवल बहार देखी हो, कि जिसके आंगन में केवल खुशियों के फूल खिले हों। यहां तो फूल भी हैं और कांटे भी ! ख़िज़ां भी है और बहार भी !

मेरी ज़िन्दगी में भी ऐसी बहुत सी बातें है कि जो मेरे मनोनुकूल नहीं हैं। सपने लेने का हक तो सबको है लेकिन सभी सपने साकार हों यह ज़रूरी नहीं। सपने हमेशा खूबसूरत हों यह भी ज़रूरी नहीं। सुख-दुख के झूले पर सवार मैं स्मृतियों की लालटेन लेकर अपने अतीत की अन्धेरी गुफाओं में उतरता हूं।

गुज़रा हुआ वक्त जैसे पुन: अपने आप को दुहरा रहा है। विवाह मण्डप सजा हुआ है। घर में मेहमान आ रहे हैं। गोपाल भाई साहिब की बेटी रम्मी की शादी है। मेरे सिर पर गुलाबी रंग की पगड़ी बंधी हुई है।

आकर्षक लिबास के साथ साथ मैं अपने चेहरे पर उन्मुक्त मुस्कान ले कर अपने कमरे से बाहर निकला हूं। यह खुशियों का लबादा मुझे उस वक्त तक पहने रखना है जब तक कि सब मांगलिक कार्य व्यवहार सम्पन्न नहीं हो जाते। अन्दर कुछ जमी हुई बर्फ जैसा दर्द बार बार पिघलता है। मैं अपने आप को सम्भालता हूं। एक कोने में माईक पर बारात के स्वागत में

मा. हरबंस लाल जी भूषण अपनी नज़्म पढ़ रहे हैं। रात्रि भोज के बाद यह समारोह सम्पन्न हो रहा है। मैं थक चुका हूं। लेकिन अपना धर्म निभाने की प्रसन्नता और सन्तोष से कुछ हल्का अनुभव कर रहा हूं। वर्ष 1968 की यह मांगलिक रात मुझे सोच के जिस जंगल में ले गई है। वहाँ मजबूरियों के झाड़ झंखाड़ हैं। मैनें तो 1965-66 में जब अरुण (गोपाल भाई साहब का बेटा) इन्जीनियरिंग कर रहा था, यह सोचा था कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद कारोबार को सम्भाल लेगा। लेकिन ईश्वर को ऐसा मन्जूर नहीं था। बहरहाल वह जब पढ़ रहा था तो पूज्य पिता जी ने मुझे आदेश दिया था कि उसकी पढ़ाई के लिए दस हज़ार रुपये फर्म में से निकाल कर अलग रखे जायें। उनका आदेश था कि उसकी पढ़ाई में कोई व्यवधान नहीं आना चाहिए। परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों, अरुण की पढ़ाई तो हर हाल में होनी चाहिए।

दरअसल ऊषा भाभी जी गोपाल जी की मृत्यु के पश्चात सामान्य नहीं हो पाईं। किसी अज्ञात डर से आशंकित वह अतिरिक्त रूप से सावधान रहने लगीं। हालांकि पूज्य पिता जी ने उन्हें पढ़ा लिखा कर बर-सरे-सेज़गार बना दिया। वह सरकारी स्कूल में अध्यापिका के पद पर नियुक्त हो गईं। बेटा अरुण पढ़ लिख कर जवान हो गया। लेकिन कहीं बहुत भीतर असुरक्षा की भावना नें भाभी जी को असहज बना दिया। अरुण सुयोग्य बेटा है। महत्वाकांक्षी भी है। पूज्य पिता जी की हार्दिक इच्छा है कि उसे कारोबार में डाला जाये ताकि गोपाल जी के रिक्त स्थान की पूर्ति हो सके और उसकी यह फुलवारी फले फूले। लेकिन भाभी जी कारोबार में उसके भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं हैं। कारोबार में सुनिश्चितता की मांग से पूज्य पिता जी खुश नहीं हैं। इसमें भाभी जी का भी कोई दोष नहीं। मां का दिल ही कुछ ऐसा होता है और जिस के साथ त्रासदी घटित हुई हो उसके लिए तो यह सहज स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। पूज्य पिता जी के किसी फैसले में हस्तक्षेप करने का अधिकार तो मेरे पास नहीं है। लेकिन मेरे लिए जो कुछ भी सम्भव है मैं वह सब करने के लिए तैयार हूं।

अरुण विदेश जाना चाहता है। लेकिन पूज्य पिता जी उसके इस निर्णय से सहमत नहीं हैं। अरुण ने मुझसे कहा कि चाचा जी ! मैं बाहर जाना चाहता हूं। मैं उसकी उदासी को समझ सकता हूं। मैनें उसे हौसला दिया है और विश्वास दिलाया है कि मैं उसकी यह इच्छा पूरी करूंगा। मैनें अपना वादा निभाया भी। वह 1970 में अमरीका चला गया। 1973 में उसकी शादी जम्मू में हुई लेकिन मोगा में उसके स्वागत में शानदार रिसैप्शन दी गई।

ज़िन्दगी की तलख़ हकीकतों का सामना करते करते संघर्ष की भट्ठी में तप कर मैं कठोर हो गया हूं। मैं अपने लिए जितना कठोर हूं उतना ही ज्यादा दूसरों को दुखी देख कर द्रवित हो जाता हूं।

सम्भवत: मुझे दार्शिनकों की तरह सोचने का हक हासिल नहीं है। मेरे लिये तो हर कदम पर चुनौतियां मेरे धैर्य की परीक्षा लेने के लिए कमर कस कर खड़ी हैं। अभी अभी फोन से मुझे यह सूचना प्राप्त हुई है कि भाई जितेन्द्र की तबीयत खराब है और उसे कुल्लु अस्पताल में दाखिल करवाया गया है। मैं बहुत परेशान हो गया हूं। अभी कुछ ही दिन पूर्व मैं उसे मिल कर आया हूं। वह देव भूमि ट्रांसपोर्ट कम्पनी के लिए भारतीय स्टेट बैंक कुल्लु से दो बसें फायनैन्स करवाने के लिए प्रयत्नशील है। कॉक्सर में पैट्रोल पम्प के काम से बेहद खुश है। बहुत मेहनत कर रहा है। लेकिन अचानक उसकी तबीयत खराब हो जाने की खबर से घर में सभी लोग बहुत फिकरमन्द हो गये हैं। तुरन्त मैनें और राज ने कुल्लु जाने का फैसला किया और रात 9 बजे मोगा से चल कर प्रात: 4 बजे हम कुल्लु पहुंच गये। हम यहां सीधे सिविल अस्पताल पहुंचे हैं, जहाँ कि जितेन्द्र को दाखिल करवाया गया है। घर से दूसरे भाई-बहन और सम्बन्धी भी धीरे धीरे कुल्लु पहुंच गये हैं। जितेन्द्र हम सबसे छोटा है और सब उसे बहुत प्यार करते हैं।

जिस दिन उसकी तबीयत खराब हुई उस रात वह एक रात्रि-भोज से वापिस घर लौटा तो अचानक उसकी हालत बिगड़ने लगी। तुरन्त उसे अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा। इन्दु बेटी का सारा ध्यान जितेन्द्र के इलाज पर केन्द्रित रहा। यहां अकेली इन्दु बेचारी से जो कुछ बन पड़ा उसने किया।लेकिन दूसरे दिन भी जितेन्द्र की हालत में कुछ विशेष सुधार नहीं हुआ बल्कि हालत बिगड़ती चली गई। अन्ततः हमें सूचना प्राप्त होते ही हम भी कुल्लु पहुंच गये हैं। यहां पहुंचने पर हमें पता चला है कि जितेन्द्र का पैनक्रियाज़ काम नहीं कर रहा। यह बहुत गम्भीर स्थिति है। उसके लिये कुछ भी खाना पीना मुहाल है। सिविल अस्पताल के डाक्टर खुद परेशान हैं। बढ़िया से बढ़िया ट्रीटमैंट देने के बावजूद हालत कण्ट्रोल से बाहर होती जा रही है।आखिरकार उन्होनें हमें जितेन्द्र के इलाज के लिए आल इण्डिया मैडिकल इंस्टीट्यूट दिल्ली अथवा पी. जी. आई.चण्डीगढ़ शिफ्ट करने का सुझाव दिया।हम तो पहले से ही घबराये हुए थे। अब घबराहट का सबब यह भी है कि हमें अहसास होने लगा है कि जितेन्द्र बहुत ही ख़तरनाक बिमारी में मुब्तिला है।

कुछ ही दिनों में जितेन्द्र बहुत ही कमज़ोर हो गया है। इस हालत में उसे कार अथवा वैन से दिल्ली ले जाना और भी मुश्किल हो गया है। हमने उड्डयन मन्त्री डा. कर्ण सिंह से सम्पर्क स्थापित करके जितेन्द्र के लिए हवाई जहाज़ की व्यवस्था की है। इस जहाज़ में हम 21-22 लोग जितेन्द्र को अपने साथ लेकर दिल्ली के लिए रवाना हुए हैं। प्रातः सूर्योदय से पूर्व जहाज़ ने उड़ान भरी और लगभग आठ साढे आठ बजे के करीब हम लोग दिल्ली पहुंच गये। भाई मनमोहन कृष्ण डॉक्टरज़ की टीम के साथ हवाई अड्डे पर आये हुए हैं। तुरन्त जितेन्द्र को अस्पताल में दाखिल करके डाक्टरों ने उसका इलाज शुरू कर दिया है। यहां आ कर उसकी तबीयत कुछ संभलने लगी है। आहिस्ता आहिस्ता सुधार हो रहा है। आज कुछ, कल कुछ, परसों कुछ...। लगभग 15-20 दिन में वह इस काबिल हो गया है कि उठने बैठने लगा है। हम लोग उसका मन बहलाने के लिए उसके साथ ताश खेलते, गप्पें लड़ाते समय बिता रहे हैं।

बहुत दिन बीत गये हैं। ऐसा लगता है कि कुछ ही दिनों में जितेन्द्र बिल्कुल ठीक हो जायेगा। फिर भी एक डर अब भी मन में बना हुआ है।मुझमें हौंसला नहीं कि मैं उसे अकेला छोड़ कर मोगा आ जाऊं। हालांकि काम के दिन हैं और इन दिनों काम पर उपस्थित रहना बहुत ज़रूरी होता है। आखिरकार जितेन्द्र ने खुद ही मुझसे कहा है कि-भ्राजी दिवाली का त्यौहार नजदीक आ रहा है इन दिनों काम का भी दबाव रहेगा और वैसे भी आपको मोगा छोड़े हुए लगभग एक महीना होने को है। मेरे विचार में आपको अब मोगा जाना चाहिये। मैं ठीक हूं। जितेन्द्र ने हौंसला दिया है तो मैं मोगा

जाने के लिए तैयार हो गया हूं।

मैं और राज दोनों जितेन्द्र से मिल कर अस्पताल के मुख्य द्वार तक आ गये हैं। पता नहीं क्यों मेरे मन नें मुझसे कहा कि मुझे डाक्टर से परामर्श कर लेना चाहिये। मैं गेट से वापिस लौट आया हूं। डाक्टर साहब से मिलने गया तो उन्होनें मुझसे कहा कि मैं निश्चिन्त हो कर मोगा जा सकता हूं। अब जितेन्द्र बिल्कुल ठीक है, किसी प्रकार की कोई चिन्ता की बात नहीं है। मेरी घबराहट और परेशानी को हंसी में उड़ाते हुए डाक्टर साहब ने कहा कि मैं ज़रूरत से कुछ ज्यादा ही फ़िकरमन्द रहता हूं। बहरहाल डाक्टर साहब के आश्वासन पर पुन: हमने मोगा लौटने का निर्णय लिया और फिर मोगा के लिए चल दिये। पता नहीं क्यों मन में एक डर हमेशा बना रहा कि किसी वक्त कुछ भी हो सकता है। करवटें बदलते हुए यह रात बीत गई।

अगली सुबह फोन पर मधु से बात हुई तो उसने बताया कि इन्दु चाची अस्पताल गई हुई है। मन में आया कि इतनी सुबह अगर इन्दु जितेन्द्र के पास गई है तो हो न हो मसला गम्भीर है। पुन: मधु से बात हुई तो उसने कहा कि वह घर पर अकेली है शेष सभी लोग अस्पताल गये हुए हैं। तुरन्त हमने मोगा से दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। हम अस्पताल पहुंचे तो ज़िन्दगी और मौत के बीच जद्दोजहद के तमाम मरहले ख़त्म हो चुके थे। 22 अक्तूबर 1970 की यह मनहूस घड़ी हमें शोक के अथाह सागर में डूबने के लिए छोड़ गई। हमारे खानदान का वह चिराग़ जिसने हमें सूरज की रोशनी का आभास दिया था। हमेशा हमेशा के लिए बुझ गया। इन्दु बेटी का तो सुहाग ही लुट गया पूज्य माता जी और पिता जी की हालत क्या बयान करूं। हर तरफ मायूसी ही मायूसी है।

ज़िन्दगी की तलख़ हकीकतों का सामना करते करते संघर्ष की भट्ठी में तप कर मैं कठोर हो गया हूं। मैं अपने लिए जितना कठोर हूं उतना ही ज्यादा दूसरों को दुखी देख कर द्रवित हो जाता हूं।

जितेन्द्र के संसार छोड़ जाने के बाद अनेक समस्यायें खड़ी हो गई हैं। हिमाचल में हमारा कारोबार इस कदर बढ़ गया है कि अब उसे बन्द करना न केवल अव्यवहारिक है बल्कि ऐसा सोचना ही गलत है। बेशक अवतार जी सोचते हैं कि हमें अब हिमाचल में काम बन्द कर देना चाहिये। परन्तु न तो मैं इस बात से सहमत हूं न इन्दु बेटी ! इन्दु ने जितेन्द्र के अधूरे काम को पूरा करने का उत्तरदायित्व सम्भाल लिया है। हमारे घर में औरतें प्रत्यक्ष रूप से कारोबार में हिस्सा नहीं लेतीं। इन्दु की सक्रिय भागीदारी को यह घर किस हद तक स्वीकार करेगा, इस बात की बिना कोई चिन्ता किये इन्दु नें अपने मन की बात कह दी है। मैनें उसका समर्थन किया है। दरअसल हमने जिस बात को मद्देनज़र रख कर हिमाचल में काम शुरू किया था वे परिस्थितियाँ अब भी यथावत हैं। इसलिए केवल जम्मू काशमीर पर आश्रित रहना खतरे से खाली नहीं है। वहाँ 95% मुसलमान आबादी है और वे लोग पाकिस्तान के तरफ़दार हैं। इन परिस्थितियों में केवल काशमीर पर कैसे डिपैण्ड रहा जा सकता है। काम शुरू करने में कितनी कठिनाई होती है इसका अन्दाज़ा केवल वही लगा सकता है कि जिसने खून पसीना एक करके काम शुरूकिया हो। बन्द करना तो बहुत आसान है।

हिमाचल प्रदेश में जितेन्द्र ने जो काम शुरू किये हैं और जो सख्त मेहनत की है उसे मैं कभी भुला नहीं सकता। मैं देखता रहा हूं कि जितेन्द्र ने वहां जिस शिद्दत से काम शुरू किया है उससे न केवल हमें लाभ पहुंचा है बल्कि दृढ़ आधार प्राप्त हुआ है। अब इन्दु ने जब से कारोबार को सम्भाला है, मैं देख रहा हूं कि उसमें बहुत सी सम्भावनायें हैं। पूज्य पिता जी ने भी मेरी राय का समर्थन किया है।

इन्दु ने अपनी दृढ़ता और अनथक परिश्रम से सबको निरुत्तर कर दिया है। इन्दु चाहती तो उसके लिए और भी सुगम रास्ते थे लेकिन उसने जिस पथ पर चलने का दृढ़ संकल्प लिया, वह उसके त्याग, समर्पण और निष्ठा का मार्ग था। हमने उसे अपनी तरफ से जो सहयोग सम्मान और प्यार दिया उससे प्रोत्साहन पा कर उसने अपने आपको एक सफल कारोबारी महिला प्रमाणित कर दिया। इन्दु पढ़ी लिखी और विदुषी बेटी है। समाज ने भी उसे बराबर सम्मान प्रदान किया है। उसके अदम्य साहस के सामने तमाम मुश्किलें धीरे धीरे तिरोहित होती चली गईं। इन दिनों काशमीर के जो हालात हैं उसे देखता हूं तो सोचता हूं कि हिमाचल हमारी ढाल बन गया है।

अब तो ज़िन्दगी के प्रत्येक क्षेत्र में औरतों की भागीदारी पुरुषों से भी कहीं ज्यादा प्रभावशाली है। हमारे ज़माने में बेशक ऐसा नहीं था लेकिन आर्य-समाज ने जिस सामाजिक क्रान्ति का बिगुल बजाया था। उससे लड़कियों की शिक्षा से जो सामाजिक उत्थान हुआ है उसके लिए यह राष्ट्र महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का ऋणी है। हम ऐसे ही वातावरण में पैदा हुए, पढ़े-लिखे और बड़े हुए हैं। इन्दु ने जो एक आदर्श स्थापित किया है, निश्चय ही कामकाजी महिलाओं के लिए यह प्रेरणा स्तम्भ है। मैं तो अक्सर कहा करता हूं कि बेटियां ही हमारे समाज को दृढ़ आधार और स्वास्थय दृष्टिकोण प्रदान कर सकती हैं।

राजनीतिक परिस्थितियों की क्या कहूं। आतंकवादी मानसिकता ने जम्मू काशमीर और श्रीनगर को जिस तरह बरबाद किया है उससे हमारा व्यापार भी प्रभावित हुआ है। विगत वर्ष हम इस हद तक परेशान रहे कि श्रीनगर में हमारा रूपया रुक गया और हमें बड़ी मुश्किल पेश आई। अवतार जी के अतिरिक्त प्रयासों से स्थिति कुछ संभली ज़रूर लेकिन यहां खतरे के बादल तो हमेशा मंडराते रहते हैं और भविष्य भी कोई सुनिश्चित दिखाई नहीं देता। अब यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि हिमाचल में कारोबार को जारी रखने का हमारा फैसला कितना सही था।

अब तक की व्यवसायिक परिस्थतियां ऐसी हैं कि हमनें अपने पुरूषार्थ और काम करने के ढंग तरीके से व्यापार और सामाजिक स्तर पर जो सम्मान अर्जित किया है उस पर हमें गर्व है। हमारे आर्थिक स्त्रोत हमें जो ऐश्वर्य प्रदान कर रहे हैं उसे हमनें कभी भी विलासिता पर खर्च नहीं किया। कारोबार का पैसा कारोबार पर ही खर्च होता है और इस कमाई से हमने बहुत से Fixed Assets बना लिये हैं। सभी बच्चों की शादियां शानो शौकत के साथ की हैं। उन्हें शौक से पढ़ाया लिखाया और सबकी परवरिश पर बराबर ध्यान दिया है। नीति और नीयत दोनों कारोबार को प्रभावित करते हैं। हिसाब किताब में पारदर्शिता और पवित्रता ने मेरे पुरूषार्थ को फलीभूत किया है। मैं ईमानदारी के साथ अपना कारोबार कर रहा हूं। धीरे धीरे यह काम दूर दूर तक फैलता जा रहा है।

वर्ष 1972 में यह फर्म प्रा. लि. कम्पनी में तबदील हो गई है। 1968 को जब पुरी ब्रदर्ज़ फर्म बनाई गई थी। उस वक्त हम बहुत खुश थे। हमारे परिवार के लिए यह बात गर्व करने योग्य थी। उसके बाद हिमाचल में जब पंख फैलाये तो कुल्लु में पैट्रोल पम्प, पम्प के साथ वाली ज़मीन, मण्डी में दुकान, भून्तर में आफिस, मिट्टी के तेल के स्टोर, मलिकपुर में पम्प और

सर्विस स्टेशन वहाँ भी कैरोसीन ऑयल के लिए स्टोर, डमटाल में दुकानें, डमटाल मिल, फैक्ट्री के लिए मशीनरी। जम्मु काशमीर और हिमाचल के अतिरिक्त बहादुरगढ़ और दिल्ली आफिस की तमाम ज़िम्मेदारियां देवी दास गोपाल कृष्ण फर्म नें बाखूबी निभाईं। ये बातें बेमानी हैं कि किस आफिस ने कितना रूपया कमाया। एक फलदार दरख़्त का मूल्यांकन करते समय यह नहीं देखा जाता कि किस शाखा ने कितनें फल उगाये। दरख़्त की शाखाएं तो उस धरती की ओर झुक जाती हैं कि जहाँ से खाद पानी ले कर वह दरख्त फलों से लद गया है। इस लिए मैं तो सदा सर्वदा उस परमपिता परमात्मा की कृपा से अभिभूत हूं।

पूज्य पिता जी एक कहावत अक्सर कहा करते थे कि आदमी सब स्वाँग रचा सकता है पर रूपये का स्वाँग रचाना बहुत मुश्किल होता है। समय पर अगर उगराही का रूपया वसूल न हो तो सचमुच बहुत मुश्किल खड़ी हो जाती है। मुझे याद है कि 1982-83 में गुजरात की पार्टियों की सरसों का भुगतान समय पर न होने के कारण हमें दिक्कत पेश आई। जम्मु में इण्डियन ऑयल कारपोरेशन की एजन्सी, पैट्रोल पम्प और फ्लोर मिल पर काफी खर्च हो रहा था। मन में बस यही ख्याल रहता कि किसी तरह काम बढ़े और आय के स्त्रोत विकसित हों। हमारी सभी इकाईयां उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हों।

यादों के दरीचे में से झांक कर देखता हूं तो आत्म विश्लेषण करता हूं। मैं हैरान हो जाता हूं कि कैसे कैसे दुर्गम रास्तों से होता हुआ मैं इस मुकाम तक पहुंचा हूं। फर्म देवी दास गोपाल कृष्ण की पहली ब्रांच लाहौर में खुद मैनें खोली थी। दूसरी ब्रांच जम्मु में खोली गई, तीसरी ब्रांच मुंबई में। इसके बाद बहादुरगढ़ में मिल के लिए ज़मीन खरीदी गई जिसे बाद में चालू किया गया। पांचवीं ब्रांच दिल्ली में खोली गई। इसके बाद पठानकोट में आफिस खोला गया। ये तमाम मोगा आफिस की ब्रांचें हैं। इन शाखाओं को आत्म निर्भर बनाने के लिये मोगा आफिस ने अनथक प्रयास किये हैं अब जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह सब प्रभु की कृपा है।

पूज्य पिता जी ने बहुत मामूली स्तर पर काम शुरूकिया था। ये ज़मीन जहां कि अब कारखाना है एक छप्पड़ था। इसमें अन्दाज़ छः छः फुट मिट्टी आहिस्ता आहिस्ता डाली गई थी। यह जो रिहायश के लिए कोठी बनी है इसे 1971-72 में रैनोवेट किया गया। कॉटन फैक्ट्री की बिल्डिंग 1973 में बनी। टिन फैक्ट्री का हाल 1974 में बना और इस बिल्डिंग में 1975-76 में रद्दोबदल की गई। यह एक्पैलरों वाला हाल 1970-71 में मुकम्मल हुआ था। बाद में इसकी डबल स्टोरी बनी।

आहिस्ता आहिस्ता रद्दोबदल होती रही। ये आफिस 2006 में जिसे भव्य रूप दिया जा रहा है, 1974 में बना था। ये ज़मीन कुल जमा 8 कनाल थी। आज यह 21.5 कनाल के करीब है। ज़मीन में बिल्डिंग में, मशीनरी में व काम में ज्यादा विस्तार 1968-69 के बाद शुरूहुआ।

पहले शुरू में दो कोल्हू लगाये गये थे। फिर बढ़ कर ये बीस कोल्हू हो गये। ये नया हाल बनाया गया। इसमें सौ कोल्हू व दस एक्सपैलर कर दिये गये। अन्दाज़न 60 कोल्हू खुद ढाल कर फैक्ट्री में तैयार किये गये। तमाम एलिवेटर खुद फैक्ट्री में तैयार किये। बड़ी बड़ी चीज़ें फैक्ट्री में तैयार करता रहा। आय के स्त्रोत विकसित करता रहा। अब तो ईश्वर कृपा से लाखों नहीं करोड़ों से ऊपर की यह सम्पत्ति देख कर मन उस परम सत्ता के प्रति नत-मस्तक हो जाता है। हाथ में धन-दौलत हो तो कुछ भी सम्भव है। परन्तु यहाँ तो सख्त मेहनत और पुरुषार्थ को ईश्वर ने जो गरिमा प्रदान की है उसे बयान करना कम से कम मेरे लिए मुमकिन नहीं। ईश्वर की यह अनुकम्पा उस परम सत्ता के प्रति मेरी आस्था को दृढ़ आधार प्रदान करती है।

पूज्य माता जी और पूज्य पिता जी सामाजिक गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहे हैं। फिर चाहे वह आर्य समाज का मंच हो अथवा रैड क्रास के माध्यम से इन्सानियत के ज़ख्मों पर मरहम रखने का काम हो। मैंनें दोनों को सदैव अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए देखा है। दोनों एक ज़िम्मेवार नागरिक की तरह हमेशा अपने कर्त्तव्य और अपने अधिकारों के प्रति हमेशा जागरूक रहते हैं।

इन दिनों जहाँ नेहरू पार्क और कालान्तर में शहीदी पार्क दिखाई दे रहा है वहाँ एक बहुत बड़ा गढ्ढा था। नगरपालिका ने जब इस जगह पर मार्किट बनाने का फैसला किया तो इस बात का पता चलते ही पूज्य माता जी ने इसका विरोध किया। उन्होनें एक महिला संगठन बना कर इसके विरोध में जलसे जलूस और मुज़ाहरे किये। पूज्य माता जी का यह मत था कि इस स्थान पर पार्क बनाया जाये लेकिन समर्थ लोग इस स्थान पर मार्किट बनाने के लिए अड़े हुए थे। आर्थिक दृष्टि से बेशक यह बात लाभदायक होगी लेकिन नगर निवासियों के स्वास्थय की चिन्ता भी उन्हें अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति से विचलित नहीं कर पाई। अन्ततः पूज्य माता जी एक शिष्ट मण्डल को साथ लेकर शिमला में तत्कालीन सम्बन्धित मन्त्री से मिलीं और उनसे अपनी बात मनवा कर रहीं, अन्ततः यह निर्णय हुआ कि इस स्थान पर आधी जगह पर नेहरू पार्क बनाया जाये और शेष हिस्से में मार्किट और इसके बदले में शहर की पश्चिम दिशा में खुली जगह पर काशमीर पार्क का निर्माण किया जाये।

इसी प्रकार पूज्य पिता जी आर्य समाज और आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से आध्यात्मिक और शैक्षणिक गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहे। बड़े बड़े धार्मिक उत्सवों और यज्ञों में हमारा सारा परिवार हमेशा अग्रणी रहता। इस विरासत को मैंनें मन वाणी और कर्म से धारण किया है और मैंनें सदैव उनके नक्शे कदम पर चलने का प्रयास किया है। मैं पाश्चात्य सभ्यता की नकारात्मक बातों का ज़हर अपने समाज में फैलते हुए देखता हूं तो मुझे भविष्य की चिन्ता सताने लगती है। इसलिए सामाजिक बुराइयों का प्रतिकार करने के लिए मैं सदैव उन संस्थाओं के साथ भी सहयोग करता हूं कि जिनके साथ मेरी सैद्धान्तिक एकरूपता नहीं है।

राष्ट्रीय आपदाओं में इन्सानियत का दर्द मेरे मन में एक टीस पैदा करता है वह चाहे भूकम्प, अकाल, सूखा अथवा बाढ़ की स्थिति हो अथवा आतंकवाद का वहशियाना दौर हो। धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सन्दर्भों में मैं अपने कर्त्तव्य पालन के लिए सदैव तत्पर रहता हूं। शायद यही कारण है कि मोगा शहर ने मुझे इतना प्यार और सम्मान दिया है कि मैं इस ऋण से कभी उऋण नहीं हो पाऊंगा। इस शहर की लगभग सभी ग़ैरसरकारी स्वयं सेवी संस्थायें मुझसे सहयोग की आशा रखती हैं। मैं यथा समर्थ उन्हें अपना सहयोग देता हूं। मैंनें बिना किसी प्रतिफल की चिन्ता किये हमेशा उनके साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलने का प्रयास किया है।

मेरा यह निश्चित मत है कि अन्धेरे को मिटाने के लिए एक चिराग रौशन करना कहीं ज्यादा ज़रूरी है बनिस्बत इस बात के कि हम हर वक्त अन्धेरे की आलोचना करने में वक्त ज़ाया करें। इस लिए मैं हर उस चिराग का आदर करता हूं कि जिसने प्रतिकूल परिस्थतियों में भी अपनी लौ को मद्धम नहीं होने दिया। शिक्षण संस्थाओं के प्रचार प्रसार और विकास में, मैं हमेशा पूज्य पिता जी का साथ देता हूं क्योंकि शिक्षा का महत्व हमारे समाज के लिए बेहद ज़रूरी है क्योंकि शिक्षित समाज ही सभ्य और सुसंस्कृत समाज की संरचना का एक मात्र माध्यम है।

मुझे आर्य शिक्षण संस्थाओं के साथ सक्रिय सहयोग के लिए श्री वीरेन्द्र जी (सम्पादक वीर प्रताप) प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब नें स्वयं प्रेरित किया है। व्यवसायिक व्यस्तताओं में से मेरे लिए समय निकालना बेशक बहुत मुश्किल है। लेकिन यह काम भी बहुत ज़रूरी हैं... निस्संदेह मैं दुविधा में हूं। प्रि. आनन्द शंकर मिश्रा का आग्रह भी मुझे सोचने पर विवश कर रहा है। मैं सोचता हूं कि प्रबन्धक समितियों का माहौल मुझे रास आयेगा अथवा नहीं। निश्चय ही ये बातें उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं कि जितनी हमारी शैक्षणिक व्यवस्था के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी। वीर जी को मुझ

पर विश्वास है कि मैं सब संभाल लूंगा। मैं उनके विश्वास को चोट पहुंचाना नहीं चाहता। उनके समझाने बुझाने पर मैं मान गया हूं। मोगा की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं का बोझ मेरे कन्धों पर डाल कर वीर जी जैसे निश्चिन्त हो गये हैं। लेकिन यहाँ तो काम काज के बहुत झमेले हैं। मैं अब इस चुनौती से पलायन करने की स्थिति मे भी नहीं हूं।

डी. एम. कालेज आर्थिक संकट में हैं। आर्य पुत्री पाठशाला की स्थिति भी कुछ बहुत बेहतर नहीं है। सरकारी मान्यता प्राप्त स्कूलों की आय के स्त्रोत समिति हैं लेकिन खर्चे एक समान हो रहे हैं। कालेज की स्थिति तो यह है कि स्टाफ की तनख्वाह तक की व्यवस्था करने में प्रबन्धक समिति असमर्थ है। मुश्किल वक्त में मैं कोई न कोई रास्ता निकाल कर जैसे तैसे स्थिति को सम्भाल लेता हूं। लेकिन यह सब आखिर कब तक चलेगा।

बाद् में तो आर्य गर्ल्ज़ स्कूल की मदद् के लिए आर्य माडल स्कूल की स्थापना कर ली गई और मथुरादास ऐंग्लो संस्कृत हायर सैकण्डरी स्कूल के लिए डी. एन. माडल स्कूल बन कर तैयार हो गया। इन संस्थाओं से संतोषजनक आमदन होने लगी है। घाटे में चल रही संस्थाओं को परस्पर सहयोग द्वारा चलाया गया। शिक्षा के उच्चतम मूल्यों की स्थापना के लिए मैनें बच्चों की धार्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा की ओर ध्यान देने के लिए आग्रह किया। सभी संस्थाओं के प्रिंसीपल और स्टाफ मुझे समान रूप से आदर सम्मान देते हैं। प्रबन्धक समितियों के सभी साथियों के सक्रिय सहयोग से ही मैं इन संस्थाओं में कुछ अपेक्षित सुधार करने में सफल हुआ हूं। बेशक मुझे आंशिक रूप में सफलता प्राप्त हुई है लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक न एक दिन हमारी ये संस्थाएं न केवल मोगा की बल्कि इस इलाके की सर्वश्रेष्ठ संस्थायें बन जायेंगी। इस बीच कई बार प्रतिकूल परिस्थतियों का सामना भी करना पड़ा। सत्ता लोलुप लोगों का विरोध भी सहन करना पड़ा। लेकिन मैं अपने मार्ग के इन अवरोधों की बिना कोई परवाह किये आगे बढ़ता चला गया। प्रबन्धक समितियों के सहृदय सदस्यों ने हमेशा मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं पाश्चात्य सभ्यता की नकारात्मक बातों का ज़हर अपने समाज में फैलते हुए देखता हूं तो मुझे भविष्य की चिन्ता सताने लगती है।

ईश्वर कृपा से आर्य माडल स्कूल की तिमंजिला इमारत बन कर तैयार हो गई। वहाँ स्वच्छ पानी, खुले और हवादार कमरे, शौचालय इत्यादि का निर्माण योजनाबद्ध तरीके से किया गया। मैनें कोशिश की है कि स्कूल को आधुनिकतम सुख सुविधाओं से लैस किया जाये। अभिभावक बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और सर्वांगीण विकास के लिए हम पर यकीन रखते हैं। इसलिए मैं उनके विश्वास का आदर करता हूं और हर सम्भव प्रयास करता हूं कि मैं उनकी आशाओं पर खरा उतरूं।

डी. एम. कालेज की बगल में निर्मित होस्टल वाली जगह पर डी. एन. माडल स्कूल को स्थानान्तिरत किया गया है। धीरे-धीरे वहाँ एक भव्य लायब्रेरी, हाल और साईंस ब्लॉक निर्मित किये गये हैं। दानी सज्जनों के भरपूर सहयोग और प्रबन्धक समिति की रचनात्मक सोच ने हमेशा मेरा मार्ग प्रशस्त किया है। दरअसल बच्चों को शिक्षा के साथ साथ उचित वातावरण प्रदान किया जाना भी बहुत ज़रूरी है। जिसके लिए माता-पिता कुछ अतिरिक्त फीस खर्च करने में भी संकोच नहीं करते। इस प्रकार धीरे-धीरे आय के स्त्रोत विकसित हो रहे हैं। हमारी संस्थाएं आत्म निर्भर होने की दिशा में गतिशील हैं। दयानन्द मथुरा दास शिक्षा महाविद्यालय की इमारत भी बहुत पुरानी है हालांकि इस महाविद्यालय में हमारे भावी अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाता है फिर भी वहाँ पर कुछ प्राथमिक ज़रूरतों की ओर किसी का ध्यान नहीं गया। न यहां ढंग के बाथरूम है, न प्रशासनिक कार्यालय, न हाल बल्कि कमरों का भी अभाव है। सबसे बढ़कर चिन्ता की बात तो यह है कि इस कालेज में पढ़ने के लिए लड़के और लड़कियां दूर दराज़ इलाकों से भी आती हैं। जिनके ठहरने की व्यवस्था करने में बहुत कठिनाई पेश आती है।

प्रबन्धक समिति ने प्रशासनिक विभाग और होस्टल बनाने का निर्णय लिया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मुझे दानी सज्जनों, प्रबन्धक समिति के सदस्यों का तो भरपूर सहयोग मिला ही वहीं कालेज के प्रिंसीपल, स्टाफ और छात्रों ने भी सहयोग प्रदान किया।

फिर आर्य कन्या पुत्री पाठशाला की ख़स्ताहाल इमारत को गिरा कर आर्य मॉडल स्कूल के समान भव्य रूप प्रदान किया गया। सभी रचनात्मक कामों में बेटी इन्दु हमेशा मेरे लिए प्रेरणा स्त्रोत बनीं रही। मुझे प्रोत्तसाहित करती रही।बल्कि हमेशा मुझसे दो क़दम आगे रही।

अब तो ईश्वर कृपा से आर्य समाज और आर्य शिक्षण संस्थायें आत्म निर्भर हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी इन संस्थाओं को संचालित कर रहे हैं। परमात्मा उन्हें सामर्थ्य और मेधा बुद्धि प्रदान करें जिससे कि ये संस्थायें हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहें।

मेरी चेतना का प्रवाह मुझे न जाने कहाँ से कहाँ ले जाता है। मैं अपनी ज़िन्दगी के विभिन्न आयामों को देखता हूं तो मेरा ध्यान खंडित होने लगता है। दरअसल मेरी ज़िन्दगी के अनेक पहलू हैं। निश्चय ही उन सबको पढ़ पाना, लिख़ पाना और उन पर चिन्तन मनन करना मेंरे बस की बात नहीं है। लेकिन जैसे तैसे उन परतों को खोलने का यत्न करता हूं। इसलिए कि भविष्य में आने वाली नस्लें मेरी सफलताओं और मेरी असफलताओं से शायद् कुछ सबक ले सकें।

दरअसल मेरी ज़िन्दगी के अनेक पहलू हैं। निश्चय ही उन सबको पढ़ पाना, लिख पाना और उन पर चिन्तन मनन करना मेंरे बस की बात नहीं है। लेकिन जैसे तैसे उन परतों को खोलने का यत्न करता हूं।

पूज्य पिता जी का प्रभावशाली रौब दाब तो वही है लेकिन उनके बदन का कसाव अब वैसा नहीं रहा। पूज्य माता जी तो सदैव उनके साथ-साथ साये की तरह रहती हैं। परन्तु उन पर आश्रित होने के बावजूद पूज्य पिता जी ने कभी अपने आप को पराश्रित नहीं समझा। सच तो यह है कि पूज्य माता जी ने कभी उनके मन में यह अहसास पैदा ही नहीं होने दिया। सारा जहान अन्धेरा होने के बावजूद पूज्य माता जी का स्नेहिल स्पर्श उनके रास्ते में उजाला बिखेर देता है। वह पूज्य माता जी के कन्धे पर हाथ रख कर आकाश में उड़ते हुए परिन्दों की परवाज़ तक को पहचान लेते हैं। घर के मामलात हों या कारोबारी फैसले, अन्तिम फैसला तो पूज्य पिता जी ही किया करते हैं।

मैं टैलीफोन पर किसी खरीददारी की डील फाइनल करने के लिए बात कर रहा हूं। पूज्य पिता जी मेरी बातचीत से सन्तुष्ट नहीं हैं। संकेत से मुझे समझाने की कोशिश करते हैं। फिर झुंझला कर मुझसे फोन छीन लेते हैं। वह खुद इस मामले को अपने हाथ में ले कर इस डील पर अपना फैसला देते हैं। पूज्य पिता जी बहुत दूरन्देश हैं। उनके पास ज़िन्दगी का तजुर्बा है। यकीनन उनके फैसले हमारे लिए लाभदायक साबित होते हैं। न्याय प्रिय और दृढ़ प्रतिज्ञ होने के बावजूद पूज्य पिता जी बेहद भावुक हैं। गलत बात को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करते। तुरन्त तीव्र प्रतिक्रिया देते हैं।

पूज्य पिता जी का यह आदेश हमारे लिए हमेशा एक मार्गदर्शक का काम करता है। उनका यह फैसला है कि किसी भी फर्म के बारे में हम तीनों में से कोई भी स्वतन्त्र रूप से निर्णय नहीं ले सकता। हर फैसले पर हम तीनों की सम्मति और सहमती होना अनिवार्य है। व्यापार में यह पारदर्शिता हमेशा हमारे लिए उपयोगी रही है। पूज्य पिता जी व्यापार के कामों में जितनी रूचि लेते हैं, उससे कहीं ज्यादा आर्य समाज के बारे में चिन्तित रहते हैं। आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा तो भावुकता की तमाम सीमाओं का अतिक्रमण कर देती है।

हमारी फर्म के मैनेजर बाबू प्रियतम देव सूद को बुला कर वह घण्टों तक आर्य समाज के सम्बन्ध में बातें करते रहते हैं। इससे काम का बहुत हर्ज होता है। मैनें पूज्य पिता जी से एक बार कहा कि आप आर्य समाज के सिलसिले में चर्चा के लिए समय निश्चित कर लें। पूज्य पिता जी मेरी बेचैनी को समझ कर हंस पड़ते हैं। लेकिन आर्य समाज के लिए उनकी चिन्तायें यथावत बनी रहती हैं। जिस मिशन के लिए उन्होनें अपनी आंखों की दृष्टि तक की परवाह नहीं की, वह हमेशा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो, मन में यही एक कामना बराबर बनी रहती है।

इन्दु नें पठानकोट में जितेन्द्र के अधूरे काम को पूरा करने के लिए कारोबार का बोझ अपने कन्धों पर उठा लिया है। पूज्य पिता जी का ज्यादा वक्त वहीं गुज़रता है। यह समझते हुए कि इन्दु को सहारे की ज़रूरत है, पूज्य माता जी और पिता जी हमेशा उसके साथ रहते हैं।

पिता जी का सेवक सम्पत माली भी कमाल का आदमी है। ऐसे स्वामी भक्त सेवक तो शायद कथा कहानियों में ही मिलते हैं। लेकिन हकीकत में उसे देख कर सचमुच मन बहुत रोमांचित होता है। वह सफेद कपड़े पहनता है। सफेद रंग की पगड़ी बांधता है। लेकिन उसका रंग इस कदर काला है कि सफेद लिबास में और भी अटपटा लगता है। कई बार उसे इस रूप में देख बच्चे हंस पड़ते हैं। वह भी हमारी इन बातों को खूब समझता है। अब ईश्वर नें जो रंग दिया है, उसे तो बदला नहीं जा सकता। लेकिन एक दिन उसने अपने चेहरे पर पाऊडर पोत कर अपनी इस कमज़ोरी को छिपाने की कोशिश की। उसकी इस कोशिश पर तो हम में से कोई भी अपनी हंसी को रोक नहीं पाया। सम्पत माली शायद पूज्य पिता जी की सेवा के लिए ही पैदा हुआ है। खांसते वक्त अगर पूज्य पिता जी का पीकदान कहीं पास न होता तो वह अपने दोनों हाथ आगे कर देता। इस जज़्बे को आखिर हम क्या कहेंगे ?

इधर कुछ दिनों से पूज्य पिता जी मोगा आये हुए हैं और इस बात के लिए बज़िद हैं कि वह घर बार छोड़ कर कुछ दिनों के लिए दयानन्द मठ दीनानगर रहना चाहते हैं । जीवन के सान्ध्य काल में अगर उनके मन में ऐसा विचार आया है तो यकीनन इसका कोई न कोई कारण ज़रूर रहा होगा । आश्रम व्यवस्था के अनुसार तो न वह वानप्रस्थी हुए न संन्यासी । लेकिन मानसिक स्तर पर तो शायद कुछ ऐसी ही भावनाएं प्रबल रही होंगी हम नहीं चाहते कि वह घर की सुख सुविधाएं छोड़ कर दीनानगर जायें । ऐसे भी इन्दु को उनकी बहुत ज़रूरत है । अन्तत: इन्दु की अनुनय विनय से वह पिघल गये । इन्दु ने अत्यन्त विनम्रता के साथ उनसे प्रार्थना की कि पठानकोट में वह अकेली कैसे रहेगी । बच्चे अभी छोटे हैं अगर वह पठानकोट नहीं जायेंगे तो उसके लिए कितनी मुश्किल होगी । इन्दु ने कुछ इस ढंग से कहा है कि उनका हृदय परिवर्तन होते कुछ ज्यादा देर नहीं लगी । तुरन्त उन्होनें फैसला किया कि वह पठानकोट जायेंगे-अभी और इसी वक्त । फटाफट उनके जाने की तैयारी की गई । पूज्य माता जी, पूज्य पिता जी और इन्दु पठानकोट के लिए रवाना हो गये ।

गर्मियों के ये शुरूआती दिन अक्सर खुशगवार होते हैं । वासन्ती हवायें इस गुलाबी मौसम में घुल मिल कर सर्दियों की रुत को अलविदा कहती हैं । कुछ ही दिनों में फागुन की बयार का आगमन होगा । परन्तु ऋृतुओं के इस सन्धि काल में पूज्य पिता जी के अस्वस्थ होने का समाचार पा कर मैं फ़िकरमन्द हो गया हूं । दरअसल मेरी ज़िन्दगी में अक्सर ऐसी घटनाओं का परिणाम बहुत दुखद रहा है । मैं पठानकोट रवाना हो रहा हूं ।

घर के तमाम सदस्य धीरे धीरे पठानकोट पहुँच रहे हैं । बच्चों की तरह बिलखते हुए इन्दु बता रही है कि पिता जी अच्छे भले, खुशी खुशी उसके साथ पठानकोट आये । रास्ते में उन्होनें कोल्ड ड्रिंक भी लिया पकौड़े भी खाये । सब कुछ ठीक ठाक रहा । वह घबराई हुई कहती है – मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा कि आखिर हुआ क्या ? बस पठानकोट पहुंचते ही कार से नीचे नहीं उतर पाये । बड़ी मुश्किल ये हम उन्हें अन्दर लेकर गये । फिर बच्चों की तरह उन्हें चलने का अभ्यास करवाते रहे । माता जी भी उनके साथ हंसी मज़ाक करती रहीं । लेकिन किसी ने भी इस घटना को ज्यादा गम्भीरता से नहीं लिया । तीन अथवा चार मार्च को दोपहर 11 बजे उन्होनें मुझसे कॉफी की इच्छा प्रकट की । अभी एक सवा एक का वक्त होगा कि उन्होनें दोपहर के खाने के लिए बोल दिया । माता जी ने समझाया कि अभी वक्त नहीं हुआ लेकिन पूज्य पिता जी ने कहा कि मुझे तो भूख लगी है... खाना लगाओ । बहरहाल खाना लग गया । मुश्किल से अभी उन्होनें एक फुलका ही खाया होगा कि उनकी टांगे कांपने लगीं । इतनी तेज़ कम्पन को देख कर तो मैं बहुत घबरा गई । कुछ

पता नहीं चला कि आखिर हुआ क्या ?

जम्मु से अवतार जी भी आए हुए हैं । उनका ख्याल है कि पिता जी को जम्मु ले जाकर उनका इलाज होना चाहिए तद्नुसार उन्हें जम्मु ले जाया गया । वहाँ चिकित्सा की तमाम सुविधायें होने के बावजूद पिता जी की हालत बिगड़ती चली गई, प्राणों की गति अवरुद्ध हो गई । समय जैसे रुक सा गया । पूज्य पिता जी की मृतक देह को लेकर हम लोग मोगा पहुंचे। शोकाकुल परिवार ने वैदिक रीति के साथ उनका दाह संस्कार किया । इस प्रकार एक अध्याय समाप्त हो गया । हमारे लिए एक युग का अन्त हो गया ।

ज़िन्दगी की पुस्तक का प्रत्येक अध्याय कहीं न कहीं जा कर तो समाप्त होना ही होता है । लेकिन आधे अधूरे, बीच रास्ते में ही अनायास सम्पूर्ण हो गये अध्याय हमें अवाक् और हमारी अन्तरआत्मा को लहूलुहान कर देते हैं । मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है ।

ज़िन्दगी की पुस्तक का प्रत्येक अध्याय कहीं न कहीं जा कर तो समाप्त होना ही होता है । लेकिन आधे अधूरे, बीच रास्ते में ही अनायास सम्पूर्ण हो गये अध्याय हमें अवाक् और मारी अन्तरात्मा को लहूलुहान कर देते हैं

नव वर्ष 1985 के शुभ आगमन पर मैं, मेरी धर्म पत्नी राज, प्यारी बेटी मधु और बच्चे गोवा के मनमोहक दृश्यों का आनन्द लेने के लिए यहाँ आये हुए हैं। समुद्र तट का यह हसीन मंज़र जीवन के विराट सत्य को उद्घाटित कर रहा है। जीवन का यह विराट सत्य इतना विद्रूप होगा ऐसा मैनें कभी नहीं सोचा था। मैं तो खुशियों और रंगीननियों के इस संसार को ही जीवन का सत्य समझ रहा था। मैनें कठोर परिश्रम के बाद जीवन के इन रंगों को साकार किया था।

समुद्र तट पर गोवा के इन अद्‌भुत दृश्यों की मनमोहक छटा को देख कर बच्चों का रोमांचित होना सहज स्वाभाविक है। हम दोनों (मैं और राज) बच्चों को खुश देख कर आनन्द विभोर हो रहे हैं। राज के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव उभरते हैं। मुस्कराते हुए वह हंसने की चेष्टा करती है। हंसते हंसते खांसने लगती है खांसते खांसते जैसे बेदम हो जाती है। जिस्म थक जाता है। उसके थके हुए चेहरे को देख कर मैं फिकरमन्द हो जाता हूं। मुझे फिकरमन्द देख कर वह मुझे हौंसला देती है... फिकर करने जैसी कोई बात नहीं बस ऐसे ही कभी कभी हो जाता है। मैं बिल्कुल ठीक हूं। आप चिन्ता न करें। शायद वह नहीं चाहती कि हम लोग उसकी सही हालत जान कर उदास हों। वह पुन: बच्चों में हिल मिल जाती है। मैं फिर सामान्य हो जाता हूं।

अलबत्ता कुछ दिन की इस तफरीह के बाद हम लोग मोगा लौट आये हैं। यहां आने पर राज की खांसी कुछ ज्यादा ही बढ़ गई हैं। खांसते खांसते छाती में दर्द से वह निढाल हो जाती है। डा. बलबीर कौर धालीवाल नें मैडीकल चैक अप के बाद कुछ टैस्ट तजवीज़ किये हैं। टैस्ट्स की रिपोर्ट देख कर उन्होंनें हमें P. G. I. रैफर किया है। लगभग एक साल तक P. G. I. चण्डीगढ़ के सुयोग्य डाक्टरों की टीम ने उसका इलाज किया है। बीच में कुछ ठीक हो गईं तो मधु के पास कलकत्ता चली गईं। घर में सभी लोग उसका खूब ध्यान रखते हैं। इन्दु को वह बहुत प्यार करने लगी है। कलकत्ता से लौटीं तो रश्मि के लिए कुछ चाँदी का सामान खरीद लाईं। घर में बड़ी होने के नाते इन्दु को समझाती है कि बेटियों के लिए तो धीरे धीरे सामान तैयार करते रहना चाहिए।

राज एक आफिसर की बेटी है। उसकी नज़र पैनी है और उसकी अंर्तदृष्टि तथा ग्रहणशीलता भी अद्वितीय है। उसकी सलाह हमेशा बहुत उपयोगी होती है। वह कारखाने के मुलाज़िमों की प्रकृति और स्वभाव के बारे में मुझसे ज्यादा बेहतर जानती है। समय समय पर मुझे अपनी राय देती रहती है। मेरी व्यस्तताओं और काम के बोझ को देखते हुए वह नहीं चाहती कि मैं सामाजिक सेवाओं के विवादास्पद क्षेत्र में हस्तक्षेप करूं। हालाँकि समाज की तमाम गतिविधियों में मुझे हमेशा उसका सक्रिय सहयोग प्राप्त रहा है। वह स्वयं भी समाज सेवा में सदैव तत्पर रहती हैं। वह चाहे रैडक्रास का काम हो आर्य समाज के कार्यक्रम हों अथवा दरिद्र नारायण की सेवा।

राज की शख्सियत ही कुछ ऐसी है कि कोई उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। रसोई का रासायन हो अथवा कढाई के बेजोड़ नमूने, यह सब उसकी विलक्षण प्रतिभा का मुंह बोलता प्रमाण है। हमारे घर में सब को गाने बजाने का शौक है। राज भी गा लेती है। ईश्वर आराधना की सरस सुधा के अतिरिक्त ब्याह शादियों के अवसर पर सभी सुर मिल कर एक साथ खुशियों का सृजन करते हैं।

परन्तु राज जैसी ज़िन्दादिल शख्सियत को इस हाल में देखना सचमुच बहुत हृदय विदारक है। P. G. I. के रैगुलर ट्रीटमैंट के अतिरिक्त चिकित्सा की तमाम विधियां आजमाई जा रही हैं। होम्योपैथिक भी। आयुवैर्दिक भी। और भी जिसने जो बताया सब इलाज हुआ। लेकिन कुछ लाभ नहीं हो रहा। उसे देख कर मैं बेहद उदास हो जाता हूं।

फिर भी मैं उसे हौंसला देने की कोशिश करता हूं। अपनी तमाम आशावादिता को एकाग्र करके मैं उसे विश्वास दिलाना चाहता हूं कि वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। ऊषा भाभी जी, सुदेश,

इन्दु सब उसका ध्यान रखते हैं। लेकिन कुछ विशेष सुधार नहीं हो रहा। परन्तु मैं उम्मीद का दामन अपने हाथ से छूटने नहीं देता। राज को हकीकत का पता है। उसे अपनी बीमारी के बारे में भी सब कुछ पता है। डाक्टरों के साथ खुद भी कन्सल्ट करती रहती है। मेरा दिल रखने के लिए मेरे झूठे आश्वासनों को सच मान लेती है। लेकिन उसे एक एक बात का पूर्वानुमान है।

डा. विजान, डा. आर.के. गुप्ता, डा. पृथवी राज चाटले, डा. शाम लाल श्री बी.के. गौड़ मैजिस्ट्रेट नियमित रूप से केवल मिज़ाजपुर्सी नहीं सेवा सुश्रुआ के लिए हमारे घर आते रहते हैं। मैं उनकी भावनाओं को समझ सकता हूं और मन ही मन उनके ज़ज्बात का एहतराम करता हूं।

ज़िन्दगी और मौत की यह जंग आखिरकार 20 फरवरी 1986 को समाप्त हो गई। राज अपनी सांसारिक यात्रा को पूर्ण करके प्रभु चरणों में विलीन हो गई। ज़िन्दगी का यह दुखद प्रसंग एक ज़ख्म की तरह हमेशा मेरे सीने में टीस बन कर कसकता रहेगा। स्मृतियों की मद्धम रोशनी में जब कभी मैं अतीत की सीढ़ियां उतरता हूं तो राज का मुस्कराता हुआ चेहरा मुझे धीरज देता है। सौ साल तक जीने की कामना करना बेशक मेरा आध्यात्मिक और संस्कार गत अधिकार है लेकिन ज़िन्दगी का क्या भरोसा। अक्सर यह शेर मेरे मन में गूंजता रहता है... "उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो न, जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाये..."

ज़िन्दगी का यह दुखद प्रसंग एक ज़ख्म की तरह हमेशा मेरे सीने में टीस बन कर कसकता रहेगा। स्मृतियों की मद्धम रौशनी में जब कभी मैं अतीत की सीढ़ियां उतरता हूं तो राज का मुस्कराता हुआ चेहरा मुझे धीरज देता है

निस्संदेह भूत और भविष्य की चिन्ताएं व्यर्थ हैं । इन्सान को वर्तमान में जीने का ढंग आना चाहिये । लेकिन वर्तमान में जिस खालीपन का अहसास मेरे आस पास मंडराता रहता है उसे भरने की चेष्टा में मैं सामाजिक गतिविधियों और कारोबार में और भी ज्यादा सक्रिय हो गया हूं । मैं रुकने का अर्थ जानता हूं । इसलिए अपने कदमों की गति को कभी मद्धम नहीं होने देता ।

घर में पूज्य माता जी की उपस्थिति और उनका आशीर्वाद बहुत मायने रखता है । लेकिन इन दिनों शारीरिक और मानसिक दृष्टि से वह बहुत कमज़ोर हो गई है । मानसिक स्तर पर तो वह अपनी याददाश्त तक खो चुकी हैं। कभी कभी तो पहचानने की स्थिति में भी नहीं होतीं । इन अटपटी परिस्थतियों में मैं और मेरा जीवट दोनों इम्तिहान में से गुज़र रहे हैं । मुठियों में से रेत की तरह छूटता हुआ वक्त कभी नहीं थमता ।

मैनें कितने आत्मीय रिश्तों को एक एक कर टूटते हुए देखा है । जिन्हें बहुत प्यार किया अथवा जिनसे बहुत प्यार पाया उन सब का साथ एक न एक दिन छूट गया । यह संसार ऐसा ही है । बस आदमी को अपना धर्म नहीं भूलना चाहिये । पूज्य माता जी की सेवा मेरा धर्म है । कार्य व्यापार और आचरण की शुद्धता जो आत्म संतोष प्रदान करती है । मैं उसे उपलब्धि मानता हूं ।

इन्सान जब अपनी सामान्य दिनचर्या में सम्बन्धों की सूझ बूझ खो दे तो यह स्थिति बहुत दुखदायक होती है। ऐसी परिस्थितियों में सामान्य बने रहना बहुत कठिन होता है लेकिन फिर भी मेरी कोशिश है कि अवतार जी के बेटे संजय की शादी में पूज्य माता जी भी सम्मिलित हों। जम्मु में बेटे संजय की शादी की तैयारियां हो रही हैं। घर के सभी लोग इस विवाह में सम्मिलित होंगे लेकिन पूज्य माता जी की शारीरिक और मानसिक स्थिति को देखते हुए डाक्टरों की राय है कि उन्हें हम लोग अपने साथ रखें। इन्दु ने कहा है कि वह उनके साथ मोगा रह लेंगी। डा. विजान भी हमारे घर की ही सदस्य हैं उन्होनें भी कहा है कि वह माता जी का ध्यान रखेंगी लेकिन मैं चाहता हूं कि माता जी हमारे साथ जम्मु चलें।

अन्ततः यही फैसला हुआ कि पूज्य माता जी को साथ लेकर हम लोग जम्मु चलेंगे। तद्नुसार माता जी को कार की पिछली सीट पर बहुत ही एहतियात के साथ लिटाया गया। ड्राईवर को विशेष हिदायतें दी गईं और हम सब लोग जम्मु की ओर चल दिये। शादी की खुशी और उत्सुकता तो कहीं न कहीं माता जी के व्यवहार में भी दिखाई दे रही हैं। ड्राईवर दिलावर सिंह समझदार आदमी है। मैनें उसे खास हिदायत की है कि गाड़ी तेज़ गति से बिल्कुल मत चलाये।

हमारे सकुशल जम्मु पहुंचते ही वहाँ सभी पारिवारिक सदस्य बहुत खुश हुए। पूज्य माता जी भी खुश हैं। सारा परिवार इस अवसर पर जम्मु पहुंचा हुआ है। अगर पूज्य माता जी न आतीं तो स्वाभाविक रूप से उनकी कमी सबको महसूस होती। शादी ब्याह के इस वातावरण को रंगीन बनाने की कोशिश में पूज्य माता जी घोड़ियां (पंजाब में वैवाहिक अवसर पर दूल्हा पक्ष की ओर से गाये जाने वाले गीत) गाने की कोशिश करती हैं। सभी खुश हैं।

मगर खुशियों की यह रात दूसरे दिन ही ग़मगीन माहौल में तबदील हो गई हैं। 26 जनवरी 1987 को पूज्य माता जी नें अपनी जीवन यात्रा सम्पूर्ण कर ली। बहुत अजीब हालात बन गये हैं। शादी ब्याह की रसमें तब तक पूरी नहीं हो सकतीं जब तक कि पूज्य माता जी की मृतक देह का दाह संस्कार नहीं हो जाता। जम्मु में हमारे पारिवारिक मित्रों की राय है कि हमें जम्मु में ही पूज्य माता जी का दाह संस्कार करने के उपरान्त संजय की शादी की तमाम रस्मों को निहायत सादगी के साथ पूरा कर लेना चाहिये। लेकिन मेरी इच्छा है कि मैं पूज्य माता जी की मृतक देह का संस्कार मोगा ले जा कर करूं। पूज्य माता जी का ज्यादा वक्त मोगा शहर में गुज़रा है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि उनका अन्तिम संस्कार भी मोगा शहर में ही होना चाहिये। लेकिन मैं मजबूर हूं । रस्मों रिवाज और घर के अन्य सदस्यों की भावनाओं का सम्मान रखना भी ज़रूरी है । इस नाज़ुक वक्त में अन्ततः फैसला यही हुआ कि पूज्य माता जी का दाह संस्कार जम्मु में ही किया जाये ।

इस प्रकार पूज्य माता जी का अन्तिम संस्कार सम्पन्न करके हमने संजय के विवाह की रस्मों को पूरा किया है । आखिर ग़म और खुशी के इस अजीब माहौल में हम लोग वापिस मोगा लौटे हैं । कुछ समझ नहीं आ रहा कि क्या किया जाये । मोगा के स्नेही परिवार माता जी के देहावसान पर दुखी हैं । मैनें पूज्य माता जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए एक विशेष सभा का आयोजन किया है । हम सबने मिल कर पूज्य माता जी को श्रद्धांजलि दी है । उनके उपकारों को याद किया है । उनकी आत्मिक शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है ।

मगर फिर भी एक बोझ मन पर हमेशा बना रहेगा कि पूज्य माता जी की अन्तिम यात्रा उतनी गरिमापूर्ण नहीं हो पाई जितना उच्च कोटि का जीवन उन्होनें बिताया ! आज भी जब ये बातें स्मरण करता हूं तो मेरी पलकें खुद ब खुद नम हो जाती हैं ।

इन्सान जब अपनी
सामान्य दिनचर्या
में सम्बन्धों की
सूझ बूझ खो दे तो
यह स्थिति बहुत
दुखदायक होती है

साठ के दशक में कारोबार को जो विस्तार हमने दिया उसके परिणाम स्वरूप हमने प्रचुर मात्रा में स्थाई सम्पत्ति निर्मित की है। कारखाने के मुख्य द्वार से दाईं ओर दक्षिण दिशा में बाँके मल निरंजन दास फर्म के मालिकों का आवास और उससे सम्बद्ध काफी ज़मीन हमने खरीद ली है। कोठी के पिछवाड़े की जगह भी हमने स. उजागर सिंह से मोल ले ली है। हिमाचल में भी काफी जायदाद बन गई है चाहे वह कारखाने के लिए हो, कार्यालय के लिए हो अथवा पैट्रोल पम्पों के लिए।

वक्त की तेज़ रफतार के साथ साथ दौड़ने की हिम्मत, आत्मविश्वास और आत्म बल के साथ मैनें ज़िन्दगी का जितना सफर तय किया है उसे पलट कर देखने का रोमांच सचमुच बदन में एक अजीब हरारत पैदा कर देता है। वे दिन भी क्या दिन थे जब 1934-35 में आटे की एक चक्की और 6 आने दिहाड़ी पर रखे एक रेहड़ी मज़दूर के माध्यम से हमने एक रूपये का 16 सेर आटा, एक रूपये की चार सेर रूई बेचा करते थे और फिर सचमुच उस वक्त हमारा कद कितना ऊंचा हो गया था जब हमारी देसी रूई की गांठे जिसका मार्का D. G. रखा गया था जापान की मण्डी में अत्याधिक लोकप्रिय हो गई थी। हमारा माल कुछ ज्यादा महंगा होने के बावजूद अपनी विश्वसनीयता और अपनी गुणवत्ता के कारण लोकप्रिय था। गुणवत्ता और विश्वसनीयता सफलता के ये दो सूत्र मेरे लिए कितनी अहमियत रखते हैं इसे बोल कर कहने की बजाय मैनें अपने जीवन में धारण किया है। कितना सफल हुआ हूं, यह तो भगवान जानें।

धर्म का अर्थ ही है धारण करना। व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं व्यवसायिक स्तर पर भी हमने धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास किया है। हमारा परिवार याज्ञिक परिवार है। हवन भजन और प्रवचन हमारे जीवन का अनिवार्य अंग है। हमें अपने घर में ऐसे ही संस्कार मिले हैं। हवन यज्ञ हमारे दुख सुख का साथी है। हवन यज्ञ हमारा सम्बल है, हमारा मार्ग दर्शक है हमारा आश्रय है। मैनें समय समय पर घर में बहुत बड़े बड़े यज्ञों का आयोजन किया है। आर्य समाज की आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक क्रान्ति और राष्ट्रीय विचारधारा से ओत-प्रोत हम बड़े ही उत्साह से यज्ञों का आयोजन करते हैं। केवल आर्य समाज में ही नहीं बल्कि घर में भी हमेशा यह वातावरण बना रहता है।

हमारे घर में प्राय: जिन विद्वानों और सन्यासियों का आगमन होता रहा उनमें आर्य समाज के इतिहास के अनेक उल्लेखनीय नाम भी सम्मिलित हैं जिन्होनें महार्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन-दर्शन को न केवल अपना दिशा निर्देश बनाया हुआ था बल्कि अपने खून में उतार कर उसे जीवन्त बना दिया था। इनमें महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी विद्यानन्द, आचार्य पण्डित बुद्धदेव जी (स्वामी समर्पणानन्द) स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, स्वामी केवलानन्द पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। वर्तमान में स्वामी सर्वानन्द स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी कर्तव्यानन्द, स्वामी दिव्यानन्द, स्वामी सम्पूर्णानन्द आचार्य भगवान देव चैतन्य स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़) इत्यादि अनेक्रों नाम हैं जिन्होनें इस घर में ब्रहम ज्ञान की चर्चा की है और हमें धर्म लाभ प्रदान किया है।

एक बार बनारस गुरूकुल की छात्राओं ने इस घर के प्रांगण में जो मन्त्र पाठ किया उसे तो हम ज़िन्दगी भर कभी विस्मृत नहीं कर पायेंगे। इस नगर के गणमान्य नागरिक दूर-दूर तक गूंजते हुए मन्त्रों के मधुर स्वर से प्रेरित होकर और यज्ञाग्नि की सुगन्ध के आर्कषण से सम्मोहित हमारे घर खिंचे चले आते थे। अतिथि सत्कार में जो आनन्द हमें प्राप्त होता है उसे तो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इस घर की मर्यादा और पारिवारिक संस्कार हम सबको इन समारोहों में अतिरिक्त रूप से सक्रिय कर देते हैं। इन्दु बेटी नें स्त्री आर्य समाज की स्थापना कर ली है। प्रत्येक शनिवार महिलायें एकत्रित हो कर आर्य समाज की यज्ञशाला में यज्ञ करती हैं। वे प्रत्येक संक्रान्ति के दिन पारिवारिक सत्संगों का आयोजन करती हैं।मैं उन्हें बराबर अपना सहयोग प्रदान करता हूं। मुझ पर जब जब मुश्किलों का पहाड़ टूटा ईश्वर ने मुझे अपने अदृश्य हाथों से सम्भाला। मुझे कभी हतोत्साहित नहीं होने दिया। यज्ञ पर मेरी अटूट श्रद्धा का ही यह परिणाम है कि मैं हमेशा अपने निर्णय पर अटल रहा और अन्तत: अपने उद्देश्य में सफल रहा।

स्त्री आर्य समाज ने मोगा नगर में ग्यारह कुण्डीय और इक्कीस कुण्डीय महायज्ञों का आयोजन करके अध्यात्म के क्षेत्र में जो कीर्तिमान स्थापित किया है मैं उससे अभिभूत हूं। नगर वासियों ने इस ब्रह्मा यज्ञ में जी खोल कर सहयोग दिया है। इन यज्ञों में समाज के प्रत्येक वर्ग से और हर विभाग से यजमान सम्मिलित हुए। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी इन यज्ञों के ब्रह्मा थे। यज्ञशालाओं में अनुशासन और सौन्दर्य के मनोरम दृश्यों ने वैदिक युग को पुन: धरती पर अवतरित कर दिया। मोगा नगर के आस पास के गाँव कस्बों से भी इस यज्ञ की शोभा सुन कर धार्मिक और आस्थावान परिवार इन यज्ञों में सम्मिलित हुए।

मुझ पर जब जब
मुश्किलों का
पहाड़ टूटा,
ईश्वर ने मुझे
अपने अदृश्य हाथों
से सम्भाला।
मुझे कभी
हतोत्साहित
नहीं होने दिया।

वर्ष 1981 में जम्मू में फलोर मिल लगाने का फैसला हुआ है । इस काम के लिए काफी रुपया दरकार है । गवर्नमैंट से ऋण की व्यवस्था के बावजूद निजी स्तर पर एक बड़ी राशि की व्यवस्था करनी होगी । अवतार जी की हिम्मत और परस्पर सहयोग से फलोर मिल 1982-83 में चालू हो गई । नए काम में परेशानियां तो पेश आती ही हैं । अवतार जी प्राय: कहा करते थे कि मेरे तो बाल सफेद हो गये इस मिल को लगाने में । और फिर दो वर्ष बाद अवतार जी इस मिल से तंग आ गये। उन्होनें मुझसे कहा कि मैं यह मिल बेच देना चाहता हूं । मैं यह सुन कर बहुत परेशान हुआ हूं । मैं अगले ही दिन जम्मू पहुंचा । अवतार जी को हौसला दिया । उन्हें समझाया कि व्यापार में अक्सर ऐसा होता रहता है । इधर एकदम बहुत सी फलोर मिलें लग गई हैं । कम्पीटीशन बहुत हो गया है जिससे मिल नफा नहीं दे पा रही। आप नफे की फ़िक्र न करें। एक दिन ये मिल ज़रूर नफा देगी। मैं अभी दो साल इस मिल से नफा की उम्मीद ही नहीं करता । आप न घबरायें । इस मिल को लगाने में हमारा जो अन्दाज़ से बहुत ज्यादा रुपया लग गया है । उसके लिए हम अपने अपने स्तर पर प्रयास करें ।

नव भारत फ्लोर मिल को अपने पांव पर खड़ा करने में सबकी बराबर की हिस्सेदारी है । अब जब मेरा सपना साकार हुआ है । यह फ्लोर मिल अच्छी कमाई देने लगी है पुरी ब्रदर्ज़ की कमाई अच्छी होने लगी है । देवीदास गोपाल कृष्ण जम्मू से अच्छी कमाई हो रही है । डमटाल मिल की कमाई शुरू हो गई है, मोगा मिल की कमाई बढ़ गई है । मैं सोचता हूं कि संजय बेटे और विक्की को अब इस इतने बड़े कारोबार को सम्भालने के लिए हमें प्रशिक्षित करना चाहिए । परस्पर प्यार, सद्भाव और समर्पण को सुस्थिर आधार प्रदान करना चाहिए । मेरे लिए संजय और विक्की मेरी दो आंखें हैं ।

लेकिन इन्सान के चाहने से अगर सब कुछ हो जाता तो इन्सान भगवान के लिए भी एक चुनौती बन जाता। मुझे इन दिनों अनचाही परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। मैनें सपने में भी कभी ऐसा नहीं सोचा था। हमारे घर में तो सदैव प्यार की गंगा प्रवाहित रही। हमारी खुशियां, हमारे सुख दुख हमारा व्यवसाय हमारा नफा नुकसान सब कुछ समान रूप से सबका एक सा था। लेकिन यह सब ज्यादा देर तक सम्भव नहीं हो पाया।

इसके बाद क्या कुछ हुआ उसे मैं एक दु:स्वपन की तरह भूल जाना ही मुनासिब समझता हूं। शायद ईश्वर की यही इच्छा रही हो। मैनें अपनी तरफ से भरपूर कोशिश की। दरअसल विश्वास का संकट सबसे बड़ा संकट होता है। जब यह टूटता है तो बहुत तकलीफ होती है। मुझे दुख है कि मेरी कल्पनाओं का संसार आधा अधूरा रहा। एक तस्वीर जो मैनें अपने दिमाग में बना रखी थी मुझे अभी उसे मुकम्मल करना था। उसमें रंग भरने थे। मैनें उसके लिए ईमानदाराना कोशिश की। पुरुषार्थ किया। लेकिन फल तो ईश्वर के हाथ में है। आखिर इस अर्थविहीन विवाद का कहीं न कहीं तो अन्त होना ही था। परिणाम स्वरूप ईश्वर की न्याय व्यवस्था को नतमस्तक हो कर स्वीकार किया। ईश्वर से प्रार्थना की कि परम पिता परमात्मा हम सबको सद्बुद्धि दे, सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। सुख शान्ति और ऐश्वर्य प्रदान करे।

हम सब भाईयों के पास ईश्वर का दिया बहुत कुछ है। अब तो सभी अपने अपने स्तर पर और समृद्ध हुए हैं। इन्दु, जिसे मैं अपनी बेटी बना कर घर लाया था उसका भी इस घर में बराबर का हक है। बल्कि जितेन्द्र के चले जाने के बाद तो उसके प्रति हमारी ज़िम्मेदारियां और बढ़ गई हैं। लेकिन रश्मि की शादी के समय वह अन्दर से कितना परेशान रही मुझे इस बात का बराबर अहसास है। लेकिन परम पिता परमात्मा की महिमा अपरम्पार है। सबकुछ ठीक ठाक सम्पन्न हुआ। अब सोचता हूं तो लगता है कि शायद यह सब ठीक ही हुआ। मेरे बाद न जाने कितनी उलझनें और मुश्किलें और खड़ी हो जातीं।

मैं इन सब घटनाओं को बार बार दुहराना नहीं चाहता। लेकिन तत्कालीन परिस्थितियों के हवाले से यह ज़रूर बताना चाहूंगा कि अस्सी का दशक पंजाब के लिए बहुत ही भयानक रहा। जम्मू काशमीर की तुलना में पंजाब आंतकवाद की जिस भयानक आग में जल रहा था उससे अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई थी। हालांकि फ्लोर मिल अच्छा लाभ कमा रही थी। इन सब कामों में हमारी बराबर की सांझेदारी होने के बावजूद मैं यहां अकेला अनुभव कर रहा था। उगराही का पैसा भी प्राप्त

नहीं हो रहा था । इन अजीब मुश्किलात में भी मैनें अपना धीरज बनाये रखा । ईश्वर ने मेरी मदद् की। मित्रों का सहयोग मिला ।

मैं इन्दु बेटी के धीरज और मेरे प्रति उसकी अगाध श्रद्धा और विश्वास को देखता हूं तो सचमुच मेरा सिर झुक जाता है । मैं 30 जून 1988 को बहादुरगढ़ क्लोज़िंग के सिलसिले में जा रहा था। विक्की बेटा दो रोज़ पहले ही मोगा में अपनी पढ़ाई खत्म करके आया था। मैं उसको साथ ले गया। ऐसे ही । तब उसे काम पर यकदम बिठाने का कोई मन नहीं था। लेकिन वहाँ जा कर एकदम मन बन गया और मैनें हवन करके विक्की बेटे को वहाँ बिठा दिया और इन्दु बेटी को ये खबर फोन पर दे दी । इन्दु बेटी ने बड़ी खुशी से मुझे कह दिया... जो आपने किया ठीक किया। मैं जानता हूं कि इन्दु का मन है कि वह अपने बेटे के साथ रहे । आखिर मां है । लेकिन मोगा के काम को देखते हुए और दूसरे मेरी उम्र को देखते हुए वह अपना फर्ज़ और अपनी ड्यूटी निभा रही है ।

मैं चाहता था कि संजय और विक्की को तमाम कारोबार को देखने और समझने का मौका दिया जाये। मगर, चलिए छोड़ें अब इन बातों में क्या रखा है ।

विक्की बेटा बहादुरगढ़ में सख्त मेहनत कर रहा है । बंगाल बिहार वगैरा सब जगह सेल बढ़ाने की कोशिश कर रहा है । उसका मन है कि दिल्ली में कोई जगह खरीदी जाये । मैनें उसे दिल्ली में जगह देखने के लिए कहा क्योंकि मैं समझता हूं कि दिल्ली में जगह खरीदने के लिए अब सर्वथा उपयुक्त समय है। विक्की ने बहुत सी जगह देखीं लेकिन सैनिक फार्म में जो जगह उसने देखी है वह मुझे भी पसन्द है। इस जगह को खरीदने का फैसला इसलिए भी न्याय संगत है चूंकि पूज्य माता जी की यह इच्छा थी कि जितेन्द्र की मृत्योपरांत प्राप्त Insurance के रूपये से इन्दु के लिए दिल्ली में कोठी खरीद ली जाये । उस वक्त तो यह सम्भव नहीं हो पाया लेकिन आज 19 वर्ष बाद यह इच्छा पूरी हो रही है । मैं खुश हूं । पूज्य माता जी को दिया वचन आज पूरा हो रहा है ।

दरअसल विश्वास का संकट सबसे बड़ा संकट होता है। जब यह टूटता है तो बहुत तकलीफ होती है

मैं अपनी उम्र के विगत साठ वर्षों की जद्दोजहद को देखता हूं। वर्तमान में प्राप्त सुख सम्पदा को देखता हूं। अपने किरदार को देखता हूं। अपने प्रति दूसरों के व्यवहार को देखता हूं। कोई ईश्वररूपी शक्ति मेरे पुरुषार्थ को गौरव प्रदान कर रही है। प्रतिकूल परिस्थितियों की आँधियां भी मुझे मेरे मार्ग से विचलित नहीं कर पाईं। ईश्वर के प्रति मेरी अटूट आस्था ही मेरी सफलता का मार्ग प्रशस्त करती रही।

मैं कोई नसीहत करना नहीं चाहता। लेकिन मेरा मानना है कि चलने वाले लोग ही पगडण्डियों का निर्माण करते हैं यही पगडण्डियां समय पाकर राज मार्ग बन जाती हैं। लेकिन आदमी को अपना सामर्थ्य और पुरुषार्थ नाप तोल कर ही चलना चाहिए। और एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ईश्वर कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं। सच्चाई का मार्ग बहुत कठिन होता है और यह भी सही है कि सफलता का कोई शार्टकट रास्ता नहीं होता।

मैं तो अब जीवन के सान्ध्यकाल में हूं । काल की गणना करते हुए मैं जब भी सोचता हूं तो हमेशा आगे की सोचता हूं । मृत्युपर्यन्त कर्त्तव्य पालन करना ही इन्सान का धर्म है। यद्यपि इन्दु बेटी ही आफिस का सब काम देखती है लेकिन मैं हमेशा उसका साथ देता हूं । मैं अपनी दिनचर्या को नियमित और अनुशासासन में रखने का प्रयास करता हूं। प्रात: काल साढे चार बजे उठता हूं । नियमित सैर करता हूं, प्राणायाम करता हूं, हवन करता हूं, नित्यकर्म अल्पाहार इत्यादि लेने के पश्चात निश्चित समय पर आफिस पहुंचता हूं । सारी ज़िन्दगी मेरा यही नियम रहा है । अगर मैं खुद अनुशासन में नहीं रहूंगा तो अपने स्टाफ से इस बात की आशा अपेक्षा कैसे रखूंगा कि वे लोग अनुशासन में रहें ।

बहुत काम किया है । बहुत धन कमाया है। बहुत कुछ बाँट दिया है ।जिसका जितना हक बनता है उससे कहीं ज्यादा दिया है । अब जो शेष बचा है उसे ईश्वर को अर्पण कर देना चाहता हूं ।

मन में सौ वर्ष तक जीने की अभिलाषा है । सौ वर्ष काम करते हुए जीना चाहता हूं । लेकिन सोचता हूं कि ईश्वर ने जो धन ऐश्वर्य दिया है उसे सर्व जन हितार्थ समर्पित कर दूं । मैनें जो कुछ पाया इसी समाज में रह कर पाया है । यह समाज ही उसका उत्तराधिकारी है । मानव मात्र के कल्याण के लिए इसे समर्पित करके मैं सुखी होना चाहता हूं ।

इन्दु बेटी ने मेरे इस विचार की प्रौढ़ता की है कि हमारे घर के पीछे जो जगह खाली पड़ी है वहाँ सत्संग भवन का निर्माण कर दिया जाये । इस सन्दर्भ में देवी दास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की गई है । इसमें प्रचुर मात्रा में धन जमा करवाया गया है । इसी धन से मैनें राजनन्दिनी हाल का निर्माण शुरू करवा दिया है। एक पाँव आफिस में दूसरा भवन निर्माण की ओर । घर-परिवार और समाज। मैं आगे से कहीं ज्यादा व्यस्त हो गया हूं।

मिस्त्री लछमण सिंह हमारे घर के बहुत पुराने मिस्त्री हैं । अब तो बुज़ुर्ग हो गये हैं । पहले आर्य शिक्षण संस्थाओं व भवन निर्माण में भी उन्होनें बहुत काम किया है । बड़े तजुर्बेकार इन्सान हैं। स्वामी वेदान्तानन्द जी (गीता भवन, मोगा) से भी अक्सर परामर्श करता रहता हूं। मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती राजनन्दिनी की स्मृति में जो हाल बनवा रहा हूं, मैं उसमें आधुनिकतम सुविधाएं प्रदान करना चाहता हूं । इसमें बहुत खर्चा हो रहा है । वातानुकूलित राजनन्दिनी हाल का साऊंड सिस्टम भी अपना है । प्रार्थना मंच की आधुनिकतम व्यवस्था की गई है । भवन निर्माण कला का

आधुनिकतम स्वरूप बन कर तैयार हो रहा है । इसमें एक भव्य यज्ञशाला, लायब्रेरी, चैरिटेबल डिस्पैंसरी इत्यादि बहुत कुछ सोच रखा है ।

सत्संग भवन के ऊपर अतिथि-सन्यासियों, उपदेशकों के लिए भी वातानूकुलित कमरे बनाने की योजना है । इस सत्संग भवन के मुख्य द्वार के ऊपर पुरोहित और सेवक के लिए रिहायश की व्यवस्था की गई है । मैं चाहता हूं कि इस सत्संग भवन के माध्यम से हम भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप सुसंस्कृत समाज की स्थापना में जहां अपना योगदान डालें वहीं अध्यात्म लाभ भी प्राप्त करें ।

अब जबकि सत्संग भवन लगभग बन कर तैयार हो चुका है । स्वामी वेदान्तानन्द जी का सुझाव है कि हवन-यज्ञोपरान्त तुरन्त डिस्पैंसरी का उद्घाटन करके हमें अपना काम शुरू कर देना चाहिए । तद्नुसार 30 जून 2001 की तारीख निश्चित कर दी गई है । दो तीन दिन से खूब गर्मी पड़ रही है । आज प्रात: जैसे इस स्थिरता को तोड़ने के लिए तेज़ आँधी और तूफान के बाद बारिश का मौसम बन गया । सबने राहत की साँस ली । कार्यक्रम सफल रहा फिर तो उसके बाद प्रात: सांय नियमित सन्ध्या हवन और सत्संग का आयोजन होने लगा है । मेरा ध्यान बाहर की गतिविधियों से सिमट कर सत्संग भवन पर केन्द्रित होने लगा ।

मैं आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों पर कोई टिप्पणी करना नहीं चाहता । आर्य समाज के नेतृत्व में जब जब मुझ में अपना विश्वास प्रकट किया और मुझे सेवा का अवसर प्रदान किया मैनें यथा समर्थ उन्हें अपना सहयोग प्रदान किया । आर्य समाज के संस्कार मुझे विरासत में मिले हैं। उन्हें विस्तार देने के लिए मैं सदैव प्रयत्नशील रहता हूं। वैदिक संस्कृति और यज्ञ ने ही मेरे जीवन को यज्ञमय बना दिया है। ज़िन्दगी भर जोड़ तोड़ की राजनीति से दूर रहा हूं। मुझे ज़रूरत भी नहीं है । अपना काम ही इतना है कि मेरे पास समय ही नहीं बचता कि मैं किसी और तरफ ध्यान दे पाऊं ।

मैं तो आदरणीय भाई श्री सत्यानन्द मुणजाल की ओर देखता हूं ।

मैं तो अब जीवन के सान्ध्यकाल में हूं । काल की गणना करते हुए मैं जब भी सोचता हूं तो हमेशा आगे की सोचता हूं । मृत्युपर्यन्त कर्त्तव्य पालन करना ही इन्सान का धर्म है।

वह चुपचाप अपना काम करते रहते हैं । वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार में लगे रहते हैं । आर्य नेतृत्व उन्हें सहयोग दे, अथवा न दे उन्हें उनके मार्ग से कोई भी विचलित नहीं कर सकता । राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है मेरे लिए वह एक आदर्श प्रेरणा स्त्रोत हैं । मुझे उनका परामर्श और सहयोग सदैव प्राप्त रहता है ।

मेरी कार्य शैली को देखते हुए हुए अन्य शिक्षण संस्थायें भी मुझसे सहयोग की आशा रखती हैं । शिक्षा के प्रति तो मैं पहले से ही बहुत संवेदनशील हूं। मैं सबको अपना सहयोग देता हूं। मोगा में ट्रस्ट शिवाला राम कृष्ण सूद के सम्माननीय सदस्यों ने मुझमें अपना विश्वास प्रकट किया है और मुझे अपने ट्रस्ट का सदस्य मनोनीत किया है। यह तो उनका बड़प्पन है। मैं तो सूद बिरादरी से नहीं हूं । बल्कि इन भावनाओं से कहीं ऊपर पूरी मानवता के प्रति समर्पित हूं। ट्रस्ट की ओर से एक मॉडल स्कूल भी अच्छा काम कर रहा है ।

इस ट्रस्ट की कुछ ज़मीन पर विगत कई वर्षों से कुछ किसानों ने कब्ज़ा कर रखा है । इस ज़मीन पर लोग खेती बाड़ी कर रहे हैं । इस ज़मीन को हासिल करने के लिए ट्रस्ट प्रयासरत है। प्रशासन से सम्पर्क स्थापित किया गया है । प्रशासनिक अधिकारी मेरा बहुत सम्मान करते हैं । उन्होनें प्रस्ताव रखा है कि अगर ट्रस्ट इस ज़मीन पर गऊशाला का निर्माण करने के लिए मान जाये तो वह इस जगह को खाली करवाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे । मैनें ट्रस्ट अधिकारियों से बात की और वे मान गये ।

अब यहां श्री कृष्ण गोधाम की स्थापना की गई है । इन्दु ने भी जितेन्द्र की पुण्य स्मृति में एक शैड वहाँ बनवा दिया है। राजकीय सहयोग भी प्राप्त हुआ है । शहर के दानी सज्जन भी सहयोग दे रहे हैं । यहाँ एक संस्था भारतीय जागृति मंच डा. दीपक कोछड़ के नेतृत्व में अच्छा कार्य कर रही है । मुझे उन्होनें अपना सरपरस्त बनाया हुआ है । मेरे सुझाव पर इस गऊशाला में मंच ने सप्त गो मन्दिर का निर्माण किया है । इस नगर की तमाम समाज सेवी संस्थाओं को मैं अपना सहयोग प्रदान करता हूं। इस ख्याल से कि समाज को सही दिशा देने के लिए इन संस्थाओं की बहुत बड़ी भूमिका है।

सम्भवत: कोई भी आत्मकथा सम्पूण नहीं होती। मैने जिस सत्य का साक्षात्कार किया है, इस आत्मकथा में कहने का प्रयास किया है। लेकिन कितना कुछ अनकहा रह गया इसका भी कुछ हिसाब नहीं । ज़िन्दगी एक ऐसा उलझा हुआ सवाल है कि जिसका कोई एक उत्तर दे पाना मेरे बस की बात नहीं । मैनें अपनी ज़िन्दगी के कथानक में कुछ अनुभूत सत्यों को साकार किया। कुछ सपनों को टूटते हुए देखा। अगरचे मैं अपनी कमियों और कमज़ोरियों को भी समझता हूं । लेकिन लोग मेरी उन सब कमज़ोरियों को मुझसे भी कहीं ज्यादा समझते हैं । इसलिए व्यर्थ उन बातों की चर्चा करके समय नष्ट करने का कोई औचित्य नहीं ।

अब जबकि हमारे आस-पास उपदेश देने वालों का ताँता लगा हुआ है । विभिन्न सम्प्रदाय और भिन्न भिन्न गुरूओं महात्माओं ने संचार माध्यमों के बल पर लोगों की धार्मिक भावनाओं का शोषण करने के लिए कमर कस ली है, मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में सुधार लाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए । दुनियाँ को सुधारने की कोशिशें तभी कारगर साबित होंगी अगर हमारा अपना किरदार अच्छा हो। अपने चरित्र और व्यवहार से हम लोगों के सामने आदर्श स्थापित करें। निश्चय ही लोग हमारा अनुकरण करेंगे ।

मुझे जो प्यार और सम्मान मिला है उसे पा कर कई बार लगता है किं मुझमें ऐसा कुछ नहीं था कि जिस पर गर्व किया जा सके। यह सब तो ईश्वर का प्रसाद है। मैनें अत्यन्य विनम्रता के साथ इसे प्रसाद रूप में ही ग्रहण किया है। मैं देश-विदेश घूमा हूं। इसलिए निश्चित रूप से यह कह सकता हूं कि पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की अपेक्षा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के उदात्त मूल्यों से ही हमारा कल्याण सम्भव है। इसलिए हमेशा अपनी सभ्यता संस्कृति और धर्म के अनुरूप ही आचरण करना चाहिए।

ज़िन्दगी के कुछ इन्हीं नियम कायदों को लेकर व्यापार के क्षेत्र में उतरा था। धनोपार्जन के लिए खूब मेहनत की। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त 'P' मार्का सरसों तेल और पशु आहार इत्यादि की गुणवत्ता को राष्ट्रीय स्तर पर जो सम्मान मिला उसमें भारत सरकार की ओर से प्राप्त राष्ट्रीय पुरस्कार तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जिनेवा में विवेक पुरी को प्राप्त पुरस्कार से मैं बहुत खुश हूं।

'पी' फार प्योर यानि शुद्ध। इस शुद्ध व्यापार से अर्जित यश और वैभव की जो अमूल्य निधि हमें प्राप्त हुई है तथा अपार धन सम्पदा और करोड़ों रूपये की ज़मीन जायदाद की ओर देखता हूं तो मैं परम पिता परमात्मा की अपार कृपा के सम्मुख नतमस्तक हो जाता हूं। पूज्य माता जी को याद करता हूं। पूज्य पिता जी को याद करता हूं। अपनी सहधर्मिनी राज की याद आती है। आदरणीय भाई गोपाल और प्रिय जितेंन्द, जिनकी स्मृतियां सदैव मेरे मन मस्तिष्क में फूलों की सुगन्ध की तरह महकती हैं मैं उन सबको याद करता हूं।

भूत, भविष्य और वर्तमान सबको साक्षी मान कर कहना चाहूंगा कि इस भव सागर में तैरने वाली 'बेड़िया का मल्लाह' तो केवल और केवल मात्र 'ईश्वर' है।

भूत, भविष्य और वर्तमान सबको साक्षी मान कर कहना चाहूंगा कि इस भव सागर में तैरने वाली 'बेड़िया का मल्लाह' केवल और केवल मात्र 'ईश्वर' है।

सत्य प्रकाश उप्पल

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त मूलतः हिन्दी कवि सत्यप्रकाश उप्पल न केवल हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं बल्कि सामाजिक संवेदनाओं को अभिव्यक्त करते हुए जन-मानस का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी अनिवार्य रूप से अपेक्षित रहती है।

व्यवसाय की दृष्टि से बैंक कर्मी सत्यप्रकाश उप्पल का व्यक्तित्व सांसारिकता से अभिज्ञ अपने कल्पना लोक में जिस सृष्टि का सृजन करता है वह मानवता के उदात्त मूल्यों का मुंह बोलता प्रमाण है।

महामहिम राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति भवन से पुरस्कृत रचनाकार सत्यप्रकाश उप्पल ने श्री केवल कृष्ण पुरी जी की आत्म कथा को जो अनूठी भाषा, शब्द-शिल्प और शैली प्रदान की है, उससे यह कृति और समृद्ध हुई है।

प्रकाशित कृतियां

- रथ बदलो — काव्य-संकलन
- लहू का एक मौसम — "
- आकाश घर नहीं है — "
- टूटते हुए संस्कार — अनुवाद
- प्लेटफार्म नम्बर ग्यारह — "
- कल की बात — "

ज़िन्दगी के दरिया का कितना पानी बह गया। वक्त की तेज़ आँधियों में कितनी बार सारे दृश्य धूमिल हो गये। कितनी बार लगा जैसे यह सब अभी कल की बात हो। एक तेज़धार तलवार जैसा समय मेरे कदमों की आहट को पहचानता है। इन संगीन रास्तों पर चलने का हुनर मैंने सीख लिया है। भूत, भविष्य और वर्तमान की पहेलियों में उलझा हुआ वक्त आज सम्मोहित करता है। समय के साथ दोस्ती भी रही और दुश्मनी भी। इस रणभूमि में पता नहीं कब शाम का सूरज लहूलुहान होकर आकाश में बिखर जायेगा, कोई नहीं जानता। इसी झुटपुटे में मैं अपनी ज़िन्दगी की किताब का वरक वरक खोलता हूं...

केवल कृष्ण पुरी